शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF EDUCATION

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
NATIONAL INSTITUTE OF EDUCATIONAL PLANNING AND ADMINISTRATION

NATIONAL CENTRE FOR SCHOOL LEADERSHIP
NCSL
Every Child Learns
Every School Excels

निष्ठा 1.0

विद्यालय नेतृत्त्वः अवधारणा एवं अनुप्रयोग

प्रारंभिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों के लिए स्व-निर्देशात्मक कोर्स

शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
EDUCATION

निष्ठा 1.0

विद्यालय नेतृत्त्वः अवधारणा एवं अनुप्रयोग

प्रारंभिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों
के लिए स्व-निर्देशात्मक कोर्स

प्रो. सुनीता चुघ
डॉ. चारू स्मिता मलिक
डॉ. एन. मैथिली

प्रस्तावना

विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल '**निष्ठा**' की संकल्पना भारत में सरकारी शिक्षा प्रणाली के विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों के लिए एक समग्र क्षमता विकास कार्यक्रम के रूप में की गई है ताकि वे अपने विद्यालयों को रूपांतरित कर सकें और विद्यालयों में गुणवत्ता सुधार हेतु परिवर्तनकारी एजेंट के रूप में उभरें। निष्ठा कार्यक्रम सभी हितधारकों- विद्यार्थियों, शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों, अभिभावकों, समुदाय एवं व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं के सक्रिय समर्थन की भी परिकल्पना करता है ताकि विद्यालय प्रमुख अपने विद्यालय में सकारात्मक बदलावों को सहयोगात्मक रूप से सोचने, रूपरेखा बनाने एवं उसके क्रियान्वयन के साथ पारस्परिक अपेक्षाओं एवं चुनौतियों को समझने में सक्षम हों। निष्ठा कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी अधिगम एवं अधिगम प्रतिफलों में सुधार लाना है।

ऑनलाइन माध्यम में, निष्ठा को तीन चरणों में संकल्पित किया गया है- प्राथमिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों के लिए निष्ठा 1.0, माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों के लिए निष्ठा 2.0 एवं बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए निष्ठा 3.0।

विद्यालय नेतृत्व: अवधारणा एवं अनुप्रयोग पर कोर्स राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र, नीपा द्वारा विकसित किया गया है। इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों को विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार और विद्यार्थी अधिगम एवं अधिगम प्रतिफलों में वृद्धि के केंद्रित विज़न के साथ विद्यालय का नेतृत्व करने में एक प्रमुख भूमिका निभाने के लिए सक्षम बनाना है। यह कोर्स 'दीक्षा पोर्टल' पर अपलोड किए गए निष्ठा 1.0 के अंतर्गत संख्या 13 पर उपलब्ध है।

यह कोर्स विद्यालय और विद्यालय की शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में नेतृत्व की अवधारणा की व्यापक समझ निर्मित करने में मदद करता है। इसका लक्ष्य विद्यालयों में सीखने की संस्कृति का विकास करने एवं अकादमिक पर्यवेक्षण को केंद्र में रखते हुए विद्यालय प्रमुखों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में वृद्धि करना है। कोर्स 'लीडर बाई एक्शन' की अवधारणा, एक विद्यालय प्रमुख की विभिन्न भूमिकाएँ एवं ज़िम्मेदारियाँ, विद्यार्थी अधिगम में सुधार के लिए अकादमिक नेतृत्व एवं विद्यार्थी अधिगम प्रतिफलों में सुधार हेतु दल अधिगम के अवसर पैदा करने पर विस्तृत चर्चा करता है।

हम हिंदी भाषा के कोर्स हेतु वीडियो सामग्री के सह-निर्माण एवं प्रस्तुति के लिए डॉ. कश्यपी अवस्थी, सहायक प्रोफेसर, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र के विशेष रूप से आभारी हैं।

कोर्स का हिंदी अनुवाद करने के लिए हम मृदुला शुक्ला, प्रधानाध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय, शादीपुर, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश का आभार व्यक्त करते हैं।

कोर्स के हिंदी संपादन के कार्य भार को सहजता एवं रुचिपूर्ण ढंग से संपन्न करने के लिए मोनिका बजाज, कनिष्ठ सलाहकार, गुरमीत कौर, प्रशासनिक सहायक एवं अलका नेगी, डाटा एंट्री ऑपरेटर, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। हम डॉ. चारू स्मिता मलिक, सहायक प्रोफेसर, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र को हिंदी संपादन एवं दस्तावेज संशोधन कार्य में मार्गदर्शन देने तथा दस्तावेज को अंतिम रूप प्रदान करने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं ।

कोर्स 13- विद्यालय नेतृत्व-संकल्पना और अनुप्रयोग

- **कोर्स के बारे में जानकारी**
  - o कोर्स का विस्तृत वर्णन
  - o शब्दों की कुंजिका
- **कोर्स का संक्षिप्त विवरण**
  - o उद्देश्य (slide Text) (13_1_Objectives)
  - o सामग्री की रूपरेखा (slide Text) (13_2_Content Outline)
- **प्रस्तावना**
  - o विद्यालय नेतृत्व :संकल्पना और अनुप्रयोग - प्रस्तावना (Video) (13_3_Introduction to school leadership)
  - o विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना और अनुप्रयोग - वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_4_Introduction to school leadership_Transcript)
  - o अतिरिक्त पाठ: 1 विद्यालय विकास क्षेत्र के मुख्य क्षेत्र (Text) (13_5_Key Areas for School Leadership Development)
  - o अतिरिक्त पाठ २: आपदा की स्थिति में विद्यालय नेतृत्व (Text) (13_6_School Leadership in Crisis Situation)
- **विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना**
  - ○ विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना (Video) (13_7_School Leadership_Concept)
  - ○ विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना _वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_8_School Leadership_Concept_Transcript)
  - ○ विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना(Text) (13_9_School Leadership_Concept)
  - ○ गतिविधि 1: प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता के प्रमुख गुण (Text - Blog) (13_10_Attributes of an Effective Leader)
  - ○ नेतृत्व परिभाषा(Text) (13_11_Leadership Defined)
  - ○ गतिविधि 2: स्वयं को परखें (Text) (13_12_Try Yourself)
  - ○ आइए, समेकन करें (Slide Text) (13_13_consolidation 1)
- **छात्र अधिगम में विद्यालय नेतृत्व का महत्व**
  - o छात्र अधिगम में विद्यालय नेतृत्व का महत्व (Text) (13_14_Significance of School Leadership on student learning)
  - o गतिविधि 3: विद्यालय नेतृत्व एवं छात्र अधिगम (Text -Blog) (13_15_School Leadership and Student Learning)
- **छात्र अधिगम हेतु अकादमिक नेतृत्व**
  - o छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व _(video) (13_16_Academic leadership for Improving Student Learning)
  - o छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व_वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_17_Academic leadership for Improving Student Learning_ Transcript)
  - o अकादमिक नेतृत्व: अकादमिक सहायता प्रदान करना: प्रदर्शन गतिविधि (Video) (13_18_Academic Leadership: Providing Academic Support)
  - o अकादमिक नेतृत्व:अकादमिक सहायता प्रदान करना: प्रदर्शन गतिविधि _वीडियो प्रतलिपि (Text)

(13_19_Academic Leadership: Providing Academic Support_Transcript)
- छात्र अधिगम हेतु अकादमिक नेतृत्व (Text) (13_20_Academic leadership for Improving Student Learning)
- गतिविधि ४: अकादमिक नेतृत्व को समर्थ करने के लिए नए क्षेत्रों की खोज/अन्वेषण करे - अकादमिक नेतृत्व (H5P - Image Hotspot) (13_21_Explore areas of Academic leadership for Improving Student Learning)
- गतिविधि 5: निष्क्रिय एवं सक्रिय अधिगम (H5P - Image Hotspot) (13_22_ Passive Learning and Active Learning)
- अतिरिक्त पाठ: अधिगम प्रतिफल एवं विद्यालय आधारित आकलन (Text) (13_23_ Learning Outcomes and School Based Assessment)
- अतिरिक्त पाठ: अकादमिक पर्यवेक्षण की तकनीकी (Text) (13_24_ Additional Reading)
- गतिविधि 6: स्वयं प्रयास करें (Text) (13_25_Try Yourself)
- अतिरिक्त गतिविधि_(Text) (13_26_Additional Activity)

- **विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास**
  - विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास(Video) (13_27_Developing Leaning Culture in Schools)
  - विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास_वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_28_Developing Learning Culture in School_Transcript)
  - विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास –प्रदर्शन गतिविधि (Video) (13_29_Developing Learning Culture in Schools)
  - विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास-प्रदर्शन गतिविधि -वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_30_Developing Learning Culture in Schools_Transcript)
  - अतिरिक्त गतिविधि (Text) (13_31_Additional Activities)
- **अतिरिक्त पाठ**
  - **संदर्भ आधारित विद्यालय विकास योजना** (Text) (13_32_Planning a context-specific School Development)
  - अतिरिक्त पाठ: विद्यालय में आई. सी. टी. संबंधी पहल (Text) (13_33_ICT Initiatives in School education)
  - अतिरिक्त पाठ: विद्यालय प्रमुख केस अध्ययन (Text) (13_34_Case studies of School Leaders)
- **सारांश**
  - सारांश (Mind map) (13_35_Summary)
- **पोर्टफोलियो गतिविधि**
  - पोर्टफोलियो गतिविधि (Text) (13_36_Portfolio Activity)
- **अतिरिक्त संसाधन**
  - संदर्भ (Text) (13_37_References)
  - वेब संसाधन (Text) (13_38_Other Links)
- **प्रश्नोत्तरी**(Quiz_39_13**)**

उपलब्ध वीडियो संसाधनों की सूची *

क्रम संख्या	**शीर्षक**
1.	विद्यालय नेतृत्व (Video) (13_3_Introduction to प्रस्तावना_संकल्पना और अनुप्रयोग (school leadership)
2.	विद्यालय नेतृत्व (Video)(13_7_School Leadership_ Concept) संकल्पना
3.	छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व (video) (13_16_Academic _Leadership for Improving Student Learning)
4.	अकादमिक नेतृत्व (Video) प्रदर्शन गतिविधि: अकादमिक सहायता प्रदान करना:(Academic Leadership: Providing Aacademic Support_18_13)
5.	विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास (Video) (13_27_Developing Leaning Culture in Schools)

*** उपरोक्त उल्लेखित वीडियो दीक्षा पोर्टल तथा राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र से प्राप्त किये जा सकते हैं**

कोर्स के बारे में जानकारी

कोर्स का संक्षिप्त विवरण

यह कोर्स, विद्यालय एवं शिक्षा प्रणाली जिसका विद्यालय एक अभिन्न अंग है, के संदर्भ में नेतृत्व की अवधारणा की एक व्यापक समझ बनाने में मदद करता है। इसे विशेष रूप से प्रारंभिक विद्यालयों के प्रमुखों एवं अध्यापकों को नेतृत्वकर्ता एवं प्रभावी पेशेवर के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। ऐसे अध्यापक एवं विद्यालय नेतृत्वकर्ता जो छात्र अधिगम में सुधार के उद्देश्य के साथ अपने विद्यालयों को रूपांतरण की ओर ले जा सकें।

कुंजिका

विद्यालय नेतृत्व, अध्यापक नेतृत्व, आपदा की स्थिति में विद्यालय नेतृत्व, अकादमिक नेतृत्व, छात्र अधिगम, विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास, विद्यालय विकास योजना, राष्ट्रीय विद्यालय के लिये राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा)

परिचय

विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना और अनुप्रयोग - प्रस्तावना (Video) (13_3_Introduction to school leadership)
YouTube Link: https://www.youtube.com/watch?v=85Yj97eG4Ug
DIKSHA Link: https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_31315792669171712011032

do_31315792669171712011032

विद्यालय नेतृत्व :संकल्पना और अनुप्रयोग - प्रस्तावना-वीडियो प्रतिलिपि_(Text) (13_4_Introduction to school leadership_Transcript)

नमस्कार,

सीखने-सिखाने के इस उत्सव में निष्ठा से जुड़े आप सभी साथी शिक्षकों व विद्यालय प्रमुखों का स्वागत है। निष्ठा में आपने विद्यालय गुणवत्ता से सम्बंधित अनेकों पहलुओ पर चर्चा-परिचर्चाएँ करी होंगी। आज हम भी आपके साथ विद्यालय नेतृत्व की संकल्पना एवं अनुप्रयोग पर अपने विचार साझा करने आए हैं, जो की स्कूली शिक्षा में सम्बंधित संशोधनों के अनुसार गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान देता है।

विद्यालय नेतृत्व को वैश्विक स्तर पर विद्यालय के संपूर्ण विकास और छात्रों के अधिगम में वृद्धि के सहायक रूप में पहचाना गया है। ठीक यही बात, एन. सी. एस. एल ने भी अपने संशोधनों, कार्यों और शाला प्रमुखों के साथ के अपने अनुभवों में पाई है। विद्यालय को रूपांतरित करने में विद्यालय प्रमुखों की भूमिका महत्वपूर्ण है, जो विद्यालय के शिक्षण अधिगम संबंधी परिणामों में सुधार हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना एवं अनुप्रयोग को राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र (एन. सी. एस. एल, नीपा) द्वारा विकसित किया गया है। इस विषय में यह बताया गया है कि कैसे अध्यापकों के बीच आपसी समझ को विकसित कर, एक नेतृत्वकर्ता, विद्यालय के विशिष्ट संदर्भ में एक साझा दृष्टिकोण विकसित करता है एवं अपनी पूरी टीम को आने वाली चुनौतियों का सामना कर उनके हल निकालने के लिए भी तैयार करता है।

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में, आपको भी शिक्षकों के दल को विकसित कर दल का नेतृत्व करना होगा एवं शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित कर नए प्रयोगों की पहल करनी होगी।

इतना ही नहीं, एक विद्यालय प्रमुख की अनेकों भूमिकाओं में सबसे महत्वपूर्ण एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं का नेतृत्व करना है। जैसा कि आप जानते हैं, विद्यालय में आने वाला प्रत्येक बच्चा अपने साथ ज्ञान, भाषा एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को लेकर आता है। ऐसे में आपको विद्यालय में एक मित्रता पूर्ण वातावरण बनाकर सकारात्मक अधिगम संस्कृति का विकास भी करना होगा, जिसमें निम्नलिखित मुद्दे बेहद महत्वपूर्ण हैं:

1. विद्यालय नेतृत्व की संकल्पना और उसकी समझ
2. आपदा की स्थिति में विद्यालय नेतृत्व
3. छात्र अधिगम अभिवृद्धि में विद्यालय नेतृत्व का महत्व
4. विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास
5. संदर्भ आधारित विद्यालय विकास योजना

यह सब कर पाने के लिए ज़रूरी होगा विद्यालय प्रमुख का अपने विद्यालय की वर्तमान परिस्थितियों के साथ जुड़े होना और उनका बारीकी से विश्लेषण करते हुए विद्यालय की आवश्यकताओं का सही आकलन करना। विश्लेषण आधारित आंकड़ों का प्रयोग, भागीदारों के साथ विचार-विमर्श और साझा निर्णय से यथास्थिति अनुसार नियोजन एवं अनुपालन करना, यह सभी एक सशक्त विद्यालय नेतृत्व के कुछ महत्वपूर्ण मानक हैं।

विद्यालय नेतृत्व का विषय विद्यालय प्रमुखों की मुख्य भूमिका और कार्यों पर आधारित है जो ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति से विद्यालय प्रमुख का सशक्तिकरण कर उन्हें नेतृत्वकर्ता बनाने में सहायक होगा। विषय को प्रयोगकर्ताओं के लिए आसान एवं स्वयं सीखने योग्य बनाने हेतु काल्पनिक परिस्थितियां उत्पन्न की गई हैं, केस

स्टडी का अध्ययन एवं वीडियो ट्यूटोरियल के साथ नेतृत्व की संकल्पना को व्यवहार में कैसे लाया जाए, इस पर चर्चा की गयी है।

वर्तमान में, कोविड-19 के संकट काल में, विद्यालय प्रमुखों को अतिरिक्त जिम्मेदारी लेने की भी आवश्यकता है। मोबाइल फ़ोन, व्हाट्स एप ग्रुप और अन्य संचार माध्यमों के द्वारा अपने शिक्षकों और छात्रों के निरंतर संपर्क में रहना बेहद ज़रूरी है। विद्यालय प्रबंधन समिति को भी सूचनाओं का वाहक बनाया जा सकता है, जिससे की वे भी इस कठिन काल में विद्यालय का अभिन्न हिस्सा बने रहें। अध्यापकों से टेलीफोनिक बातें कर सीखने सिखाने का सुस्पष्ट नियोजन किस प्रकार से करें, इस पर भी चर्चा की गयी है।

हम उम्मीद करते हैं कि यह विषय आपके सोचने की प्रक्रिया को नयी दिशा देगा तथा विद्यालय सम्बंधित अभ्यास को सुचारू कर विद्यालय को रूपांतरित करने में सहायक होगा।
धन्यवाद !

<u>**अतिरिक्त पाठ: 1 विद्यालय विकास क्षेत्र के मुख्य क्षेत्र**</u> (Text) (13_5_Key Areas for School Leadership Development)

आइये विद्यालय विकास के मुख्य क्षेत्रों के बारे में जानते।

एक विद्यालय प्रमुख के तौर पर आपको नेतृत्व विकास के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में उल्लिखित सातों मुख्य बिंदुओं पर कार्य करना होगा।

विद्यालय के संदर्भ में ये सातों मुख्य बिंदु उन समस्याओं का विस्तार से वर्णन करते हैं जिनका सामना विद्यालय प्रमुख को करना पड़ता है। एक अध्यापक भी इन सात मुख्य बिंदुओं पर कार्य कर सकता है यद्यपि अध्यापक का प्रभाव क्षेत्र अधिकतर विद्यालय के भीतर छात्र एवं उनके अभिभावकों तक सीमित होता है। जबकि विद्यालय प्रमुख इनके अतिरिक्त विद्यालय के बाहर अन्य हितधारकों को भी प्रभावित करता है। विद्यालय प्रमुख यदि इन सातों क्षेत्रों में काम करता हैं तब विद्यालय बहुत जल्दी ही रूपांतरित होकर सर्वोत्कृष्ट बनता है। ऐसे विद्यालय में हर बच्चे का सीखना सुनिश्चित होता है।

विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण

यह भूमिका विद्यालय प्रमुख एवं अध्यापकों के लिए अति महत्वपूर्ण है। एक प्रमुख के रूप में आपको नेतृत्व एवं शैक्षणिक सन्दर्भ में नेतृत्व के द्वारा परिवर्तन लाये जाने की प्रक्रिया के बारे में जानने की आवश्यकता है। यह भूमिका विद्यालय के संबंध में एक अवधारणात्मक समझ बनाती है, एक ऐसे विद्यालय की परिकल्पना जो बच्चों के वृद्धि एवं विकास को प्रेरित करे साथ ही निरंतर प्रयोगों एवं परिवर्तनों को बढ़ावा दे व स्वीकारे। इस भूमिका को समझने से आपको एक अध्यापक एवं विद्यालय प्रमुख के रूप में नेतृत्व की चुनौतियों से झूझने व उन पर विजय पाने की समझ विकसित होगी और आप परिवर्तनकारी एजेंडा को प्राप्त करने में सफल हो पाएंगे। यह बाल केन्द्रित परिवर्तन और रूपांतरण का ऐसा दृष्टिकोण विकसित करने पर ज़ोर देता है जो स्वरूप से समावेशी एवं प्रगतिशील हो। विद्यालय नेतृत्व के दृष्टिकोण का विकास आप को विद्यालय की वर्तमान बुनियादी वास्तविकताओं का आकलन कर सकने व विज़न बनाने में मदद करेगा। आप सहयोगात्मक और दल कार्य के माध्यम से प्रत्येक बच्चे के समग्र विकास के उद्देश्य से इस दृष्टिकोण को साकार करने की यात्रा प्रारम्भ कर सकते हैं।

स्वयं का विकास

इस भूमिका का मुख्य उद्देश्य है क्षमताओं, दृष्टिकोण और मूल्यों के संबंध में स्वयं, अध्यापकों, स्टाफ एवं छात्रों में एक सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित करना। इस भूमिका में, आपको स्वयं के और दूसरों के सतत अधिगम एवं विकास हेतु अवसर खोजने हैं। इसके साथ ही एक नेतृत्वकर्ता की भूमिका को समझते हुए, आप को चिंतन मनन एवं अन्त:क्रिया के माध्यम से आत्म-सुधार प्रारंभ करना होगा। एक नेतृत्वकर्ता को सर्वप्रथम जीवंत नेतृत्व प्रदर्शित करने के लिए 'स्व' में निवेश करना अनिवार्य है। स्वयं के विकास को आत्म-चिंतन के द्वारा, जो की स्व-अध्ययन का एक प्रभावी तरीका है, विकसित किया जा सकता है। माना जाता है कि क्रिया-आधारित-आत्म चिंतन का पालन करने से, विद्यालय नेतृत्वकर्ता वांछित परिवर्तन का नेतृत्व करने में सशक्त बन पाते हैं। ऐसा करने से किसी चुनौती का सामना होने पर 'हां, मैं कर सकता/सकती हूँ !' का दृष्टिकोण विकसित होता है, परिणामस्वरूप, स्वयं व विद्यालय का रूपांतरण संभव हो पाता है। इस भूमिका को समझने से आपको विद्यालय का रूपांतरण करने के लिए ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास विकसित करने में मदद मिलेगी।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण

इस भूमिका का महत्व विद्यालयों की कक्षाओं की प्रक्रिया को और अधिक बाल-केन्द्रित बना कर शिक्षण अधिगम को अन्वेषण एवं सृजनात्मकता के माध्यम से रूपांतरित करना है। यह भूमिका अध्यापकों एवं विद्यालय प्रमुखों को शिक्षा के उद्देश्य को समझने और ऐसे मुद्दों पर चिंतन करने में सक्षम बनाती है -जैसे कि बच्चों को विद्यालय क्यों आना चाहिए, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएं किस प्रकार की होनी चाहिए जिससे छात्रों का विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित किया जा सके, अधिगम वातावरण कैसा हो जिससे की बच्चे प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण कर सके? यह भूमिका बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं को जानने व विभिन्न अनुभवात्मक अधिगम गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की ज़रूरतों को समझने के लिए अध्यापकों एवं विद्यालय प्रमुखों में संवेदनशीलता विकसित करने की कोशिश करती है। यह शिक्षण अधिगम से जुड़ी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं, जैसे कक्षाओं का अवलोकन, शिक्षकों को फीडबैक देना और उनके लिए एक सलाहकार एवं परामर्शदाता बनना आदि, पर एक विद्यालय प्रमुख के रूप में अपने कौशल विकसित करने पर भी बल देता है। इस भूमिका का उद्देश्य आपको अधिगम प्रक्रिया का इस तरह से नेतृत्व करने में सक्षम बनाना है, जिससे प्रत्येक बच्चा स्वयं को अद्वितीय, महत्वपूर्ण और सम्मानित महसूस करें और स्वयं के अनुभवों को सभी के साथ साझा करने के लिए हर दिन विद्यालय आने को प्रेरित हो।

दल बनाना एवं दल का नेतृत्व करना

विद्यालय एक ऐसी इकाई है जिसके सदस्य निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहनता व गंभीरता से मिलकर काम करते हैं। इसको प्रभावी रूप से करने के लिए, दल बनाना एवं उसका नेतृत्व करना, विद्यालय प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दल के रूप में काम करने से न केवल विद्यालय के कार्य बेहतर ढंग से सम्पादित होते हैं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान और आने वाली समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के नए तरीकों को सीखते हुए दल के प्रत्येक सदस्य की क्षमताओं और कौशल का विकास भी होता है। यह भूमिका प्रभावी दलों को बनाने और बनाए रखने के लिए आवश्यक मूल्यों और कौशलों के बारे में बताती है। आप दल गठन, सहयोग, समूह गतिशीलता, संघर्ष समाधान और प्रभावी संप्रेषण के लिए प्रक्रियाओं का नेतृत्व करने के बारे में सोचना शुरू कर सकते हैं और साथ ही दल के सदस्यों के व्यावसायिक विकास के अवसर भी पैदा कर सकते हैं।

नवाचारों का नेतृत्व

किसी भी संगठन में नवाचारों का नेतृत्व, समस्याओं को सुलझाने के संभावित तरीके के रूप में अथवा बदलाव लाने के रूप में देखा जा सकता है। न केवल नवाचारों का प्रयोग समस्याओं को सुलझाने के लिए किया जाना चाहिए, बल्कि सभी लोगों को शामिल करने और विद्यालय में समावेशी तरीकों को प्रोत्साहित करने के साधन के रूप में भी देखा जाना चाहिए। नवाचार व्यक्तियों में जोख़िम लेने व चिंतनशील और दृढ़ता के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह 'हां, मैं कर सकता/सकती हूँ!' के दृष्टिकोण के साथ कार्य करने का आत्मविश्वास देता है। नवाचार के द्वारा विद्यालय में अधिगम स्वभाविक हो जाता है। इसलिए, इसे एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में देखा जाता है। विद्यालयों को अधिगम संगठनों में बदलने का बीड़ा उठाने के लिए विद्यालय में नवाचार की संस्कृति का निर्माण करना महत्वपूर्ण है। शिक्षण-अधिगम और विद्यालय की प्रक्रियाओं में नवाचारों का समावेश करने से, न केवल बच्चों के लिए, बल्कि शिक्षकों, माता-पिता और समुदाय के लिए भी सीखना एक आनंददायक अनुभव बन सकता है।

साझेदारियों का नेतृत्व

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे अलग-अलग अनुभवों के साथ विद्यालय आते हैं। जब उनकी सामाजिक और भावनात्मक ज़रूरतों पर ध्यान दिया जाता है, तो वे विद्यालय से जुड़ पाते हैं और बेहतर ढंग से सीख पाते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर बच्चा सीख सके, विद्यालयों के पास माता-पिता, समुदाय और अन्य भागीदारों के साथ जुड़कर अपने छात्रों के जीवन को समृद्ध बनाने का अवसर होता है। यह भूमिका आपको विद्यालय के स्थानीय समुदायों के साथ भागीदारी निर्मित करने में मदद करती है, जिसमें समुदाय के सदस्य, माता-पिता, अन्य विद्यालय प्रमुख और व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता सम्मिलित होते हैं।

विद्यालय प्रशासन का नेतृत्व

यह भूमिका विद्यालय को आगे बढ़ाने के लिए प्रशासनिक और वित्तीय पहलुओं पर केंद्रित है। यह आपको संबंधित राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रशासनिक नियमों और दिशानिर्देशों को समझने के लिए प्रोत्साहित करती है, साथ ही साथ विद्यालय के वित्त, बजट और धन का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए, इसके बारे में अवगत कराती है। एक विद्यालय का नेतृत्व करते हुए, भौतिक और मानव संसाधनों का प्रबंधन महत्वपूर्ण है और यह क्षेत्र संसाधनों को प्रभावी ढ़ंग से प्रयोग के विभिन्न आयामों के बारे में बताता है। एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता की यह भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपको जानकारी युक्त निर्णय लेने के साथ-साथ विद्यालय के रूपांतरण का नेतृत्व करने में मदद करती है।

ये सातों मुख्य क्षेत्र अध्यापकों एवं विद्यालय प्रमुख के ज्ञान, कौशल और सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास में योगदान करते हैं। इन सभी उद्यमों के केंद्र में बच्चे ही होते हैं और अध्यापकों एवं विद्यालय प्रमुख बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर कार्य करते हैं।

अतिरिक्त पाठ 2 : आपदा की स्थिति में विद्यालय नेतृत्व(Text) (13_6_School Leadership in Crisis Situation)

आपदा की स्थिति में विद्यालय नेतृत्व का कार्य अधिक नवाचार और जिम्मेदारी की मांग करता है। कोविड 19 के इन मुश्किल दिनों में पठन पाठन की प्रक्रिया एक झटके में बदल गयी है। आमने सामने बैठ कर पढ़ने पढ़ाने की प्रक्रिया ऑनलाइन अधिगम के द्वारा प्रतिस्थापित हो गई हैं। एक तरफ बच्चे विद्यालय नहीं आ पा रहे हैं तो दूसरी तरफ विद्यालय प्रमुख से लेकर अध्यापकों तक के सामने प्रशासनिक कार्यों से लेकर बच्चों को सीखने सिखाने की प्रक्रिया से जोड़े रखने की अप्रत्याशित चुनौती आ गयी है।
आपदा प्रबंधन के लिए अध्यापकों/ विद्यालय प्रमुखों में क्या गुण होने चाहिए?

- सकारात्मक सोच
- नवाचारी सोच
- रचनात्मक विचारों को मूर्त रूप देना
- अभिभावक और समुदाय से समुचित सहयोग लेना
- प्रतिरोधक्षमता (रेज़ीलियंस) एवं लचीलापन
- संचार माध्यमों का कौशल प्राप्त करने का प्रयास- गूगल मीट, ज़ूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम और एप्प्स का प्रयोग सीखना।

विद्यालय प्रमुख द्वारा उठाये जाने वाले कदमों के लिए महत्वपूर्ण बिंदु:

- छात्रों, अभिभावकों एवं समुदाय के महत्वपूर्ण लोगों के बीच ऐसा संवाद विकसित करना जो विद्यालय की आवश्यकता और भूमिका को समझ सके।
- विद्यालय प्रमुख के तौर पर सभी शिक्षकों के साथ हर विद्यार्थी से संपर्क किया जाए चाहे वह फोन से हो अथवा व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से हो।
- अध्यापकों, छात्रों और अभिभावकों के साथ योजनाबद्ध तरीके से नियमित संपर्क में रहें।
- छात्रों और अभिभावकों को स्वास्थ्य सम्बन्धी दिशा निर्देश दिए जाने के अवसर बनाना।
- छात्रों और अभिभावकों को निरंतर सामाजिक-मनोवैज्ञानिक तरीके से आश्वस्त करते रहना है कि इस मुश्किल समय में भी पठन पाठन में निरंतरता बनी रहेगी।
- हर कक्षा और हर विषय के अधिगम लक्ष्यों को पहचान कर ऑनलाइन कक्षाओं का नियोजन करना जिससे कीशिक्षक और छात्र दोनों के लिए इन लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके।
- शिक्षकों की सहायता से ऐसे बहुआयामी क्रियाकलापों का प्रारूप बनाएं जिससे बच्चे घर में संगीत, कला, नाटक अथवा शारीरिक गतिविधियों में लिप्त रहें।
- सीखने की ऐसी ढ़ेर सारी गतिविधियाँ नियोजित की जाएं जिसमे बच्चों के माता-पिता अथवा दादा, दादी, नाना, नानी भी सहयोगी की तरह शामिल हो सकें।
- स्वयं को और साथी अध्यापकों को नई सूचना और संपर्क (आई. सी. टी.) सीखने के लिए प्रोत्साहित करें।
- व्यावसायिक विकास हेतु प्रदेश और प्रदेश के बाहर चल रहे वेबीनार और अन्य ऑनलाइन मंचों का हिस्सा बनें/बनाना।
- दूरस्थ क्षेत्रों में जहां के बच्चे इंटरनेट से नहीं जुड़े हुए हैं उन्हें अन्य नवाचारी तरीकों से सीखने सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ने की कोशिश करें।

- गांव में खुले में कोई स्थान देखकर पर्याप्त दैहिक दूरी रखते हुए सीमित बच्चों को बिठा कर शिक्षक उनसे अपनी शिक्षण सम्बन्धी योजनाओं और उनसे अपनी अपेक्षाओं पर संवाद कर सकते हैं। क्रमशः नये और पुराने छात्रों की टीम बना सकते हैं जहां बड़े बच्चे शारीरिक दूरी रखते हुए छोटे बच्चों की मदद कर सकते हैं।
- अन्य विद्यालय प्रमुखों तथा अपने साथी शिक्षकों के साथ अपने ऑनलाइन संसाधनों को शेयर करें।
- दृश्य माध्यम में विद्यालय के छात्रों के लिए स्वयंप्रभा पर, किशोर मंच चैनल नंबर 31 का प्रयोग करें। श्रव्य माध्यम से छात्रों और अध्यापकों के सीखने को सुगम बनाने के लिए आकाशवाणी के ज्ञान वाणी कार्यक्रम को उपयोग में लाएं।

स्वयं को विद्यालय प्रमुख के रूप में कल्पना करें:

- आप और आप का शिक्षक दल उन बच्चों तक कैसे पहुंचेंगे जो तकनीकी की पहुँच से बाहर हैं?
- आप अपने विद्यालय के अन्य हितधारकों को बच्चों के लिए गुणवत्तापरक अधिगम प्रक्रिया के नियोजन में कैसे शामिल करेंगे?

विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना

विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना (Video) (13_7_School Leadership_Concept)
YouTube Link: https://youtu.be/L-VetjZNSuA
DIKSHA Link: https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_3131579581075619841920

do_3131579581075619841920

विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना- वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_8_School Leadership_Concept_Transcript)

नमस्ते, विद्यालय प्रमुख एवं अध्यापक साथी !

आप विद्यालय प्रमुख या अध्यापक के पद पर सीधे चयन अथवा पदोन्नति के द्वारा नियुक्त हुए हैं। इस प्रकार क्षमता के अनुसार देखा जाए तो आज आप सभी नेतृत्वकर्ता हैं। इस बात से हम सभी अवगत हैं कि विद्यालय प्रमुख नियमों एवं विनियमों में बंध कर कार्य करते हैं अथवा इन कार्यों को प्रशासनिक दायरे में बंधा हुआ भी कह सकते हैं।कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जब प्रशासनिक दायरे में रह कर अतिरिक्त पहल करने की आवश्यकता महसूस होती है।

क्या हमारे पास सामान्य एवं जटिल परिस्थितियों में कार्य करने हेतु स्वप्रेरणा, रुचि एवं पहल लेने की क्षमता है? क्या अभूतपूर्व परिणामों को प्राप्त करने हेतु हमारे व्यवहारों एवं कार्यों में उचित संवेदन एवं गतिशीलता है?

आइये इसे एक उदाहरण के द्वारा समझते हैं।

यदि आप केवल पद द्वारा विद्यालय नेतृत्वकर्ता (लीडर बाई पोजीशन)हैं तो आप एक प्रशासक अथवा प्रबंधक की तरह काम करेंगे। विद्यालय निर्बाध रूप से चले यह सुनिश्चित करना आपकी प्रमुख भूमिका होगी। कक्षाएं नियमित और सुचारू रूप से चलाना, प्रशासनिक और वित्तीय रिकॉर्ड बनाये रखना आदि ये आपके मुख्य कार्य होंगे। ऐसा भी हो सकता है कि विद्यालय प्रमुख कुछ चयनित अध्यापकों के साथ काम करें या उन छात्रों पर ध्यान दें जो कि अकादमिक रूप से बहुत अच्छा निष्पादन कर रहे हैं। यह भी हो सकता है कि एक प्रशासनकर्ता के रूप में विद्यालय की दैनिक अथवा अचानक उत्पन्न हुई विषम परिस्थितियों के ऐसे हल आप निकाल लेते हों जो वर्तमान में समस्याओं का निवारण तो हो जाए परन्तु उन हलों का विद्यालय व्यवस्था में कोई दीर्घगामी योगदान न हो।

यदि पद द्वारा विद्यालय नेतृत्वकर्ता होने के साथ-साथ आप अपने कार्य व्यवहार से भी नेतृत्वकर्ता हैं (लीडर बाई एक्शन) तब आप निर्धारित रूप से प्रशासनिक एवं प्रबंधन की आवश्यकताओं के बाहर जाकर भी आत्मविश्वास पूर्वक पहल कर पाएंगे। एक लीडर बाई एक्शन होने के नाते आपका सबसे पहला कदम भागीदारों, शिक्षकों तथा छात्रों के साथ मिलकर साझे विज़न का निर्माण करना होगा ,साथ ही चुनौतियों तथा समस्याओं का रचनात्मक रूप

से हल खोजना, सभी शिक्षकों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना एवं प्रत्येक छात्र की देखभाल करना होगा। एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आपका व्यवहार समानुभूति व आत्मविश्वास से परिपूर्ण होना चाहिए।

अपने विद्यालय की वर्तमान परिस्थितियों का कुशलतापूर्वक आकलन करने हेतु , एक लीडर बाई एक्शन के रूप में आपके पास अपेक्षित ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति होनी चाहिए। आप वर्तमान परिस्थितियों का निम्नांकित मापदंडों के आधार पर विश्लेषण कर सकते हैं:

- भौतिक संसाधन
- शिक्षकों की प्रभावोत्पादकता
- छात्रों का अधिगम स्तर
- छात्रों की अधिगम आवश्यकताओं, उनकी पृष्ठभूमि एवं उनकी क्षमताओं को समझना
- विद्यालय के समुदाय की विशेषताएं एवं अभिभावकों की समझ

यह विश्लेषणात्मक प्रक्रिया आपको इस बात की विस्तृत जानकारी देगी कि आपके विद्यालय की वर्तमान परिस्थिति क्या है एवं विद्यालय के प्रत्येक छात्र के लिए न्यायसंगत एवं गुणवत्तापरख शिक्षा प्रदान करने हेतु आपको अपने विद्यालय को कहाँ ले कर जाना है। इस तरह से आप अपने विद्यालय के भागीदारों के साथ साझा विज़न विकसित कर विद्यालय को दिशा प्रदान कर सकते हैं।

आइये हम एक बार लीडर बाई एक्शन के गुणों का पुनः सिंहावलोकन करते हैं :

- पहलकर्ता होना
- स्वप्रेरित होना
- अभिप्रेरितकर्ता
- आत्मविश्वासी
- साथी अध्यापकों और विद्यालय के अन्य भागीदारों के साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार

अध्यापक नेतृत्वकर्ता अथवा विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में इस यात्रा का प्रारम्भ बहुत दृढ़ता, साहस, जोश और निरन्तरता की मांग करता है।

नेतृत्वकर्ता बनने कि इस यात्रा को प्रारंभ करने का एक तरीका यह है कि आप, अपने भीतर विद्यमान ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति का मूल्यांकन करें, जो कि विद्यालय को गुणवत्तापूर्ण चलाने के लिए प्रासंगिक हैं।
इनमे से यदि हम ज्ञान के विषय की बात करें तो एक क्षेत्र प्रशासनिक और वित्तीय नियमों का है जिसमे पारंगत होने के लिए आपको गहरी समझ विकसित करनी पड़ेगी। साथ ही शिक्षण शास्त्र-विषयवस्तु ज्ञान एवं उसके प्रयोग पर भी अपनी समझ को विस्तृत करना होगा।

कौशल के क्षेत्र में आपको सवांद, निर्णय लेने की क्षमता,समस्याओं का समाधान एवं आई. सी. टी सम्बन्धी तकनीकों में भी दक्षता हासिल करनी होगी। इन तीनों में सबसे महत्वपूर्ण है नयी अभिवृत्तियां अथवा दृष्टिकोण विकसित करना जो आपको एक अग्रसक्रिय नेतृत्वकर्ता बनाती हैं, जैसे कि सकारात्मक सोच, पहल करना, सहयोगात्मक अभिवृत्ति इत्यादि। साथ ही यह भरोसा रखना की हर बच्चा सीख सकता है और हर शिक्षक स्वयं का व्यावसायिक विकास कर सकता है।

इन सत्रों में आप अकादमिक नेतृत्वकर्ता और विद्यालय में अधिगम संस्कृति विकसित करने के बारे में और अधिक जानेंगे। एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता एवं अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी क्षमताओं व दक्षताओं को विकसित करने के बारे में यह कार्यक्रम आपको विशद रूप में सहायता करेगा।

<u>विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना</u> (Text) (13_9_SchoolLeadership_Concept)

विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में विद्यालय प्रमुख, अथवा अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में अध्यापक को कक्षा कक्ष व्यवस्था, प्रशासन, प्रबंधन एवं शिक्षण के परे जाकर सोचना होगा।

व्यवहार में नेतृत्व, विद्यालय प्रमुख की सभी एवं मूल भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों का क्रियान्वयन है, हालांकि इसके अतिरिक्त नेतृत्व हमें पहल करने के लिए नई चुनौतियों को पहचानने और कक्षा तथा विद्यालय में सकारात्मकता के लिए उनके नवाचारी हल ढूंढने के लिए प्रोत्साहित करता है।

नेतृत्व की संकल्पना को और बेहतर समझने के लिए आइए 'स्व और प्रेरणा' को नेतृत्व का प्रमुख गुण मानते हुए, इससे प्रारम्भ करते हैं।

यदि आप प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बनना चाहते हैं तो की स्वयं धारणा को समझना क्यों आवश्यक है?

स्वयं एवं प्रेरणा

एक नेतृत्वकर्ता के लिए स्वयं की समझ अत्यन्त आवश्यक है। इस समझ से आप स्वयं के दृष्टिकोण व क्षमताओं के प्रति जागरूक होने के लिए प्रेरित होते हैं व अपने अन्दर व बाहर बदलाव लाने के लिए सक्षम बनते हैं। फलस्वरूप, आत्म विश्वास की वृद्धि होती है। स्वयं की समझ की शुरुआत आप आत्मचिंतन के अभ्यास से कर सकते हैं, जो कि स्व अधिगम प्रक्रिया का अंश है। इसके माध्यम से आप अपनी अभिरूचियों एवं क्रियाओं पर विचार- प्रश्न- एवं पुनर्विचार कर सकते हैं, जो कि एक प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बनने के लिए महत्वपूर्ण है। हम मानते हैं कि यह प्रक्रिया आपके दृष्टिकोण को परिवर्तित कर देगी, जिससे आप ये कहेंगे कि "हाँ मैं कर सकती हूँ /सकता हूँ"! विशेषतः तब जब आप एक चुनौती का सामना कर रहे होंगे। इससे आपको अपने विद्यालय के रूपान्तरण में एवं एक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरने में मदद मिलेगी। स्वयं की समझ व विकास से प्राप्त ज्ञान व कौशलों से आप स्वयं में बदलाव लाने व स्वयं को एक आदर्श) (role model) एवं समस्या समाधानकर्ता के रूप में दूसरों के सामने प्रस्तुत कर पाने में सक्षम होंगें। इससे आपकी अन्य के व्यवहारों को प्रभावित करने कि क्षमता भी बढ़ेगी।

स्वयं का विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती है। इस प्रक्रिया के अनेक पहलू हैं, जैसे की अपने व्यवहार, सोच, ज्ञान व कौशल में बदलाव या वृद्धि लाना, एक अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करना, स्वयं को जीवन के विभिन्न अनुभवों में रखना, स्वाध्याय द्वारा व्यावसायिक विकास करना, अपने साथियों से सीखना अथवा सेवारत कार्यक्रमों में प्रतिभाग करना- ये वो तरीके हैं जिनके द्वारा आप स्वयं का विकास कर सकते हैं। स्वयं की बेहतरी के लिए आप जितना बदलाव लाएंगे, उतना ही अधिक विद्यालय का नेतृत्व करने के लिए आपका विश्वास बढ़ेगा।

<u>गतिविधि 1: प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता के प्रमुख गुण</u> (Text - Blog) (13_10_Attributes of an Effective Leader)

do_31315884669833216012119

प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बनने के लिए आप में क्या प्रमुख गुण होने चाहिए?
उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- पहल करना
- सकारात्मक दृष्टिकोण रखना
- स्वप्रेरित होना
- परिवर्तन लाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना

आपके अनुसार प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता में अन्य कौन-कौन से गुण होने चाहिए?
चिंतन के लिए कुछ समय लें और कमेंट बॉक्स में अपनी टिप्पणी दर्ज करें।

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ पर पहुँचना

गतिविधि पृष्ठ पर पहुंचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का पालन करें:

<u>विकल्प 1:</u> किसी भी ब्राउज़र में ये यू.आर.एल. टाइप करें
https://nishtha-activities.blogspot.com/2020/11/13-1.html or http://tiny.cc/13m1h

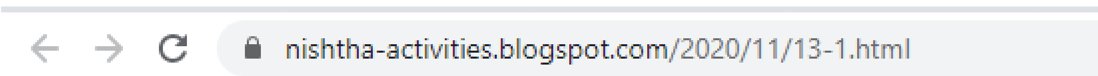

<u>विकल्प 2:</u> इस पी.डी.एफ. को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में यू.आर.एल. कॉपी करें

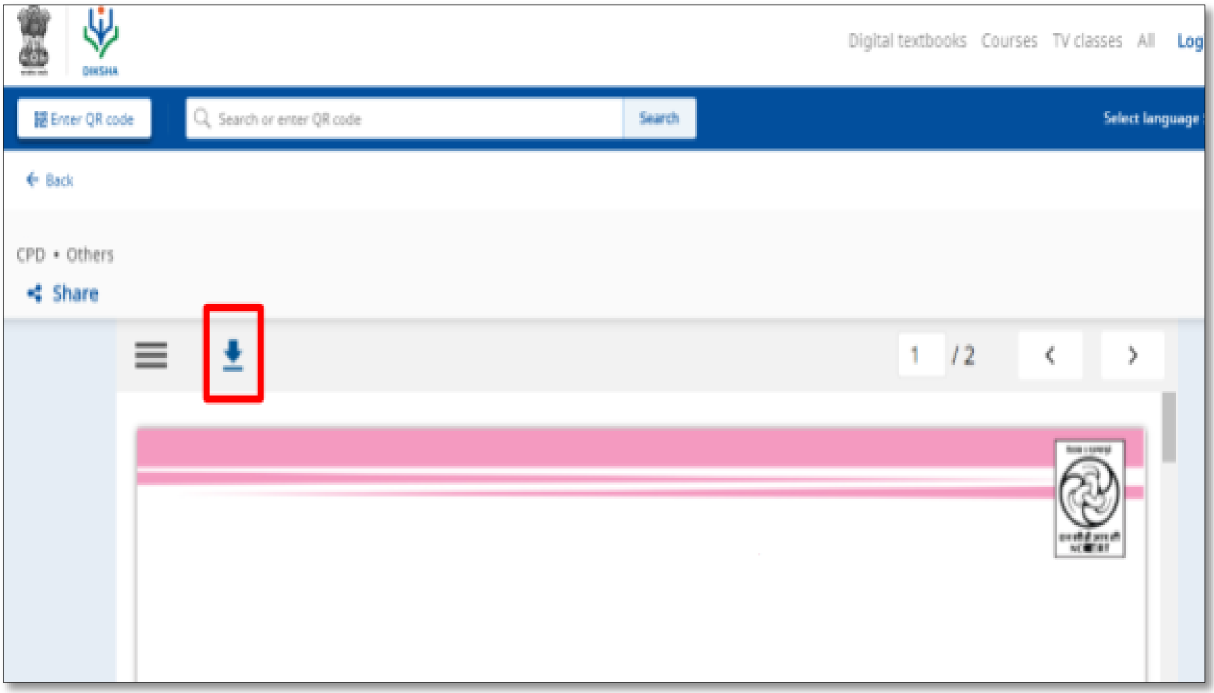

विकल्प 3: **ई-पाठशाला क़्यु आर कोड स्कैनर** का उपयोग करके क़्यु आर कोड को स्कैन करें

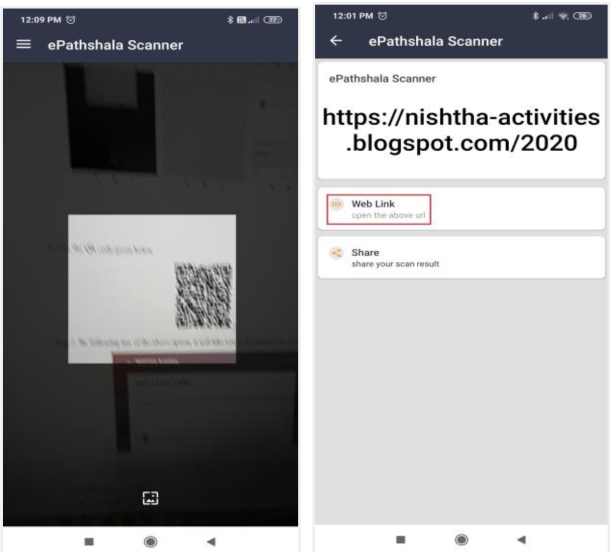

चरण 2: उपरोक्त किसी भी विकल्प का पालन करते हुए, यह आपको बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3: अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- '**एंटर योर कमेंट**' पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

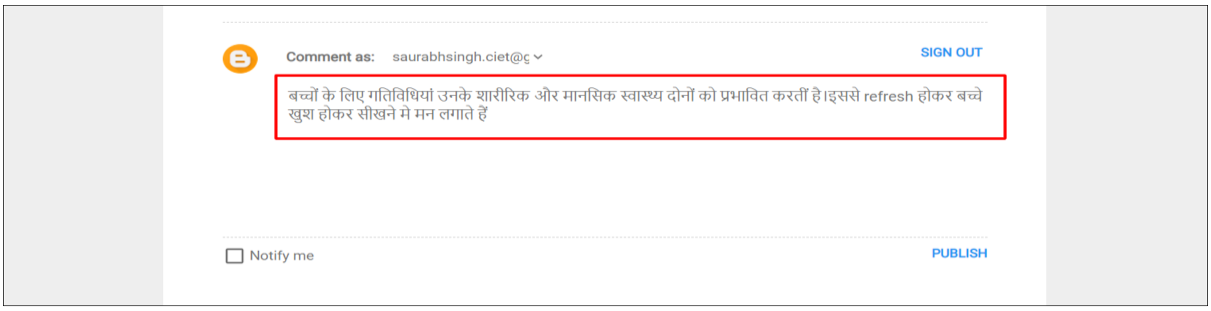

- **पब्लिश** पर क्लिक करें

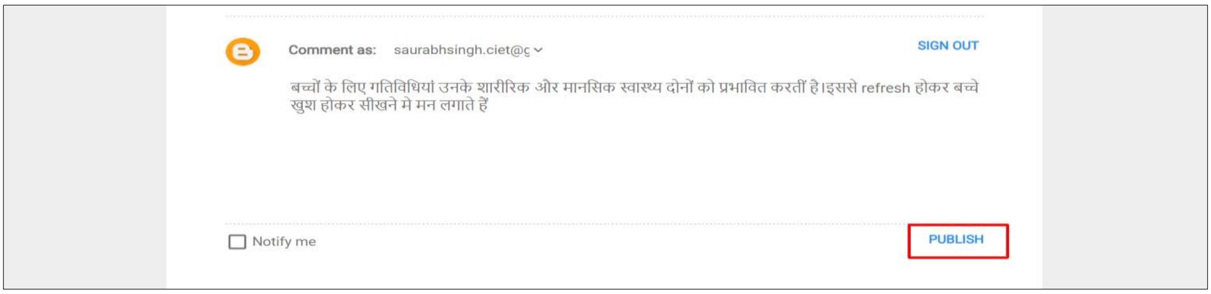

- यदि आप पहले से ही अपने जी. मेल खाते से लॉग इन हैं तो आपकी टिप्पणी प्रकाशित कर दी जाएगी।

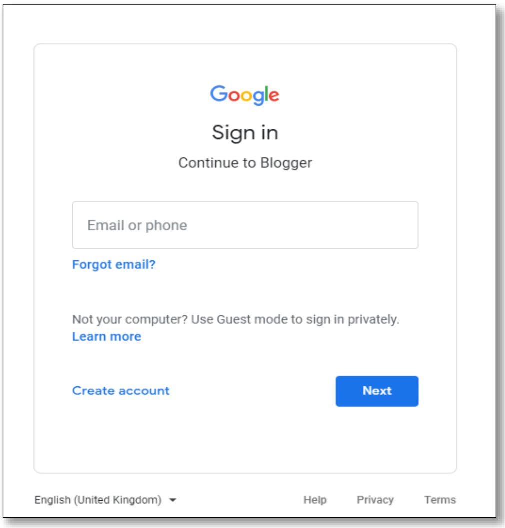

यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जी. मेल लॉगिन पेज की तरफ़ निर्देशित किया जाएगा।

- लॉग इन करने के बाद **डिस्प्ले नेम** डालें और फिर **कंटिन्यू टू ब्लॉगर** पर क्लिक करें

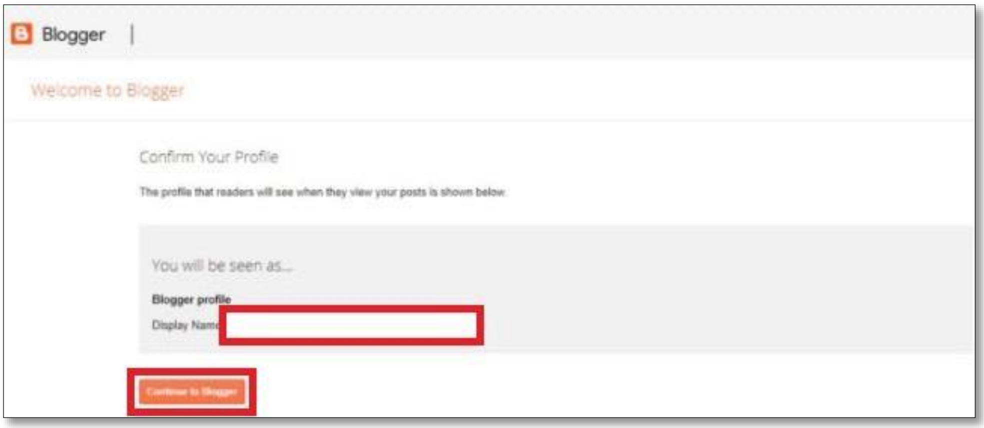

- **पब्लिश** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट कर दी जाएगी।

मॉड्यूल 13 : गतिविधि: 1 प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता के गुण

November 24, 2020

प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बनने के लिए आप में क्या प्रमुख गुण होने चाहिए?
उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- पहल करना
- सकारात्मक दृष्टिकोण रखना
- स्वप्रेरित होना
- परिवर्तन लाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना

आपके अनुसार प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता में अन्य कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

चिंतन के लिए कुछ समय लें और कमेंट बॉक्स में अपनी टिप्पणी दर्ज करें।

विद्यालय नेतृत्व-संकल्पना और अनुप्रयोग

Sanjay Kumar Tewari 24 November 2020 at 18:37

इस प्रश्न से यह लगता है कि छात्र को जो ड. की समझ तो है परन्तु उसे स्थानीय मान का ज्ञान नही है। इस कारण छात्र संख्या को जोडते समय अंकों को सही क्रम में नहीं रख पाया। इस स्थिति से बचने के लिए शिक्षक को प्रश्न देने से पहले छात्र का पूर्व ज्ञान जान लेना चाहिए था।

<u>नेतृत्व परिभाषा</u> (Text) (13_11_Leadership Defined)

आम बोलचाल की भाषा में नेतृत्वकर्ता प्राधिकारी या शक्ति वाले व्यक्तियों को माना जाता है जो संगठन का नेतृत्व करते हैं। आइए हम 'शक्ति'(Power), 'प्राधिकार' (Authority) व 'प्रभाव' (Influence) पर गौर करें और समझने का प्रयास करें कि कैसे ये शब्द वास्तव में हमें नेतृत्व को परिभाषित या पुनः परिभाषित करने में सहायता करते हैं।

शक्ति (Power) पुरस्कार और दण्ड के हथकण्डों को अपनाकर लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाने की क्षमता का ही दूसरा नाम "शक्ति: है। शक्तियाँ तीन प्रकार की हो सकती हैं (१) बल आधारित शक्ति (२) लाभकारी शक्ति (जैसे कि पैसा या नकद) 3. मानकीय शक्ति (मानदंड, नियमों और विनियमों संबंधी)। पूर्व में पारंपरिक राजा और वर्तमान में कुछ राजनैतिक व असामाजिक तत्व ऐसी शक्तियों का प्रयोग अपना स्थापित करने के लिए कर सकते हैं।

प्राधिकार (Authority) वैधानिक शक्ति है। प्राधिकार वह अधिकार है जो कि किसी वैधानिक नियम से मिला है। सरकारी क्षेत्र में कार्यरत अफसरों के पास जो प्राधिकार हैं वे उनके आधार पर अपने क्षेत्र में अपना नेतृत्व स्थापित करते हैं।

प्रभाव (influence) पुरस्कार, दण्ड अथवा प्राधिकार के उपायों के बिना अन्य व्यक्तियों के व्यवहार में बदलाव लाने की क्षमता है।

आप इन सभी तीन तरीकों के सन्दर्भ में अपने नेतृत्व पर आत्मचिन्तन कर सकते हैं।

इन सब में सबसे उपयुक्त तरीका है बिना प्राधिकार के दूसरों को प्रभावित कर पाना व पुरस्कार और दण्ड के बिना विश्वास का वातावरण बनाए रखना। प्रभाव का असर प्रबल, चिरस्थायी और टिकाऊ होता है। सभी विद्यालय अथवा शैक्षणिक परिस्थितियों में उपयुक्त नेतृत्व के बारे में एक निष्कर्ष निकाला जा सकता है- ***"नेतृत्व प्रभावित करने वाली प्रक्रिया है"***

प्रशासन से ऊपर – नेतृत्व की ओर

विद्यालय में आपको अलग-अलग भूमिकाएं निभानी पड़ती है। कभी तो प्रशासन की तरह संगठन के दायित्वों को देखना पड़ता है और कभी किसी कम्पनी के सी ई ओ की तरह आपको विद्यालय के विभिन्न विभागों का प्रबंधन कार्य देखना होता है। कार्यों के इस चहल-पहल में आप जो खो देते हैं, वह है एक नेतृत्वकर्ता के रूप में सोचना और कल्पना करना कि जिन कार्यों पर आप समय दे रहे हैं क्या वे आपके विद्यालय को सुधार व रूपान्तरण की दिशा में ले जा रहे हैं या नहीं? एक प्रशासक, प्रबंधक अथवा नेतृत्वकर्ता के रूप में कार्य करने में अंतर है। नीचे दिये गए चित्र को ध्यान से देखें और स्वयं निर्णय करें कि आप विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में अपने आप को कहाँ पाते हैं?

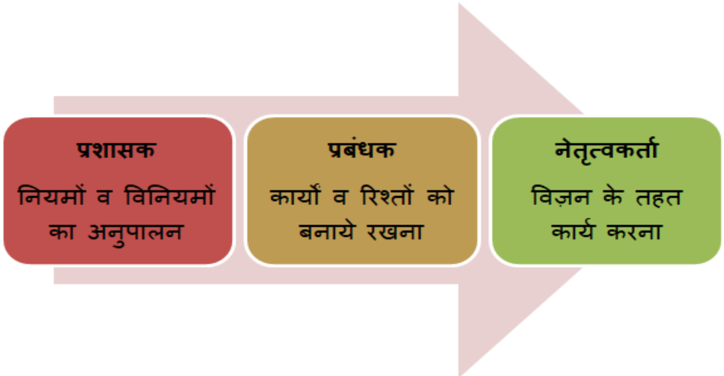

आप चित्र में देखेंगे की जैसे-जैसे काम का क्षेत्र बड़ा होता है, वैसे वैसे आपके काम करने की प्रकृति भी बदलती है। काम को करते समय जब आप केवल नियमों और विनियमों के भीतर कार्य करते हैं तब आप प्रशासनिक प्रवृत्तियों का प्रदर्शन करते हैं। इस भूमिका में आपके काम का दायरा संकीर्ण होता है। यह अत्यधिक नौकरशाही संरचना में देखा जा सकता है जिसमें व्यक्ति अपनी सहज स्थिति में ना रह कर उच्च पदस्थों द्वारा तय की गई सीमाओं का सहारा लेना अच्छा समझता है। अधिकतर मामलों में आप निर्देशों के लिए इंतज़ार करते हैं और अपने निर्णय लेने के कौशल पर निर्भर नहीं होते।

जब आप अपने विवेक द्वारा विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों और विभागों की निगरानी कर अपने विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास करते हैं तो आप विस्तरित सीमाओं के साथ एक प्रबंधक की भूमिका में होते हैं जो प्रशासन की तुलना में थोड़ा बेहतर है।

हालाँकि एक नेतृत्वकर्ता की भूमिका इससे भी अधिक महत्वपूर्ण होती है :-

एक नेतृत्वकर्ता की अपनी विज़न या दूरदृष्टि होती है। वह दलों के माध्यम से विज़न के क्रियान्वयन का प्रयास करता है।

- नेतृत्वकर्ता एक ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जो सहयोगी व मानवीय संबंधों को प्रोत्साहित करता है। इस कार्य के लिए वह दल बनाता है व उनका नेतृत्व करता है।

- नेतृत्वकर्ता अपने कार्यों से सहकर्मियों को प्रेरित करता है और दलों के माध्यम से वह सहयोगात्मक संस्कृति का निर्माण करता है।

एक विद्यालय प्रधान के तौर पर शायद अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाते हुए अपनी समझ में और बहुत कुछ जोड़ने की आवश्यकता है। इस शुरुआती विमर्श के बाद आइये विद्यालय नेतृत्व पर अपनी समझ की मीमांसा करते हैं।

गतिविधि 2: स्वयं को परखें (Text) (13_12_Try Yourself)

सामान्य/ दैनिक कार्यो से नेतृत्व की तरफ बढ़ना

एक विद्यालय प्रमुख अथवा अध्यापक नेतृत्वकर्ता के तौर पर नीचे लिखे प्रश्नों को जांचे और ध्यान दें। आप विद्यालय में बिताए जा रहे अपने समय में, नेतृत्व सम्बन्धी गुणों, कार्यों और अभ्यासों को कैसे शामिल करेंगे।

आप विद्यालय नेतृत्व की अन्यान्य भूमिकाओं एवं ज़िम्मदारियों को समझने के लिए (अतिरिक्त पाठ १) को देख सकते हैं।

विद्यालय नेतृत्वकर्ता के लिए चिन्तनशील ग्रिड

एक प्रशासक अथवा प्रबंधक के रूप में वर्तमान अभ्यास	एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में लाए गए परिवर्तन	
प्रशासक अथवा प्रबंधक के तौर पर एक दिन में मेरे द्वारा किए गए कार्य	सकारात्मक परिवर्तन हेतु समर्पित नेतृत्व कर्ता के तौर पर एक दिन के लक्ष्य में क्या और शामिल करना है?	विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में स्वयं का मूल्यांकन कैसे करूँ?

अध्यापक नेतृत्वकर्ता के लिए चिन्तनशील ग्रिड

अध्यापक के तौर पर वर्तमान अभ्यास	एक अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में लाए गए परिवर्तन	
एक अध्यापक के तौर पर कौन सी सीखने- सिखाने की प्रक्रियाओं में मैं संलग्न होता/ होती हूँ?	क्या नई सोच, नए सन्दर्भ एवं नवाचार अपने नियमित अभ्यास में शामिल कर सकूं जिससे अपने विद्यालय में सकारात्मक परिवर्तन आ सकें?	मै एक अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्व आकलन कैसे करूँ?

<u>आइए, समेकन करें</u> (Slide Text) (13_13_consolidation 1)

स्लाइड 1

विद्यालय नेतृत्व

विद्यालय नेतृत्व का अर्थ स्वयं एवं अन्य हितधारकों (अध्यापक, छात्र, अभिभावक एवं समुदाय) को प्रभावित करने की प्रक्रिया है। इसके साथ ही विद्यालयी परिस्थितियों में सकारात्मक परिवर्तन लाना भी विद्यालय नेतृत्व से अभिप्राय है। ये सकारात्मक प्रक्रियाएं ही समुचित रूप से विद्यालय को रूपांतरण की दिशा में आगे ले जाती हैं। विद्यालय नेतृत्व का लक्ष्य प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करना है।

स्लाइड 2

अध्यापक नेतृत्व

अध्यापक नेतृत्व निरन्तर ज्ञान, कौशल, एवं अभिवृत्ति के विस्तार में संलग्न होता है। स्वयं के साथ साथ उसे अपने कक्षा अधिगम को भी विकसित करना होता है एवं मौजूदा और आने वाली चुनौतियों से सामना करने की पहल भी करनी होती है ताकि बच्चों की सीखने संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।
अध्यापक नेतृत्व के अन्य पहलू हैं-

- प्रयोगधर्मिता एवं नवाचारों की पहल करने के साथ साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं की नए तकनीकी ज्ञान की जांच पड़ताल करना। इसे हम व्यावसायिक खोज का नाम दे सकते हैं।
- चिंतनशील अभ्यासकर्ता बनना।
- विद्यालय के अन्दर और उसकी चारदीवारी के बाहर भी सीखने सिखाने का संवाहक बनना।
- बच्चों को गतिविधियों में संलग्न होने का अवसर उपलब्ध करवाना जो स्वतंत्र और सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करे।

छात्र अधिगम में विद्यालय नेतृत्व का महत्व

छात्र अधिगम में विद्यालय नेतृत्व का महत्व (Text) (13_14_Significance of School Leadership on student learning)

जैसा कि आप भली भांति जानते हैं, अध्यापकों का सीधा प्रभाव छात्र अधिगम पर पड़ता है। एक अध्यापक बच्चों को ही केंद्र में रखते हुए निरन्तर शिक्षण- अधिगम प्रक्रियाओं को सृजित और पुर्नसृजित करता है। लेकिन इस बारे में शोध कहते है कि अध्यापक के सीधे प्रभाव के अतिरिक्त विद्यालय नेतृत्व की भूमिका भी छात्र अधिगम के सन्दर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गुणवत्तापरक अधिगमके बाद विद्यालय नेतृत्व दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारक है जो बच्चों के अधिगम पर प्रभाव डालता है (रॉबिसन एवं अन्य, 2008)।

विद्यालय नेतृत्व अध्यापकों को प्रभावकारी तरीके से शिक्षण- अधिगम प्रक्रियाओं को संचालित करने के लिए वातावरण का निर्माण करता है जैसे कि विद्यालय नेतृत्व सीखने के लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विद्यालय में अधिगम संस्कृति भी विकसित करता है जिससे छात्र अधिगम सुनिशिचत हो। वे दल का निर्माण करते हैं, सभी बच्चों के सफलता पूर्वक सिखाने के विज़न के साथ अन्य लोगों में भी नेतृत्व क्षमता विकसित करते हैं। इसके साथ ही, वे शिक्षकों को उनकी क्षमताओं के उन्नयन करने में मदद भी करते हैं। विद्यालय प्रमुख, विद्यालय में साक्ष्य और डेटा के आधार पर छात्र अधिगम की प्रक्रिया अपनाते हैं। जहां हर मापदंड पर विद्यालय को रूपांतरित करने की आवश्यकता होती है ऐसे चुनौतीपूर्ण माहौल में प्रभावशाली नेतृत्व का महत्व और बढ़ जाता है। संक्षेप में कहा जाए तो सफल विद्यालय नेतृत्वकर्ता सहभागी विज़न विकसित करने, अध्यापकों और छात्रों के लिए लक्ष्य निर्माण, सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के साथ साथ छात्र अधिगम भी सुनिश्चित करने हैं।

रॉबिंसन एवं अन्य, 2008 ने अनेक शोध पत्रों के अध्ययन के बाद छात्र अधिगम पर विद्यालय नेतृत्व के चार महत्वपूर्ण प्रभाव बताए, जो कि इस प्रकार हैं: सीधा प्रभाव, मध्यस्थ प्रभाव, पारस्परिक प्रभाव एवं प्रतिलोम प्रभाव।

सीधा प्रभाव

सीधे प्रभाव से आशय यह है कि विद्यालय नेतृत्व छात्र अधिगम को सीधा प्रभावित करता है। इस प्रकार का प्रभाव तब और सुस्पष्ट हो जाता है जब विद्यालय नेतृत्वकर्ता अध्यापकों का सहयोग एवं परामर्श करने के साथ साथ स्वयं शिक्षण कार्य में भी संलग्न होता है। भारत के विद्यालयों में बहुधा यह देखा गया है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के नेतृत्वकर्ता शिक्षण कार्य में भी संलग्न होते हैं इससे उनकी शैक्षिक क्षमता का छात्र अधिगम पर सीधा प्रभाव पड़ता है। विद्यालय नेतृत्वकर्ता का कार्य सिर्फ अपनी ही कक्षा में अधिगम के अनुकूल वातावरण बनाना नहीं है अपितु पूरे विद्यालय के वातावरण को छात्र अधिगम के अनुकूल सुनिश्चित करना है।

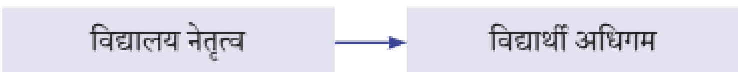

चित्र 1 —प्रत्यक्ष प्रभाव

मध्यस्थ प्रभाव

मध्यस्थ प्रभाव के संदर्भ में विद्यालय नेतृत्व के अतिरिक्त, अन्य कई घटक छात्र अधिगम को प्रभावित करते हैं।

उदाहरण के तौर पर प्राथमिक एवं उच्च विद्यालय में आप अध्यापकों के व्यावसायिक कौशल विकास के द्वारा छात्र अधिगम को प्रभावित करते हैं, इस प्रकार से:

- अध्यापकों को अकादमिक सहयोग देकर।
- विद्यालय में अध्यापकों एवं अन्य हितधारकों के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु सहयोगात्मक कार्य योजनाएं बनाकर।
- अध्यापकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ साथ उनके लिए एक परामर्शदाता बनकर भी एक विद्यालय प्रमुख छात्र अधिगम को बढ़ा सकता है।

यदि इसे बड़े फलक पर देखा जाए तो व्यवस्थात्मक नेतृत्व ब्लॉक समन्वयक अथवा संकुल समन्वयक भी अध्यापकों के शिक्षण कार्य की गुणवत्ता बढाने में अकादमिक सहयोग कर सकते है।

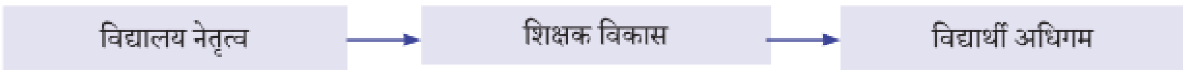

चित्र 2 —मध्यवर्ती अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव

<u>पारस्परिक प्रभाव</u>

ऊपर लिखी हुई बातों पर विचार विमर्श के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि विद्यालय प्रमुख शिक्षण कार्य में स्वयं संलग्न होकर अथवा अध्यापकों के व्यावसायिक एवं भावनात्मक उन्नयन के द्वारा छात्रों के अधिगम स्तर में सकारात्मक परिवर्तन लाता है।

नीचे बने चित्र 3 में आप पारस्परिक प्रभाव देख सकते हैं।

इस चित्र के पहले हिस्से में आप देखते हैं कि नेतृत्वकर्ता सीधे छात्र अधिगम को प्रभावित करता है पारस्परिक प्रभाव में इसका क्या अर्थ हुआ ?

जब विद्यालय नेतृत्वकर्ता सीधे अधिगमकार्य मे संलग्न होता है तब उसका छात्रों की शैक्षिक जरुरतों, उनकी रुचियों एवं उनकी अधिगम क्षमता बढ़ाने के तरीकों से सीधा परिचय होता है। यह ज्ञान एवं अनुभव, एक विद्यालय प्रमुख को बच्चों की सीखने सम्बन्धी आवश्यकताओं का सही आकलन करने में मदद करता है।

इस प्रकार नेतृत्वकर्ता के रूप में अपने विद्यालय की आवश्यकतानुसार सही तरीके से निर्णय लेने एवं अध्यापकों के साथ अकादमिक विकास योजना बनाने में एक प्रमुख प्रभावशाली तरीके से काम कर सकता हैं। इस तथ्यों से ये स्पष्ट होता है कि छात्र अधिगम के विभिन्न पहलुओं की समझ भी विद्यालय नेतृत्व को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

एक ऐसे विद्यालय की कल्पना करें जहाँ नेतृत्वकर्ता की अधिगम कार्य में संलग्नता तथा बच्चों से संवाद कम है, फलस्वरूप उसे अपने छात्रों की आवश्यकताओं का पता नहीं हो तो, ऐसी परिस्थिति में पारस्परिक प्रभाव उत्पन्न नहीं होगा।

चित्र संख्या 3 में हम पारस्परिक प्रभाव के दूसरे भाग को देखते है। एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता अध्यापकों को अकादमिक सहयोग देकर छात्रों के अधिगम को प्रभावित करता है। क्या इसका विपरीत भी संभव है ?

जी हाँ !

इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। विद्यालय नेतृत्वकर्ता एवं अध्यापकों के पारस्परिक सहयोग से अधिगम कार्य किये जाने के बावजूद कुछ छात्रों का अधिगम स्तर संतोषप्रद नहीं होता है। कुछ छात्रों का अधिगम स्तर तय मानदंड से निम्न स्तर का होना यह साबित करता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में किए जा रहे प्रयास और तकनीकी पर्याप्त नहीं है। यह विद्यालय नेतृत्वकर्ता तथा अध्यापकों को प्रतिपुष्टि प्रदान करता है कि वे अपने शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के प्रयास तथा तकनीकी में परिवर्तन करें। यह समझ विद्यालय प्रमुख को अपने अध्यापकों को उनके ज्ञान एवं व्यावसायिक कौशल को विस्तार देने में प्रेरित करता है। यहाँ देखा जा सकता है कि किस तरह से छात्र अधिगम स्तर अध्यापक एवं नेतृत्वकर्ता के अभ्यास को बेहतर करने में योगदान देता है। इससे विद्यालय नेतृत्व एवं अध्यापक नेतृत्व, दोनों को मजबूती प्रदान होती है।

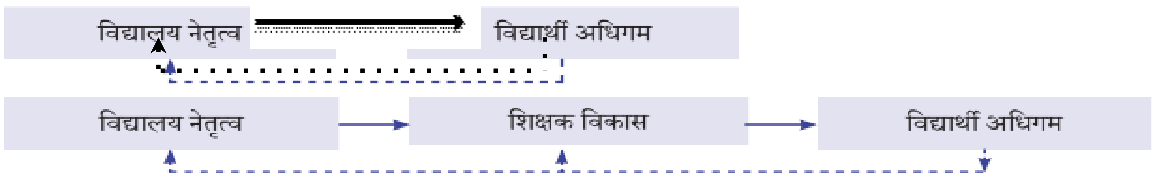

चित्र3 — पारस्परिक प्रभाव

प्रतिलोम प्रभाव

प्रतिलोम प्रभाव को सीधे प्रभाव का विपरीत प्रभाव भी कह सकते हैं। सीधे प्रभाव में हम देखते हैं कि विद्यालय प्रमुख, छात्र अधिगम पर सीधा प्रभाव डालता है, परंतु विपरीत प्रभाव में छात्र विद्यालय नेतृत्व और उनके क्रियाकलापों पर असर डालते हैं। जैसे कि, विद्यालय में अगर कोई एक भी विलक्षण बच्चा है तो वह कक्षा में सीखने सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावित करेगा। विद्यालय प्रमुख तथा शिक्षकों को उसकी सीखने की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी तथा कक्षा अधिगम की बनावट में ऐसे परिवर्तन करने होंगे जो उसके बौद्धिक स्तर को संबोधित कर सकें। अतः छात्रों की विशिष्ट प्रतिभा और रुचि जो हो सकता है कि अध्यापक के लिए अकल्पनिय थी, वह उसके सोचने एवं कार्य पद्धति पर असर डालती है। यह भी सम्भव है कि अध्यापक द्वारा अपने पूर्व विद्यालय में छात्रों की भाषाई विविधता का सामना नहीं किया गया हो परन्तु नए विद्यालय में उसे भिन्न भाषा भाषी छात्रों के लिए नए और सुगम अधिगम रणनीति अपनानी पड़ेगी। यह एक नई चुनौती होगी जिस पर खरा उतरने के लिए अध्यापक को अपने ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति में वृद्धि करनी पड़ेगी। इस प्रकार से छात्रों कि विभिन्न अधिगम सम्बन्धि आवश्यकताएं एवं उनके प्रतिभाग करने के तरीके, अध्यापक एवं विद्यालय नेतृत्व पर प्रभाव डालते हैं।

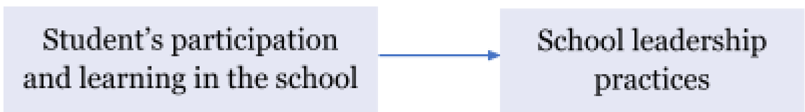

Figure 4: Inverse Effect

छात्र प्रतिभाग एवं छात्र अधिग → द्यालय नेतृत्व अभ्यास

चित्र ४: प्रातलाम प्रभाव

<u>गतिविधि 3: विद्यालय नेतृत्व एवं छात्र अधिगम</u> (Text -Padlet) (13_15_School Leadership and Student Learning)

do_3131588471875993601232

विद्यालय नेतृत्व का छात्र अधिगम पर प्रभाव (चार प्रकार), इस अवधारणा को आप अपने विद्यालय के संदर्भ में कैसे क्रियान्वित करेंगे?

चिंतन के लिए कुछ समय लें और कमेंट बॉक्स में अपनी टिप्पणी दर्ज करें।

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ पर पहुँचना

गतिविधि पृष्ठ पर पहुंचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का पालन करें:
<u>विकल्प 1:</u> किसी भी ब्राउज़र में ये यू.आर.एल. टाइप करें

https://nishtha-activities.blogspot.com/2020/11/13-3.html or http://tiny.cc/ncert13m3h

<u>विकल्प 2:</u> इस पी.डी.एफ. को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में यू.आर.एल. कॉपी करें

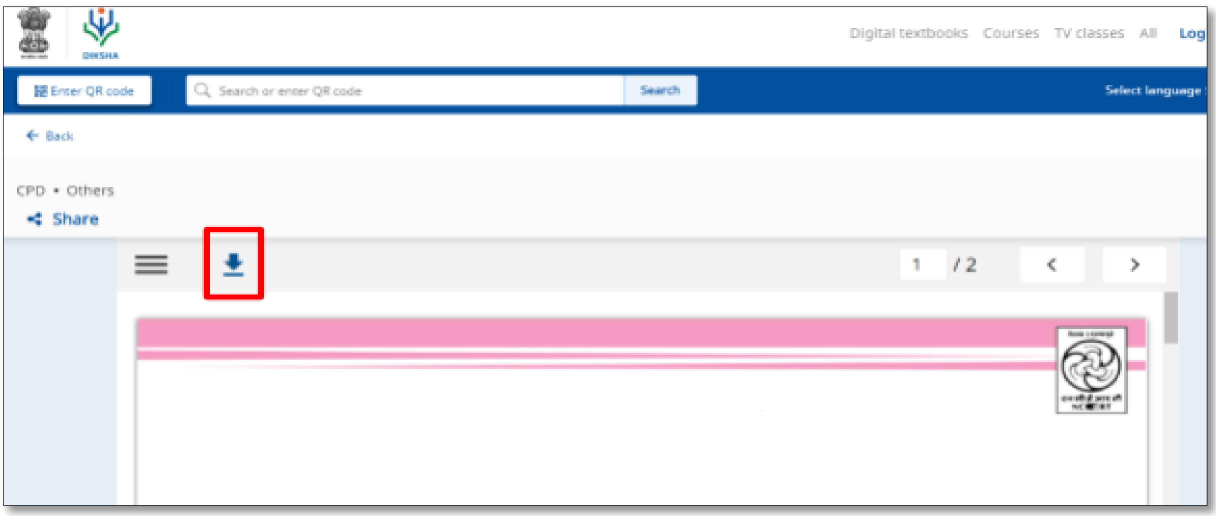

विकल्प 3: **ई-पाठशाला क़्यु आर कोड स्कैनर** का उपयोग करके क़्यु आर कोड को स्कैन करें

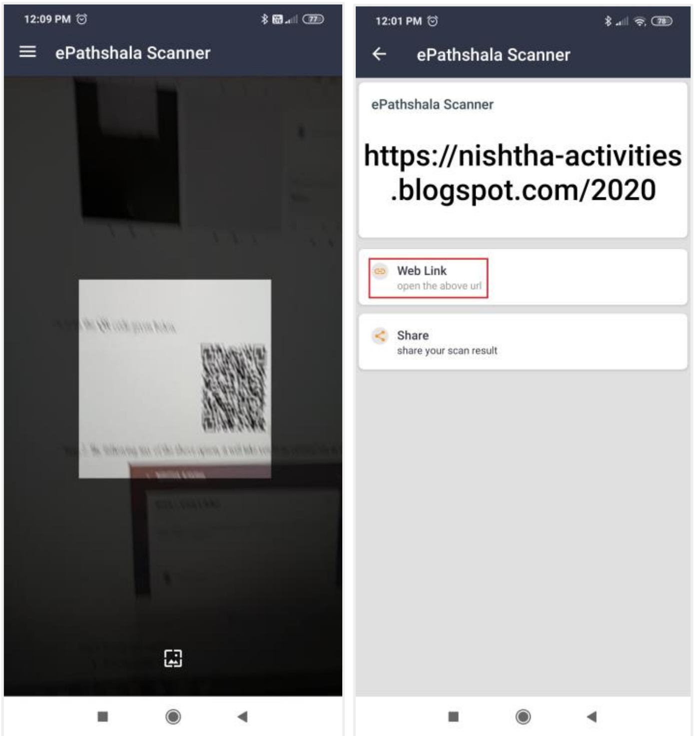

चरण 2: उपरोक्त किसी भी विकल्प का पालन करते हुए, यह आपको बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3: अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- '**एंटर योर कमेंट**' पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

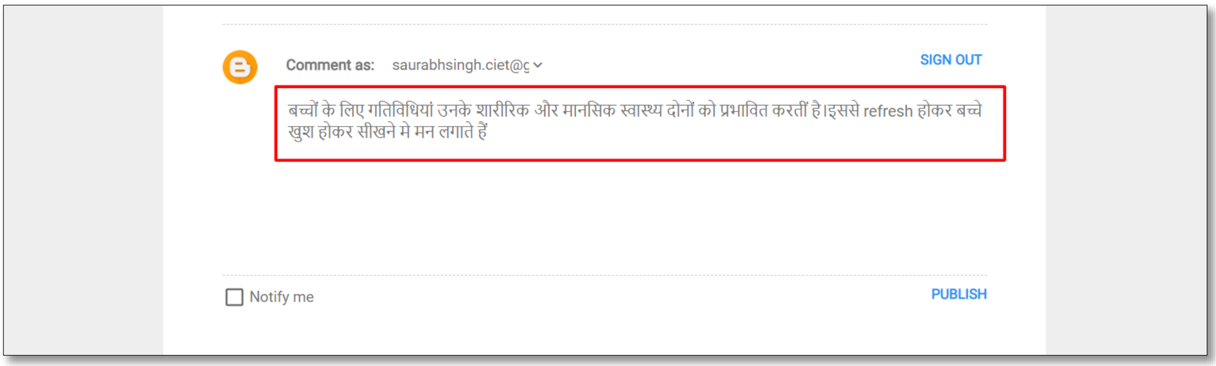

पब्लिश पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जी. मेल खाते से लॉग इन हैं तो आपकी टिप्पणी प्रकाशित कर दी जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जी. मेल लॉगिन पेज की तरफ़ निर्देशित किया जाएगा।

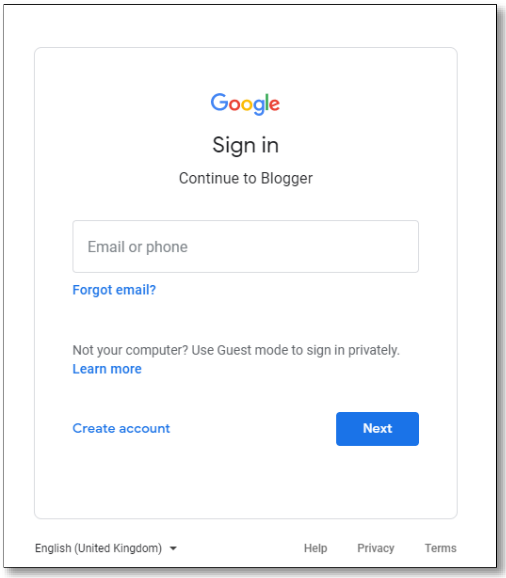

- लॉग इन करने के बाद **डिस्प्ले नेम** डालें और फिर **कंटिन्यू टू ब्लॉगर** पर क्लिक करें

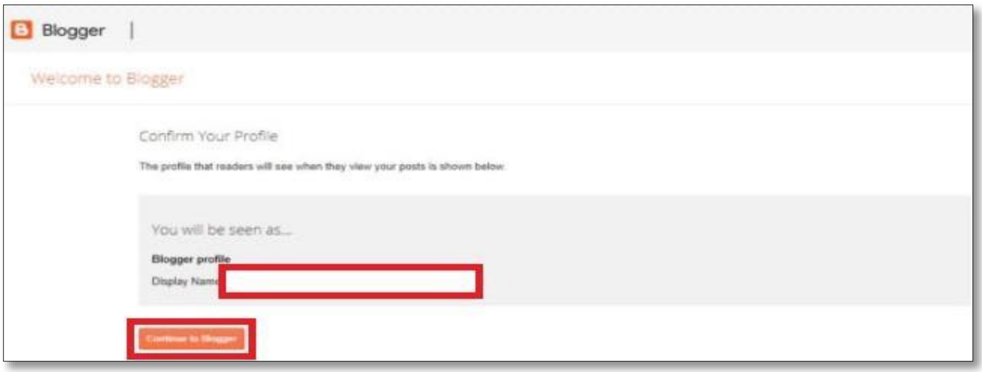

- **पब्लिश** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट कर दी जाएगी।

छात्र अधिगम हेतु अकादमिक नेतृत्व

छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व_(video) (13_16_Academic leadership for Improving Student Learning)

YouTube Link: https://www.youtube.com/watch?v=fPaU19PyW30
DIKSHA Link:
https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_3131579601182556161923

do_3131579601182556161923

छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व-वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_17_Academic leadership for Improving Student Learning_ Transcript)

नमस्कार, साथी शिक्षकों, मैं डॉ. कश्यपी अवस्थी और मेरे साथ मेरी साथी डॉ. चारु, आज हम दोनों आपके सभी के साथ छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व पर चर्चा करेंगे।

तो कहाँ से शुरू करें ?

डॉ. चारू: डॉ. कश्यपी, शुरुआत करते हैं अकादमिक नेतृत्व को परिभाषित करने से।

डॉ. कश्यपी: बिलकुल, अकादमिक नेतृत्व से तात्पर्य विद्यालय प्रमुख के उस ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति से है जो कि वह, अपने विद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में छात्र अधिगम की वृद्धि के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, सकारात्मक बदलाव लाता है।

दूसरा, साथ ही वो अकादमिक नेतृत्वकर्ता, शिक्षकों की और उनकी व्यावसायिक कौशलता को बढ़ाने में मदद करता है जिससे कि संदर्भ आधारित शिक्षण अधिगम वातावरण सृजित हो।एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता की भूमिका में विद्यालय प्रमुख को अडिग विश्वास होता है कि हर बच्चा सीख सकता है एवं बेहतर निष्पादन के योग्य है। वह यह भी विश्वास रखता है कि शिक्षक अपने शिक्षण अभ्यास, ज्ञान और कौशल में अभिवृद्धि भी कर सकते हैं। एक कुशल अकादमिक नेतृत्वकर्ता विद्यालय में हो रहे शिक्षण अभ्यास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का सहयोगात्मक निरीक्षण भी करता है। हम सभी जानते हैं कि प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय प्रमुख शिक्षण कार्यों में भी स्वयं संलग्न होते हैं, ऐसे में वे अध्यापक और विद्यालय प्रमुख दोनों की भूमिका निभाते हैं। यह एक सुअवसर भी है क्योंकि इस प्रकार, विद्यालय प्रमुख, एक शिक्षक की भूमिका को तथा शिक्षण सम्बन्धी चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इस दोहरी भूमिका में रहते हुए एक विद्यालय प्रमुख छात्रों की विविध पृष्ठभूमि और अलग अलग अधिगम संबंधी आवश्यकताओं को भी समझ पाते हैं।

डॉ. चारू, आप भी अपनी राय बताएं, छात्र अधिगम अभिवृद्धि के लिए और क्या-क्या किया जा सकता है, एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में?

डॉ. चारू: जी, मैं आपसे सहमत हूँ, डॉ. कश्यपी। प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय प्रमुख, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सीधा जुड़ा होने के कारण, शिक्षक की भूमिका को भली भांति समझते हैं। कक्षा में अध्यापक एक नेतृत्वकर्ता की भूमिका में होता हैं, जहाँ वे यह तय करते हैं कि किन अभ्यासों द्वारा सभी बच्चों की अधिगम सम्बन्धी आवश्यकताएं पूरी हों एवं बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो पाए। वे छात्रों के प्रति उत्तरदायी होतें है, इसके लिए उन्हें उनके अभिभावकों के सतत संपर्क में भी रहना पड़ सकता है।

दूसरी ओर, विद्यालय प्रमुख के कार्य करने का दायरा विस्तृत होता है। अधिकतर यह देखा गया है कि अध्यापक नेतृत्वकर्ता का प्रभाव क्षेत्र कक्षा तक सीमित होता है, जबकि एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता का प्रभावक्षेत्र सभी अध्यापकों एवं सभी छात्रों तक फैला हुआ है, यहाँ तक कि समुदाय को भी प्रभावित करने की ज़िम्मेदारी विद्यालय प्रमुख पर ही है। छात्रों में व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का विकास, उनका कल्याण एवं प्रत्येक छात्र के अधिगम स्तर को बढाने का अंतिम स्तरीय उत्तरदायित्व, विद्यालय नेतृत्वकर्ता का ही है।

इस प्रकार से, अध्यापकों का व्यावसायिक विकास तथा सभी छात्रों के शिक्षण संबंधी परिणामों को सुनिश्चित करना, एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता की भूमिका होती है।

डॉ. कश्यपी, मैं आपसे आग्रह करूंगी कि आप हमें बताएं कि अकादमिक नेतृत्वकर्ता की क्या मुख्य भूमिकाएं होती हैं ?

डॉ कश्यपी: ज़रूर, यूँ तो विद्यालय नेतृत्वकर्ता के सभी कार्य विद्यालय गुणवत्ता हेतु ही होते हैं, पर मैं मुख्य दो बातों पर अभी ज़ोर देना चाहूंगी।

1. छात्र अनुकूल अधिगम वातावरण का संचालन

इसमें विद्यालय प्रमुख की यह प्राथमिक ज़िम्मेदारी है कि वह एक प्रभावशाली अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में विद्यालय में सीखने के लिए जीवंत वातावरण तैयार करे, जिसके लिए प्रिंट समृद्ध विद्यालय एवं कक्षा वातावरण और रोचक शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग हो। दूसरा, इसके अतिरिक्त, स्वयं के साथ-साथ शिक्षकों के सूचना और संचार प्रौद्योगिकी कौशल को विकसित करना, पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर बच्चों को प्रकृति और बाहरी दुनिया से जोड़ना, बाल केन्द्रित शिक्षण प्रकिया तैयार करना, अभिभावकों और समुदाय के साथ संवाद बनाये रखना आदि अनेकों तरीके हो सकते हैं जिससे बच्चों का अधिगम एवं सर्वांगीण विकास हो सके।

दूसरा, जो महत्वपूर्ण अकादमिक नेतृत्वकर्ता का कार्य है या उनकी जो भूमिका है वो है:

2. अध्यापकों को अकादमिक सहयोग प्रदान करना

अकादमिक नेतृत्वकर्ता की भूमिका, केवल भौतिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने से सीमित नहीं है, अपितु अध्यापकों को, छात्रों की भावनात्मक, संज्ञानात्मक और भाषिक विविधता के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं के सन्दर्भ में अकादमिक सहयोग प्रदान करना भी है। इसके अलावा, बच्चों के अधिगम संबंधी दक्षताओं को सुदृढ़ करने के लिए विद्यालय प्रमुख को अध्यापकों को सहयोग कर अभिभावकों और विद्यालय के बीच की दूरियों को कम करने की भूमिका निभानी भी होती है। इस तरह विभिन्न तरीकों से विद्यालय नेतृत्वकर्ता अध्यापकों को अकादमिक सहयोग प्रदान कर सकता है।

मुझे लगता है कि बहुत सारे ऐसे अकादमिक नेतृत्वकर्ता के कार्य हैं, मैंने दो पर एक प्रकाश डाला है, क्यों न आप और दो पर प्रकाश डालें तो हमारे साथी शिक्षकों को एक पूरा भान हो जायेगा कि एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के नाते वो क्या क्या कर सकते हैं?

डॉ. चारू: डॉ. कश्यपी, आपने दो बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिकाओं के बारे में बताया, तीसरी भूमिका लेते हैं:

3. अध्यापकों का प्रशिक्षण (कोचिंग) एवं सलाह (मेंटरिंग)

अध्यापकों का प्रशिक्षण (कोचिंग) एवं सलाह (मेंटरिंग)- ये दोनों ही अकादमिक नेतृत्वकर्ता के महत्वपूर्ण विशेषज्ञता लिए हुए कौशल माने जाते हैं। विद्यालय प्रमुख इन दोनों कौशलों का प्रयोग कक्षा में ऑन–साईट सहयोग अथवा कक्षा के बाद आपसी संवाद एवं परिचर्चा के दौरान कर सकते हैं। ऐसा पाया गया है कि ये दोनों ही कौशल समय के साथ विकसित किये जा सकते हैं, जिसके लिए विद्यालय प्रमुख अध्यापकों के साथ एक विश्वासपूर्ण माहौल का निर्माण करते हैं और आपसी संवाद कायम करते हैं। विद्यालय प्रमुख और अध्यापकों के बीच संवाद का उद्देश्य अध्यापकों की व्यावसायिक योग्यता को सशक्त करना होता है। इस प्रक्रिया में विद्यालय प्रमुख के भी ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति का विकास होता है। अकादमिक नेतृत्वकर्ता के द्वारा अध्यापकों का प्रशिक्षण एवं सलाह छात्रों के अधिगम पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

आइये देखते हैं चौथी भूमिका क्या है?

4. साथी अध्यापकों के साथ मिलकर विद्यालय शैक्षणिक दिनदर्शिका (कैलेंडर) का निर्माण

विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहां शैक्षणिक वातावरण व प्रक्रियाओं की रूपरेखा बना कर उसे व्यवहार में लाया जाता है। इसमें अनेक प्रक्रियाएं शामिल हैं जैसे कि पाठ्यक्रम का नियोजन, खेलकूद, रंगमंच, कला एकीकृत

गतिविधियां इत्यादि। अपने साथी अध्यापकों के साथ बैठकर पाठ्यक्रम का नियोजन भी अकादमिक नेतृत्वकर्ता का एक मुख्य कार्य है। प्राथमिक स्तर पर इन गतिविधियों की रूपरेखा को आयु अनुसार संतुलित अधिगम के लिए निर्मित की जाती है।

एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के इन कार्यों को समझने के उपरांत, अगले वीडियो में एक प्रदर्शन गतिविधि का नाट्य रूपांतरण देखते हैं। डॉ. कश्यपी एक विद्यालय प्रमुख की भूमिका निभाएंगी और मैं एक अध्यापिका की भूमिका निभाऊंगी।

अकादमिक नेतृत्व: अकादमिक सहायता प्रदान करना: प्रदर्शन गतिविधि_(Video) (13_18_Academic Leadership: Providing Academic Support)
YouTube Link: https://www.youtube.com/watch?v=hm2VbYzD-tY

DIKSHA Link: https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_3131579747154247681484

do_3131579747154247681484

अकादमिक नेतृत्व:अकादमिक सहायता प्रदान करना: प्रदर्शन गतिविधि_वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_19_Academic Leadership: Providing Academic Support_Transcript)

नमस्कार साथी मित्रों, हम एक प्रदर्शन गतिविधि के द्वारा अकादमिक नेतृत्व पर थोड़ा और प्रकाश डालेंगे। इस गतिविधि में मेरे साथ मेरी साथी डॉ चारू हैं जो की अध्यापिका की भूमिका निभाएंगी और मैं संस्था प्रधान यानी विद्यालय प्रमुख की भूमिका निभाऊंगी। तो आइए देखते हैं एक प्रदर्शन गतिविधि।

विद्यालय प्रमुख (डॉ. कश्यपी): डॉ. चारु, आप विद्यालय में नई शिक्षिका के रूप में आई हैं, कक्षा चार और पांच को पढ़ाने का यह आपका पहला अनुभव है, तो आप बतायेंगी कैसा रहा?
अध्यापिका (डॉ. चारू): जी, मैं इस विद्यालय में आकर बेहद ही उत्साहित हूँ। मेरा अनुभव यह रहा है कि यहां अधिकांश बच्चे अच्छी तरह से सीख रहे हैं और समझ रहे हैं हालांकि सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित नहीं हो पा रहा है।

विद्यालय प्रमुख: मुझे खुशी है कि अपने शुरुआती दिनों में ही आप इतने चिंतनशील हैं और यह ध्यान दे पा रहीं हैं कि सभी बच्चे सीख रहे हैं या नहीं। क्या आप अपने कुछ अनुभव साझा करना चाहेंगे?

अध्यापिका: जी, आप मेरी कक्षा को ध्यानपूर्वक देख रही हैं पिछले कुछ दिनों से, यह मुझे आभास है। मेरे पास पैंतालीस बच्चे कक्षा चार में हैं और लगभग बत्तीस बच्चे कक्षा पांच में हैं। मैने अनुभव किया कि कुछ बच्चों को कक्षा शिक्षण में रुचि नहीं रहती और उन्हें ध्यान केंद्रित करने में भी काफी कठिनाई महसूस हो रही है। यद्यपि, कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के लिए, मैं अनेक विधियों का प्रयोग करती हूँ जैसे समूह गतिविधि, अभिनय, नाटक इत्यादि। मैं उन्हें बाहर प्रकृति में भी ले जाने का प्रयास करती हूँ परंतु फिर भी कुछ बच्चे फिर भी इन सब में शामिल नहीं हो पाते। जब मैंने इन बच्चों से अनौपचारिक रूप से बात की तो दो बातें सामने निकल कर आयीं।

पहली बात यह है कि उनकी बोलचाल की भाषा, कक्षा की भाषा से भिन्न है, कोई क्षेत्रीय भाषा है जो उनके घर में बोली जाती है। बच्चों ने मुझे यह भी बताया कि उनके घर मे मोबाइल फोन का और टीवी का, काफ़ी इस्तेमाल होता है जो वो खाली समय में उसमें जुड़े रहते हैं।

विद्यालय प्रमुख : जैसा कि मैं समझ पा रही हूँ, आप कक्षा में दो गम्भीर मुद्दों का सामना कर रही हैं। एक भाषाई विभिन्नता और दूसरी बच्चों का अत्याधिक टीवी और मोबाइल के साथ जुड़ाव होना। यह दोनों बातें कहीं न कहीं बाधक हो रही हैं, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में। तो क्या आपने इन समस्याओं पर गौर किया है या इनके हल को निकालने के लिए आपने कुछ तैयार किया है अपने आप को?

अध्यापिका: जी, आप बिलकुल ठीक कह रहीं हैं, मैं कक्षा में इन्ही दो मुख्य समस्याओं से जूझ रही हूँ। पहली, भाषाई विभिन्नता की समस्या, दूसरी, गैर पारम्परिक संसाधनों का प्रयोग कर पाने की असमर्थता, मेरी असमर्थता। मैंने नई कार्यनीति प्रयोग करने के बारे में सोचा है। मुझे समुदाय के साथ बात करने की आवश्यकता है, वे मुझे कुछ दिनों के लिए सह-अध्यापिका के रूप में किसी व्यक्ति को उपलब्ध करा दें जो क्षेत्रीय भाषा बोलता हो।

दूसरा, मैं स्वयं सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के कुछ ऐसे अवसर तैयार कर रही हूँ जिससे बच्चे मोबाइल फोन और कंप्यूटर के माध्यम से भी पाठ्य पुस्तकों की अवधारणाओं को रुचिकर रूप से समझ सकें और आपसी सहयोग से ज्ञान का सृजन कर सकें।

विद्यालय प्रमुख: मैं बेहद प्रसन्न हूँ कि आपके पास इन समस्याओं के इतने रुचिकर हल हैं। आपकी बात में भी मैं कुछ और जोड़ना चाहती हूँ। आप अपनी कक्षाओं को बच्चों के साथ "स्वयं प्रभा" चैनल के "किशोर मंच" चैनल नम्बर इकत्तीस और श्रव्य माध्यम रेडियो पर ज्ञान वाणी भी सुन सकती हैं।

विद्यालय प्रमुख: क्या आपको आपकी कक्षा के बच्चों के शिक्षण अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए किसी और मदद की जरूरत है?

अध्यापिका: जी, अगर मुझे बगल के विद्यालय के शिक्षकों के साथ जोड़ दें तो बेहतर होगा। उन्होने बेहद ही रचनात्मक एवं नवाचारी पाठ्य सहायक सामग्री बनाई है। मैं उनसे बहुत कुछ सीख सकती हूँ।

विद्यालय प्रमुख: अवश्य, मैं भी हमारे साथी विद्यालय के प्रमुख से बात करती हूँ। और मुझे बहुत अच्छा लगा कि आप आस पास के विद्यालयों में क्या हो रहा है, उसके बारे में भी मालूमात रखती हैं और सीखना चाह रहीं हैं। तो मै जरूर कोशिश करुँगी।

धन्यवाद चारु,आपके साथ बहुत रोचक संवाद हुआ। और हम अपने संवाद को आगे बढाने के लिए अगले सत्र में मिलेंगे।

डॉ. कश्यपी: इस प्रदर्शन वीडियो में हमने देखा कि किस प्रकार से विद्यालय प्रमुख एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में अध्यापक को अकादमिक सहयोग प्रदान करती हैं। विद्यालय प्रमुख, बहुत ही कुशलतापूर्व, अध्यापक से प्रश्न पूछती भी हैं, न कि उन्हें बने बनाए उत्तर देती हैं। वे भी इस तरह के प्रश्न जो अध्यापक को आने वाली समस्याओं से स्वयं जूझने को विवश करते हैं जिससे कि वह उनका हल स्वयं खोज पाए। इस गतिविधि में आपने देखा कि विद्यालय प्रमुख कुछ सुझाव भी देती हैं परंतु महत्वपूर्ण बात यह है कि पूरे संवाद में विद्यालय प्रमुख, अध्यापक को एक स्वतंत्र एवं समालोचनात्मक चिंतन के लिए प्रेरित करती हैं जिससे कि अध्यापक अपने व्यवसायिक विकास का स्वामित्व स्वयं कर सके। देखा जाए तो, सहयोग, अध्यापकों का प्रशिक्षण एवं सलाह और

यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्रों के लिए अधिगम स्तर व शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएं बेहतर हों, ये सभी अकादमिक नेतृत्व के अहम घटक माने जाते हैं।

छात्र अधिगम हेतु अकादमिक नेतृत्व (Text)_(13_20_Academic leadership for Improving Student Learning)

विद्यालय प्रमुख की बहुत सारी भूमिकाएं और ज़िम्मेदारियाँ होती हैं उनमें सबसे महत्वपूर्ण है छात्रों को गुणवत्तापरक एवं अर्थपूर्ण शिक्षा प्रदान करना।छात्रों के लिए ये बहुआयामी अनुभव बहुत सारे मुद्दों से गूंथे होते है जैसे -विद्यालय में सुरक्षित वातावरण प्रदान करना। व्यक्तिगत-समाजिक गुणों का विकास छात्रों की कुशलता, छात्रों के बीच स्वतंत्र एवं सहयोगात्मक विचारों को प्रोत्साहित करना इत्यादि। परंतु इन सबसे महत्वपूर्ण है छात्रों की सीखने की क्षमता और शिक्षण संबंधी परिणामों में बढ़ोत्तरी करना। अकादमिक नेतृत्व एक विस्तृत क्षेत्र है। जो की विद्यालय प्रमुख से बहुत सारी विशेज्ञताओं की मांग करता है। इस क्षेत्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को बेहतर बनाना एवं छात्र अधिगम को सुनिश्चित करना। नीचे दिए चित्र में अकादमिक नेतृत्व को शिक्षा की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी के साथ साथ छात्रों के अधिगम पर केंद्रित किया गया। इसके साथ ही अकादमिक नेतृत्वकर्ता को इन दो विधाओं में पारंगत होना आवश्यक है।

1. अकादमिक तथ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी संकल्पनाएं एवं अनुप्रयोग
2. अकादमिक पर्यवेक्षण सम्बन्धी संकल्पनाएं एवं अनुप्रयोग

गतिविधि 4: अकादमिक नेतृत्व को समर्थ करने के लिए नए क्षेत्रों की खोज/अन्वेषण करे - अकादमिक नेतृत्व(H5P - Image Hotspot) (13_21_Explore areas of Academic leadership for Improving Student Learning)
DIKSHA Link: https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_3131579768793661441188 6

अकादमिक नेतृत्व

गतिविधि 4
http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1318
http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1428

do_31315797687936614411886

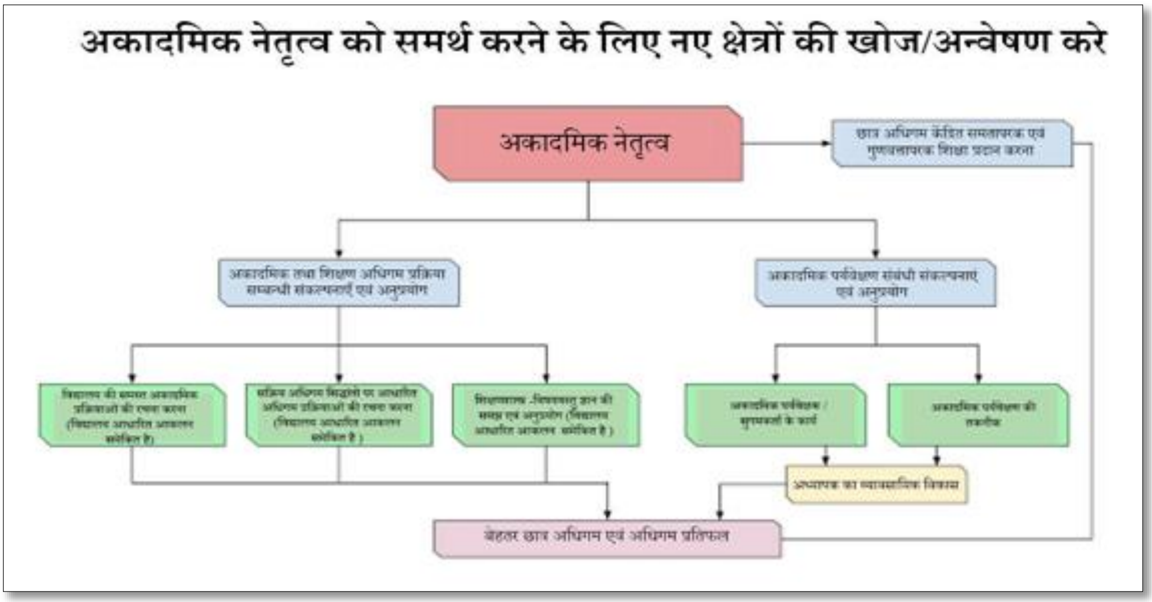

1. अकादमिक नेतृत्व

अकादमिक नेतृत्व विशेषज्ञताओं का विस्तृत क्षेत्र है जो किसी विद्यालय में छात्रों के गुणवत्तापरक शिक्षा का अनुभव और अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए विद्यालय प्रमुख में होना अत्यंत आवश्यक है। इस व्यापक क्षेत्र के अंतर्गत अनेक विषय निम्नलिखित हैं।

1. छात्रों का स्वतंत्र एवं सहयोगी सोच के विकास के साथ शिक्षण सम्बन्धी परिणामों को बेहतर बनाना
2. विद्यालय में अधिगम संस्कृति का निर्माण
3. अध्यापकों का शैक्षिक सहयोग एवं उनका प्रशिक्षण तथा सलाह के साथ ही उनका सहयोगात्मक अनुश्रवण करना

ये सब अकादमिक नेतृत्व के विभिन्न पक्ष हैं। इन सभी माध्यमों से एक नेतृत्वकर्ता विद्यालय की गुणवत्ता के मापदंडों को ऊंचा कर सकता है।

अकादमिक नेतृत्व के दो प्रमुख अवयवों को इस तरह समझा जा सकता है।

- अकादमिक तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी संकल्पनाएं एवं अनुप्रयोग जो विद्यालय में सीखने सिखाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाएं, जिससे छात्र सीखें और अपनी दक्षताएं बढ़ा सके।
- अकादमिक पर्यवेक्षण सम्बन्धी संकल्पनाएं एवं अनुप्रयोग को समझना जिससे अध्यापकों की दक्षताओं में वृद्धि हो जो छात्रों के अधिगम स्तर की बढ़ोत्तरी में सहायक हो।

2. छात्र अधिगम केंद्रित गुणवत्तापरक शिक्षा

राष्ट्रीय स्तर पर यह मुख्य चर्चा का विषय है। स्पष्ट तौर पर इसे इस तरह समझा जाए कि विद्यालयी शिक्षा का प्रयोजन गुणवत्तापरक, आयामों एवं शिक्षण सम्बन्धी परिणामों पर आधारित हो। यही 'समग्र शिक्षा का भी स्पष्ट उद्देश्य है।

3. अकादमिक तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया सम्बन्धी संकल्पनाएं एवं अनुप्रयोग

एक विद्यालय प्रमुख के तौर पर अधिगम प्रक्रिया की सही रूपरेखा बनाने की जानकारी होना आवश्यक है। विद्यालय में जहां भी आवश्यकता हो वहां विद्यालय प्रमुख द्वारा व्यक्तिगत अथवा सहयोगात्मक शिक्षण प्राप्त हो सके। यह अवधारणा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को तीन तरह से जांचती है:

1. विद्यालय की समस्त अकादमिक प्रक्रियाओं की रूप रेखा बनाना।
2. अधिगम प्रक्रिया, सक्रिय अधिगम पद्धत्ति पर आधारित हो
3. विद्यालय नेतृत्व एवं अध्यापक नेतृत्व का शिक्षण शास्त्र – विषयवस्तु ज्ञान।

4. विद्यालय की समस्त अकादमिक प्रक्रियाओं की रूपरेखा बनाना

विद्यालय नेतृत्व द्वारा शिक्षण अधिगम पर चर्चा अधिकतर कक्षा कक्ष की प्रक्रियाओं तक सीमित रह जाती है जबकि, सिर्फ कक्षा कक्ष की प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित कर हम सही परिणाम नहीं प्राप्त कर सकते। इसके लिए जब तक अध्यापक एवं छात्र दोनों के अकादमिक विकास की रूपरेखा नहीं बनती तब तक सर्वांगीण विकास संभव नहीं हो पता। आपको विद्यालय में बच्चों, अभिभावकों, अध्यापकों एवं ब्लॉक समन्वयकों के लिए ऐसे अवसर प्रदान करने हैं जहाँ वे अपनी राय, नए विचार, अपेक्षाएं एवं बेहतरीन अनुभव आपसे साझा कर पाएं।

आप इससे अवश्य सहमत होंगे कि सिर्फ कक्षा शिक्षण पर केंद्रित होने से विद्यालय का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है, एक प्रभावशाली विद्यालय दल (अध्यापक, गैर शैक्षणिक कर्मचारी, विद्यालय प्रमुख, विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य) जब साझा विज़न से विद्यालय हित में काम करते हैं तब इसका अधिक सकारात्मक असर पड़ता है तथा विद्यालय एवं छात्रों का समुचित विकास होता है। उदाहरण के लिए, बच्चों के पाठ्यक्रम के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए जब समुदाय के संसाधनों का समुचित प्रयोग किया जाता है तब बच्चों को बेहतर अधिगम के अवसर प्राप्त होते हैं।

नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना छात्रों और अध्यापकों को नए एवं रचनात्मक तरीके से सोचने, प्रयोग करने और सीखने को बढ़ावा देगा। बच्चों के सीखने की प्रगति के अनुसार आकलन की रणनीति बनाना भी शैक्षणिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं।

अतः अकादमिक नेतृत्व कक्षा कक्ष में शिक्षण शास्त्र के सिद्धांतों की प्रक्रिया पर कार्य करने से पहले विद्यालय में अधिगम का वातावरण तैयार करने पर ध्यान देता है।

5. सक्रिय अधिगम के सिद्धांत पर अधिगम प्रक्रिया की रूपरेखा बनाना।

किस तरह से आप सीखने का वातावरण तैयार करेंगे जहाँ बच्चे सुरक्षित महसूस करें तथा उनके मन में तर्कशीलता और जिज्ञासा जागृत हो सके? इसका सही उत्तर यह है कि बच्चों को रटंत शिक्षा के बजाय उनमें सीखने को प्रोत्साहित करना जिसमें बच्चे सीखने में प्रसन्नता महसूस कर सकें। इस तरह सीखने की प्रक्रिया में बच्चे सिर्फ भाषण नहीं सुनते बल्कि वे उसमें सोचने के स्तर तक संलिप्त होते हैं। यही बाल केंद्रित शिक्षण शास्त्र का मूल है। सक्रिय अधिगम बाल केन्द्रित शिक्षण का अभिन्न अंग है।

सक्रिय अधिगम के सिद्धांत विद्यालय प्रमुख को ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति प्रदान करते हैं जिससे वह अपने विद्यालय में अधिगम वातावरण का निर्माण कर सकता है। इस तरह के वातावरण में बच्चे ज्ञान ही नहीं प्राप्त करते बल्कि ज्ञान का प्रयोग करना भी सीखते हैं। बच्चा अपनी पाठ्य पुस्तकों को बाहरी दुनिया से जोड़कर ही देख पता

है जिसके साथ उसमें अन्य दक्षताएं भी विकसित होती हैं, जैसा कि गहरी समझ, संकल्पनाओं का अनुप्रयोग, तर्क एवं विश्लेषण पूर्ण चिंतन, सहयोगात्मक अधिगम आदि। सक्रिय अधिगम में शिक्षक की भूमिका सुगमकर्ता की होती है। सक्रिय अधिगम के सिद्धांत सामान्य शिक्षण सिद्धांत का हिस्सा होते हैं जिसका तात्पर्य है कि वे सभी विषयों पर सामान्य रूप से लागू होते हैं। आकलन की रणनीति सक्रिय अधिगम का अभिन्न अंग होती है। यहां पर विद्यालय नेतृत्वकर्ता अपने साथी अध्यापकों को अलग अलग प्रमाणों पर आधारित रणनीति के साथ शिक्षण कार्य के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सीखने वाले के ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति का आकलन हो सके। आप वेब रिसोर्स में सक्रिय अधिगम पर आधारित "यंग हिस्टोरियन" नाम का वीडियो देख सकते हैं।

6. शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु की समझ एवं उसका अनुप्रयोग

अध्यापक नेतृत्वकर्ता को अपने विषय (जिसका वह शिक्षण करता है) के पाठ्य वस्तु और विषय से संबंधित शिक्षण शास्त्र के सिद्धांत दोनों का ज्ञान होता है। शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु की अवधारणा, इन दोनों हिस्सों का समावेशन हैं। लेकिन यह अवधारणा बस यहाँ तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इससे भी अधिक विस्तृत है। इसमे अधिगमकर्ता की विशेषताएं, उसकी पृष्ठभूमि, रुचि, प्रेरणा का स्तर और सिखाने के तरीके की गहरी समझ भी शामिल है।

इसके साथ साथ अध्यापक यह भी समझने की कोशिश करता है कि बच्चे रोजमर्रा के जीवन से सम्बंधित क्या समझ एवं नासमझी लेकर विद्यालय आते हैं। यदि कोई अध्यापक अपनी कक्षा में पढ़ाये जा रहे विषयों के सन्दर्भ को छात्रों के जीवन के सन्दर्भो से जोड़कर कुशलता पूर्वक समझा पाता है तब यह कहा जायेगा कि उसे शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु की समझ है। शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु ज्ञान की अवधारणा के अंतर्गत आकलन एवं दोनों शामिल हैं। नेतृत्व के संदर्भ में अध्यापक को अपने विषय के शिक्षण सिद्धांतों की सम्पूर्ण जानकारी होनी आवश्यक है। परन्तु विद्यालय प्रमुख की भूमिका इससे कहीं अधिक है। विद्यालय नेतृत्वकर्ता को एक अध्यापक के रूप में अपने विषय के शिक्षण शास्त्र के सिद्धांतों का विशद ज्ञान होना अनिवार्य है। साथ ही साथ अन्य विषयों के शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु ज्ञान की भी जानकारी विद्यालय प्रमुख को अन्य साथी अध्यापकों के साथ मिलकर प्रभावशाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की रूप रेखा बनाने में मदद करेगी।

शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु की समझ एवं यह विभिन्न विषयों में कैसे प्रयोग होगा, इससे कक्षाओं को को अधिक रोचक और उद्देश्य पूर्ण बनाने में मदद करेगी। इस अवधारणा के सही क्रियान्वयन के द्वारा क्षमताओं एवं उसके सीखने की प्रक्रिया को दिशा मिलती है। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए निष्ठा पर उपलब्ध विज्ञान, गणित, सामाजिक विषय एवं भाषा संबंधी संसाधनों को देखें।

अवधारणा पर गहरी समझ बनाने के लिए वेब रिसोर्स पैडागोजिकल-कंटेंट नौलेज का वीडियो देखें।

7. अकादमिक पर्यवेक्षण संबंधी संकल्पनाएं एवं अनुप्रयोग

विद्यालय में अकादमिक पर्यवेक्षण निरन्तर विकास की प्रक्रिया है जो अध्यापकों विद्यालय प्रमुख द्वारा विश्वसनीय सहयोग के साथ उत्साहित करती है जिससे वे स्वयं एवं सामूहिक रूप से विकसित होते हैं। विद्यालय प्रमुख एक पर्यवेक्षक/ सुगमकर्ता के रूप में सीखने के निश्चित लक्ष्य के तहत अध्यापक को उसके व्यावसायिक विकास के लिए सुविधा प्रदान करता है।
शैक्षिक अनुश्रवण शिक्षक के व्यावसायिक विकास में योगदान देता हैं। अध्यापकों का निरंतर व्यावसायिक विकास छात्रों के अधिगम को बेहतर बनाता है। अकादमिक पर्यवेक्षण तात्पर्य है:

- अध्यापकों को शैक्षणिक सहयोग प्रदान करना।
- साथी सहकर्मियों के साथ शैक्षिक वाद विवाद।
- कक्षा निरीक्षण के पश्चात् अध्यापकों वार्तालाप द्वारा उनके व्यावसायिक क्षमताओं का निर्माण
- चिंतनशीलता का अभ्यास करने में अध्यापकों की सहायता करना।
- अध्यापकों को आंन-साईट सहयोग प्रदान करना।
- अध्यापकों के साथ विद्यालय के शैक्षिक विकास की समीक्षा करना।

8. एक अकादमिक पर्यवेक्षक के कार्य

1. योजना एवं सुनियोजन - पर्यवेक्षक की मूल भूमिका है अध्यापकों के साथ मिलकर सहयोगात्मक रूप से उनके दैनिक एवं साप्ताहिक कार्यों की योजना बनाना।
2. अनुकूल अधिगम वातावरण का प्रावधान - एक पर्यवेक्षक विद्यालय का भौतिक वातावरण तैयार करने और सही जगह पर भौतिक संसाधनों की व्यवस्था करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें बैठने की उपयुक्त जगह, हवा का आना-जाना, प्रकाश व्यवस्था, पानी की सुविधा आदि शामिल हैं। इसके अलावा, अध्यापकों के साथ पर्यवेक्षक भी शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रावधान करने में सहयोग देता है।
3. नेतृत्व एवं मार्गदर्शन - एक पर्यवेक्षक अध्यापकों का नेतृत्वकर्ता होता है। वह अध्यापकों को अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रभावित करता है। साथ ही साथ अध्यापकों के लिए प्राप्त करने योग्य लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को निर्धारित कर उनका मार्गदर्शन भी करता है।
4. प्रेरणा - एक पर्यवेक्षक शिक्षकों को प्रेरित करता है।
5. नई शिक्षण पद्धतियों से परिचय कराना- पर्यवेक्षक को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के नवीनतम ज्ञान और कौशल के बारे में जानकारी और उन्हें लगातार शिक्षकों के साथ साझा करना आवश्यक है। इससे अध्यापकों का मनोबल बढ़ेगा, काम करने की परिस्थितियां संतोषजनक होंगी, मानवीय संबंध सबल बनेंगे एवं छात्र अधिगम में सुधार होगा।
6. जांचना- प्रगति की जांच करना, पर्यवेक्षक द्वारा निष्पादित एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें सहयोगात्मक रूप से निर्धारित लक्ष्यों के साथ अध्यापकों के वास्तविक प्रदर्शन की जांच करना एवं बच्चों के अधिगम की प्रगति का आकलन करना शामिल है।

9. अकादमिक पर्यवेक्षण की तकनीक

एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता के पास विद्यालय में अकादमिक पर्यवेक्षण हेतु अपेक्षित ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति के साथ साथ अकादमिक पर्यवेक्षण की संकल्पना के ज्ञान की समझ होनी है। इसके साथ ही आपको स्वयं के कौशल विकास की आवश्यकता होगी जो अध्यापकों के शैक्षिक सहयोग में कारगर होगा। विद्यालय नेतृत्त्वकर्ता (अकादमिक पर्यवेक्षण) एवं कक्षा अध्यापक के बीच अर्थपूर्ण संवाद का सृजन शैक्षिक पर्यवेक्षण का सबसे आवश्यक कौशल है, जो पर्यवेक्षण एवं अध्यापक दोनों के विकास पर केंद्रित होता है।

इस तरह के संवाद के केंद्र में कुछ ऐसे मुद्दे होंगे। कक्षा अवलोकन, कक्षा में अध्यापक द्वारा चुनौतियों का सामना, नए तरीके से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं का सृजन। अकादमिक पर्यवेक्षण कुशलता पूर्वक ऐसे अवसरों का निर्माण करता है जिनके द्वारा अध्यापक अपनी चिंता व्यक्त कर सकें, कक्षा शिक्षण प्रक्रिया पर विचार कर सकें तथा छात्रों के अधिगम उससे जुड़े हुए प्रमाणों पर खुल कर चर्चा कर सकें। अधिगम के संवाद के समय अकादमिक पर्यवेक्षण का यह दायित्व है कि वह अध्यापक से ऐसे प्रश्न पूछे जो विचार पूर्ण तथा चिंतनशील हों, इससे अध्यापक को बोलने एवं स्वयं को व्यक्त करने के साथ समस्याओं के बेहतर हल निकाल सकने में मदद मिलेगी। परम्परागत तरीके से निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता अध्यापक को क्या करना है और क्या नहीं करना यह बताता है, जब कि

अधिगम संवाद के समय विद्यालय नेतृत्त्वकर्ता अध्यापक से ऐसे प्रश्न पूछता है जिससे कि अध्यापक ज्यादा संवाद करें क्योंकि इस पूरी प्रक्रिया का उद्देश्य अध्यापक के ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति को विकसित कर उसके कक्षा शिक्षण को बेहतर बनाना है। अकादमिक पर्यवेक्षण एक प्रशिक्षक एवं विश्वसनीय सहयोगी की भूमिका में होता है। अकादमिक पर्यवेक्षण में निम्नांकित अभिवृत्ति पाई जाती हैं:

- सहकर्मियों एवं साथी अध्यापकों पर भरोसा।
- ऐसा विश्वास रखना की नेतृत्व कर्ता एवं शिक्षक दोनों ही व्यावसायिक विकास में परस्पर सहयोगी हैं।
- अध्यापकों के लिए निष्पक्ष और भयमुक्त वातावरण का निर्माण।

10. अध्यापक का व्यावसायिक विकास

अकादमिक पर्यवेक्षण अध्यापक एवं पर्यवेक्षण दोनों का व्यावसायिक विकास करता है। निरंतर शैक्षिक सहयोग से अध्यापकों के बीच अधिगम-संवाद में संलग्नता एवं, दल अधिगम को बढ़ावा देने से प्रतिदिन अध्यापकों के ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति का पुनर्नवीनीकरण होता रहता है। परिणामस्वरूप अध्यापक अधिगम अनुकूल वातावरण सृजित करते हैं, चिंतनशील अभ्यासकर्ता के तौर पर विकसित होते हैं, अपने अभ्यासों को साझा करते हैं, उद्देश्य पूर्ण आकलन की रूप रेखा बनाते हैं विद्यालय में छात्रों के अधिगम (साक्ष्य सहित)प्रक्रिया को साझा करते हैं। इन सभी माध्यमों से छात्रों के सीखने पर बेहद सकारात्मक असर पड़ता है।

11. छात्रों के अधिगम और शिक्षण सम्बन्धी परिणामों में सुधार

छात्र अधिगम के विस्तृत में व्यक्तिगत-सामाजिक गुणों के विकास के साथ साथ सामाजिक ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति आती है। अकादमिक नेतृत्वकर्ता की जिम्मेदारी है कि विद्यालय का हर बच्चा सीखे तथा अपेक्षित शिक्षण सम्बन्धी परिणाम प्राप्त करे। छात्रों को अर्थपूर्ण अधिगम अवसर देने के लक्ष्य को करना तभी सम्भव है जब अकादमिक नेतृत्वकर्ता विद्यालय के सभी अध्यापकों को अकादमिक सहयोग प्रदान करेगा। अकादमिक नेतृत्व के क्रियान्वयन से विद्यालय प्रमुख छात्र अधिगम की बेहतरी में अपना योगदान देते हैं जिससे की छात्रों के शिक्षण संबंधी परिणाम सुनिश्चित होते है

गतिविधि 5: निष्क्रिय एवं सक्रिय अधिगम (H5P - Image Hotspot) (13_22_ Passive Learning and Active Learning)

नीचे लिखे कथन को निष्क्रिय और सक्रिय वाक्य में वर्गीकृत करें।

DIKSHA Link:

https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_31315864156155904012068

http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?=h5p_embed&=1320

http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1430

do_31315864156155904012068

निष्क्रिय अधिगम	सक्रिय अधिगम
अध्यापक बच्चों एवं अधिगम से जुड़े सामान्य सिद्धांतों को ही शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग में लाते हैं।	अध्यापक उन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों को समझते हैं जिनमें शिक्षार्थी पलते व विकसित होते हैं। वे शिक्षार्थियों को सैद्धांतिक जानकारी के साथ-साथ जीवन की वास्तविक स्थितियों से भी परिचित कराते हैं।
शिक्षार्थी के लिए ज्ञान को 'बाहरी' एवं ऐसा माना जाता है जिसे प्राप्त किया जाना है।	समीक्षात्मक विचार कौशलों के माध्यम से शिक्षण, अधिगम, व्यक्तिगत व सामाजिक अनुभवों के साझा संदर्भों में ज्ञान को अर्जित किया जाता है।
चिन्तन मनन व स्व-अध्ययन के कम अवसर।	शिक्षक शिक्षार्थियों को गहन विचार-विमर्श व चिंतन संलग्न रखते हैं। शिक्षार्थियों को स्व-अध्ययन और समीक्षात्मक विचार कौशलों के विकास के लिए मुद्दों को समझने एवं पहचानने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षार्थी अपने द्वारा किये गए अवलोकन, स्व-चिंतन जिसमें विवादों का भी उल्लेख हो, इन सभी विषयों पर चिंतनयुक्त लेख लिखते हैं।
शिक्षार्थी दिए गए कार्यों, कक्षा में होने वाली परीक्षाओं, क्षेत्र कार्यों एवं शिक्षण अभ्यासों पर व्यक्तिगत रूप से कार्य करते हैं।	शिक्षार्थियों को दल में काम करने, एक-दूसरे के साथ बातचीत करने और विभिन्न तरह के विषयों क्षेत्रों पर प्रोजेक्ट्स करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सामूहिक पस्तुतियों को प्रोत्साहित किया जाता है।
सामाजिक वास्तविकताओं, शिक्षार्थी और अधिगम प्रक्रिया के बारे में छात्रों की मान्यताओं का निराकरण करने के लिए कोई 'स्थान' नहीं होता।	शिक्षार्थियों को समाज में अपनी स्थिति और अपनी मान्यताओं का पता लगाने व परखने के लिए कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में स्थान दिया जाता है।
शिक्षार्थियों की विषय ज्ञान की अवधारणा को जानने के लिए कोई स्थान नहीं होता।	ज्ञानात्मक अवधारणाओं को परखने, जानने एवं चुनौती देने हेतु पर्याप्त अवसर।
रट्टा प्रणाली को प्रोत्साहित करना।	रट्टा प्रणाली को हतोत्साहित करना, शिक्षण अधिगम को एक आनंददायी व सहभागी गतिविधि बनाना, बाल-केंद्रित, क्रियाकलाप-आधारित, सहभागी अधिगम अनुभवों जैसे, नाटक, प्रोजेक्ट, विचार-विमर्श, संवाद, अवलोकन, भ्रमण आदि को सुनियोजित करना और सृजनात्मक कार्यों के साथ शिक्षण अधिगम को एकीकृत करना।
मूल्य आधारित शिक्षा की ओर न ले जाना।	सामाजिक पुन: निर्माण के लिए जीवन के लोकतांत्रिक तरीकों, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, धर्म निरपेक्षता एवं उत्साह को बढ़ावा देना।

स्रोत: NCFTE (2009): http://ncteindia.org/ncte_new/pdf/NCFTE_2010.pdf

गतिविधि के लिए प्रश्न

एक विद्यालय/अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में दी गयी गतिविधि का अभ्यास करें जिससे आपको निष्क्रिय एवं सक्रिय अधिगम के सिद्धांत में अंतर को समझने में सहायता मिलेगी।

इस समझ से आपको छात्रों के सक्रिय अधिगम के अवसर सृजित करने में मदद मिलेगी। फलस्वरूप छात्रों की दक्षताओं का निर्माण होगा साथ साथ उनमें व्यक्तिगत-सामाजिक गुणों का विकास होगा।

<u>अतिरिक्त पाठ : अधिगम प्रतिफल एवं विद्यालय आधारित आकलन</u> (Text) (13_23_ Learning Outcomes and School Based Assessment)

क) सीखने के प्रतिफल

सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम) क्या हैं?

रा.शै.अ.प्र.प. ने सीखने के प्रतिफल को विकसित किया है जो पठन सामग्री को रटकर याद करने पर आधारित मूल्यांकन से दूर हटाने के लिए बनाया गया है। योग्यता (सीखने के प्रतिफल) आधारित मूल्यांकन पर ज़ोर देकर, शिक्षकों और पूरी व्यवस्था को यह समझने में मदद की गयी है की बच्चे ज्ञान, कौशल और सामाजिक-व्यक्तिगत गुणों और दृष्टिकोणों में परिवर्तन के मामले में वर्ष के दौरान एक विशेष कक्षा में क्या हासिल करेंगे। सीखने के प्रतिफल ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण ऐसे कथन हैं जिन्हें बच्चों को एक विशेष कक्षा या पाठ्यक्रम के अंत तक प्राप्त करने की आवश्यकता है और यह अधिगम संवर्धन की उन शिक्षणशास्त्रीय विधियों से समर्पित हैं जिनका क्रियान्वयन शिक्षकों द्वारा करने की आवश्यकता है। ये कथन प्रक्रिया आधारित हैं और समग्र विकास के पैमाने पर बच्चे की प्रगति का आंकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक दोनों तरीके से जांच योग्य बिंदु प्रदान करते हैं। पर्यावरणीय अध्ययन के लिए सीखने के दो प्रतिफल नीचे दिए गए हैं-

- विद्यार्थी विभिन्न आयु वर्ग के लोगों, जानवरों और पक्षियों में भोजन तथा पानी की आवश्यकता, भोजन और पानी की उपलब्धता तथा घर एवं आसपास के परिवेश में पानी के उपयोग का वर्णन करता है।
- विद्यार्थी मौखिक/लिखित/अन्य तरीकों से परिवार के सदस्यों की भूमिका, परिवार के प्रभावों (लक्षणों/विशेषताओं/आदतों/प्रथाओं) और एक साथ रहने की आवश्यकता का मौखिक/लिखित या किसी अन्य माध्यम से वर्णन करता है।

उपर्युक्त सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या जोड़े अथवा समूहों में काम करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं और उन्हें आस-पास के परिवेश का अवलोकन और अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है; उन्हें मौखिक/लिखित/चित्र/संकेतों में अपने अनुभव दर्ज़ एवं व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है। बच्चों को बड़ो के साथ चर्चा करने और विभिन्न स्थानों पर जाने, उनकी पसंद के विषय पर उनसे जानकारी एकत्र करने और निष्कर्षों पर समूहों में चर्चा करने की अनुमति देने की आवश्यकता है।

आरम्भिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल सभी बच्चों, जिसमें विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे (सी.डब्ल्यू.एस.एन.) और वंचित समूहों से सम्बंधित बच्चे भी सम्मिलित है, को प्रभावी रूप से अधिगम के अवसर प्रदान करने के लिए हैं। इन्हें विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्रों- पर्यावरण अध्ययन, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान और भाषा के लिए विकसित किया गया है। सीखने के प्रतिफल सभी बच्चों, जिनमे विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (सी.डब्ल्यू.एस.एन.) भी शामिल हैं, की शिक्षण शास्त्रीय प्रक्रियाओं और पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं से जुड़े हैं। वंचित समूहों से संबंधित बच्चों के प्रावधानों में निम्नलिखित शामिल हैं-

अधिगम प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करें और उन्हें अन्य बच्चों की तरह प्रगति करने में मदद करें। बच्चों की तुलना करने से बचें।

- व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यचर्या और सीखने के परिवेश में बदलाव करना।
- विभिन्न पठन क्षेत्रों में अनुकूलित गतिविधियों का प्रावधान।
- उम्र और सीखने के स्तरों के अनुरूप सुलभ पाठ और सामग्री।
- कक्षाओं का उपयुक्त प्रबंधन, जैसे- शोर, चकाचौंध आदि का प्रबंधन।

- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.), विडियो या डिजिटल स्वरुप का उपयोग करके अतिरिक्त सहायता का प्रावधान।
- गतिशीलता सहायक यंत्र (व्हील चेयर, बैसाखी, सफेद बेंत), श्रवण-सहायक, ऑप्टिकल या गैर-ऑप्टिकल सहायता, शैक्षिक सहायता (टेलर फ्रेम, एबेकस आदि)।
- अन्य बच्चों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की विशेषताओं और कमज़ोरियों के प्रति सवेंदनशील बनाना।
- आकलन के सफल समापन के लिए उपयुक्त विधि और अतिरिक्त समय का चयन करना।

घरेलू भाषा के लिए सम्मान और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश (जैसे- परम्पराएँ और रीतिगत प्रथाएँ आदि) से जुड़ाव।"
-----निष्ठा हेतु एनसीईआरटी कोर्स 1 पाठ्क्रम, शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण शास्त्र, अधिगम प्रतिफल एवं समावेशी शिक्षा से उद्धृत है।

अत: अधिगम (सीखने के) प्रतिफल कक्षा-वार प्रक्रिया आधारित छोटे लक्ष्य हैं जो "बच्चों के संपूर्ण विकास हेतु अपेक्षित समग्र अधिगम के अनुसार बच्चे की प्रगति का आकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक तरीके से मापने योग्य हैं।" शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे पाठ योजना तैयार करते समय "प्रासंगिक संसाधनों और उपयुक्त अधिगम प्रक्रियाओं" का उपयोग करें और "समावेशी कक्षा में विभिन्न शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुसार अधिगम की स्थिति/ अवसर प्रदान करने" के लिए प्रोत्साहित करें। हालांकि, अधिगम प्रतिफल जिनको एक कक्षा के लिए विषय-वार दर्शाया जाता है, उन्हें पृथक करके नहीं बल्कि बच्चे की समग्र समझ हेतु संपूर्ण रूप से समझा जा सकता है।

विद्यालय प्रमुख एन सी ई आर टी द्वारा तैयार प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिगम प्रतिफलों पर विस्तृत डॉक्यूमेंट http://ncert.nic.in/ प्राप्त कर सकते हैं। विषयवार अधिगम प्रतिफल पहले साझा किए गए मॉड्यूल्स की सूची में प्रदान किए गए हैं। प्रारंभिक स्तर के अधिगम प्रतिफलों के डॉक्यूमेंट में प्राथमिक स्तर पर विभिन्न भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू) में गणित, पर्यावरण अध्ययन, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के प्रत्येक कक्षा के अधिगम प्रतिफल उल्लेखित हैं। यह डॉक्यूमेंट सभी हितधारकों, विशेष रूप से माता-पिता/ अभिभावकों, शिक्षकों, एस एम सी और समुदाय के सदस्यों के लिए हैं।

आइए, विद्यालय आधारित आकलन के बारे में जानने की कोशिश करते हैं –
विद्यालय आधारित आकलन क्या है?
आकलन- क्या, क्यों और कैसे?

आकलन का मुख्य उद्देश्य बच्चों की सीखने की ज़रूरतों को समझने के लिए उन्हें अपनी दक्षता बढ़ाने में सहायता देना है और यदि सीखने में यदि कोई परेशानी है तो उसे दूर करने लिए उसकी मदद करना है। आकलन के 'क्यों, क्या और कैसे' को समझने के लिए, हम इस पर एक नज़र डालते हैं-
आकलन के मापदंड क्या हैं?
इससे कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

ये उप-खंड मापदंड पर विस्तृत होते हैं, यानी सीखने के प्रतिफल, आकलन की मुख्य विशेषताएँ और विवरण के साथ इसका उद्देश्य है की कक्षा और विद्यालय आधारित आकलन रणनीतियों का उपयोग करके बच्चों के सीखने और विकास का निरीक्षण कैसे कर सकते हैं।

सीखने के प्रतिफल- आकलन के मानदंड

अधिगम आकलन में न केवल यह समझने की आवश्यकता है कि किस प्रकार की सीखने की इच्छा है, बल्कि इसके मानदंड को भी समझना ज़रूरी है, जिसके बारे में आकलन किया जा सकता है। अधिकतम वृहद् या विद्यालय आधारित आकलन करने वाले हितधारक इसके बारे में स्पष्ट नहीं होते हैं क्योंकि शिक्षक पाठ्यपुस्तकों को ही पूर्ण पाठ्यक्रम मानते हैं और पाठंत अभ्यास में दिए गये प्रश्नों का उपयोग करके बच्चों का आकलन करते हैं। जबकि परीक्षा और उपलब्धि सर्वेक्षण बिना किसी स्पष्ट रूप के बहुविकल्पीय प्रश्न का उपयोग करते हैं, दक्षताओं के बारे में तर्क पूर्ण आकलन किये बिना और यह जाने बिना की उनमे से प्रत्येक के पीछे की सीख क्या है। प्रत्येक कक्षा के लिए विषयवार सीखने के प्रतिफल, न केवल आकलन के मानदंड, जिला/राज्य/राष्ट्रिय स्तर पर, विभिन्न हितधारकों को सूचना तो देते हैं, इसके साथ ही विद्यालय स्तर पर उन शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों/ सरंक्षकों, विद्यालय प्रबंधन समिति (एस एम सी) सदस्य, गुणवत्ता शिक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में अपने प्रयासों को निर्देशित करने के अलावा ज़िम्मेदार और सतर्क होने के लिए पदाधिकारियों को सक्षम करते हैं। सीखने के प्रतिफल को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, जो अलग-अलग क्षेत्रों में अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए विभिन्न हितधारकों की ज़िम्मेदारी और जवाबदेही को निर्देशित और सुनिश्चित कर सकते हैं।

ख) आकलन का उद्देश्य सीखने के लिए आकलन

आकलन, शिक्षण अधिगम का अभिन्न अंग है और शिक्षण अधिगम के दौरान लगातार होता है। समग्र और पूर्वाग्रहों या विकृति से मुक्त होने के लिए, इसे कई सबूतों पर आधारित होने की आवश्यकता होती है, जिसे सीखने के विभिन्न पहलुओं पर बच्चे को कक्षा के अन्दर और बाहर दोनों गतिविधियों में भाग लेने के लिए अलग-अलग स्त्रोतों से जानकारी एकत्रित करने की आवश्यकता होती है, यानी ज्ञान, निष्पादन, कौशल, रुचियाँ, दृष्टिकोण और अभिप्रेरणा। यह शिक्षकों को न केवल प्रत्येक बच्चे के सीखने में आ रही परेशानी को समझने में मदद करता है, बल्कि विद्यार्थियों की आवश्यकता और सीखने की शैली के अनुसार उनके शिक्षण अधिगम को विचार, समीक्षा और संशोधित करने में भी मदद करता है। इसमें विद्यार्थियों को शिक्षण सीखने की प्रक्रिया की योजना, हस्तांतरण और आकलन में भागीदार के रूप में शामिल किया गया है और इस प्रकार इसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा प्रतिक्रिया देना और प्राप्त करना दोनों शामिल है।

आकलन ही अधिगम है

इसके लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान अपने स्वयं के कार्यों का गंभीर रूप से आकलन, विचार और विश्लेषण करने के लिए विद्यार्थियों को अवसर और स्थान प्रदान करना है। इसके साथ उनके दक्षता और सीखने में आ रही परेशानी की पहचान करना आवश्यक है। उन्हें स्वयं का आकलन करने और सहकर्मी और समूह के काम पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। सीखने के रूप में आकलन बच्चे के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और आजीवन सीखने की क्षमताओं को विकसित करने में मदद करता है। यह शिक्षण अधिगम के दौरान भी होता है।

सीखने का आकलन

इसका उपयोग पहचान किये गये पाठ्यक्रम और उद्देश्यों के आधार पर मानदंड (प्रक्रिया कौशल/सीखने के संकेतक और सीखने के प्रतिफल) के अनुसार विद्यार्थियों के सीखने को मानक करने के लिए किया जाता है। विद्यार्थी के सीखने के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं पर अलग-अलग विषय क्षेत्रों में निष्पादन सहित, कौशल, रुचियां, दृष्टिकोण और समग्र तरीके से प्रेरणा, पाठ्यचर्या और पाठ्यसहगामी क्षेत्रों में अलगाव किए बिना आकलन किया जाता है। शिक्षक व्यक्तिगत/ समूह/ स्वयं या सहकर्मी

आकलन की जानकारी का उपयोग करके, एकत्रित किये गए प्रमाणों के आधार पर सीखने की प्रक्रियाओं पर विद्यार्थियों की प्रगति की रिपोर्ट बनातें हैं। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक विवरणिका को बनाये रखा जा सकता है जिसका उपयोग उसके पिछले प्रदर्शन की तुलना में बच्चे की प्रगति को संकलित करने के लिए किया जा सकता है। शिक्षक प्रत्येक बच्चे की सीखने की प्रगति की निगरानी करने के लिए उसकी दैनिकी/कार्यपंजी/ बच्चे की पुस्तिकाओं पर लिखी गयी टिप्पणियाँ/कार्यपत्रकों/परियोजनाओं आदि को दर्ज कर सकते है। बच्चों को उनके सीखने और प्रगति में सुधार करने में मदद करने के लिए इसका सार्थक उपयोग करने की आवश्यकता है।"

<u>अतिरिक्त पाठ: अकादमिक पर्यवेक्षण की तकनीकी</u> (Text) (13_24_ Additional Reading)

अकादमिक अनुश्रवण कैसे संचालित करें ?

1. पूछें- वर्णन करें-पूछें: प्रतिपुष्टि द्वारा बेहतर शिक्षण अभ्यास

पूछें-वर्णन करें-पूछें की तकनीक पर्यवेक्षक को आधिकारिक भूमिका से लोकतांत्रिक भूमिका की ओर ले जाती है जिसमें पर्यवेक्षक (विद्यालय प्रमुख) एवं अभ्यासकर्ता (शिक्षक) दोनों एक साथ सीखते हैं। भविष्य के लक्ष्यों और सुधार की योजना पर दोनों के बीच एक सामान्य सहमति होती है। यह पद्धिति पर्यवेक्षक एवं अभ्यासकर्ता के बीच के शैक्षणिक संबंध को तालमेल और विश्वास की दृढ़ता देती है और एक भयमुक्त वातावरण का निर्माण करती है। इस प्रक्रिया से अंततः अभ्यासकर्ता अपने शिक्षण अधिगम प्रयासों को बेहतर बना पता है। यह प्रक्रिया दो व्यक्तियों के बीच बात-चीत अथवा वार्तालाप के माध्यम से की जाती है। आप इस प्रक्रिया के बारे में निम्न वेब लिंक पर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं-
http://pslm.niepa.ac.in/pluginfile.php/554/mod_book/chapter/102/Ask-Describe-Ask%20model.pdf
(दृश्य-श्रव्य संसाधन, केस स्टडी और पठन संसाधन की सूची में भी संलग्न हैं)।

इस मॉडल के संक्षिप्त चरण नीचे दिए गए हैं। यह मॉडल, अकादमिक पर्यवेक्षक के द्वारा शिक्षक की कक्षा अवलोकन पश्चात्, पर्यवेक्षक और शिक्षक के बीच अधिगम वार्तालाप पर आधारित है:

1. शिक्षक से कक्षा के दौरान किये गए शिक्षण अभ्यास का आकलन करने के लिए पूछें?
   - शिक्षक ने शिक्षण अभ्यास के क्या लक्ष्य निर्धारित किये थे?
   - कक्षा में क्या अच्छा हुआ और क्या बेहतर हो सकता था?

इन प्रश्नों के माध्यम से दो व्यक्तियों (पर्यवेक्षक एवं अभ्यासकर्ता) के बीच संवाद की शुरुआत होती है। पर्यवेक्षक के द्वारा किये गए प्रश्न सुनिश्चित करते हैं कि अभ्यासकर्ता (शिक्षक) की बात पहले सुनी जाए। इससे शिक्षक में विश्वास पैदा होता है कि प्रश्नोत्तर के माध्यम से की जाने वाली प्रक्रिया उसके स्वयं के अधिगम और प्रगति के लिए ही है।

2. कक्षा अवलोकन के दौरान पर्यवेक्षक के रूप में आपने जो देखा उसका वर्णन करें
   - कक्षा में आपने जो अवलोकन किया उसके बारे में शिक्षक को बताएं
   - शिक्षक के स्व- आकलन पर प्रतिपुष्टि दें
   - आपने जो देखा, उसका विवरण देने के लिए "मैंने देखा..." या "साक्ष्य के आधार पर मैंने यह पया कि..." जैसे वाक्याशों का प्रयोग करें।

इस बात-चीत के दौरान आलोचनात्मक भाषा के प्रयोग से बचें। इससे अभ्यासकर्ता के मन में पर्यवेक्षक के प्रति एक विश्वास बनेगा की वह कक्षा अवलोकन पर आलोचनात्मक प्रतिक्रिया न देकर वास्तविक कक्षा स्तिथि पर बिंदु साझा कर रहे हैं। बातचीत करने के इस तरीके से अभ्यासकर्ता स्वयं के अधिगम एवं प्राप्त प्रतिपुष्टि के द्वारा प्रगति पथ पर अग्रसर होते हैं।

3. अंत: में अभ्यासकर्ता से उसको अपने सुधार की नीतियों की समझ के बारे में पूछें
    - शिक्षक ने क्या सीखा है?
    - अगली बार शिक्षक, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में किस प्रकार से बदलाव लायेंगे (यदि बदलाव लाने की आवश्यकता है) अथवा नया क्या कर सकते हैं?
    - अगले चरणों की पहचान करें और सुधार हेतु समय समय पर अनुश्रवण करें।

2. लर्निंग राउंड

लर्निंग राउंड में शिक्षक और विद्यालय नेतृत्वकर्ता दोनों शामिल होते हैं जो एक दल के रूप में कक्षा अवलोकन के द्वारा शिक्षण प्रणालियों का अवलोकन करते हैं। इसका उद्देश्य विद्यालय या विद्यालयों में शिक्षण-अधिगम में प्रभावी व्यवस्थात्मक एवं गुणवत्तापूर्ण सुधार लाना है।

इस प्रक्रिया में अवलोकन, शिक्षण-अधिगम के किसी एक अथवा दो पहलुओं को केन्द्र बना कर किया जाता है। चिन्हित किये गये केंद्रीय क्षेत्र/क्षेत्रों को आमतौर पर समस्याग्रस्त होने के रूप में पहचाना जाता है जिसे विद्यालय प्रभावी ढ़ंग से संभाल पाने में कठिनाई महसूस करता है।
उदाहरण के लिए:

- किसी एक विषय में बच्चों के अधिगम संप्राप्ति में अंतर पाया जाना
- बच्चों की अधिगम आवश्यकताओं को प्रभावी ढ़ंग से पूरा नहीं किया जाना
- शिक्षकों द्वारा उच्च एवं निम्न क्रम के प्रश्नों का प्रयोग

सभी केन्द्रीय क्षेत्रों की पहचान कक्षा अवलोकन द्वारा होनी चाहिए। पर्यवेक्षकों (शिक्षकों और विद्यालय प्रमुखों) का दल चुने हुए विषय पर लगभग 30 मिनट का कक्षा अवलोकन कर सकता है। अपराह्न में निष्कर्षों के बारे में चर्चा की जाती है। पर्यवेक्षक वर्णनात्मक भाषा का उपयोग करते हैं ताकि वे चुने हुए विषय से संबंधित जो कुछ भी अवलोकन करते हैं उसकी एक साझा समझ का निर्माण कर सकें। वे इस निष्कर्ष का उपयोग स्वयं के अभ्यास या विद्यालय दोनों के शिक्षण-अधिगम में सुधार के लिए 'अगामी चरणों' का विकास करने के लिए कर सकते हैं।

विद्यालय स्टाफ या विद्यालय के बाहर का कोई पर्यवेक्षक नीचे दिए गए उद्देश्यों एवं भागीदारों के साथ लर्निंग राउंड्स की प्रक्रिया का उपयोग कर सकते हैं:

- स्वयं के व्यावसायिक अधिगम को विकसित करने के लिए लर्निंग राउंड्स का उपयोग करने वाले शिक्षकों का एक समूह
- छात्र अधिगम के सुधार के लिए लर्निंग राउंड्स का उपयोग करते हुए शिक्षकों और विद्यालय नेतृत्व कर्ताओं का एक समूह
- विद्यालय सुधार प्रक्रिया को सहयोग देने के लिए लर्निंग राउंड्स का उपयोग करते हुए विद्यालय के बाहर के विशेषज्ञों का एक समूह (जैसे व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता/ डी. आई .इ. टी./ एस. सी. ई. आर. टी. संकाय)
- किसी विद्यालय विशेष में लर्निंग राउंड में शामिल होने वाले एक से अधिक विद्यालय प्रमुखों का एक समूह

- लर्निंग राउंड्स प्रक्रिया के अंतर्गत हर कोई मिलजुलकर पूछते हुए सीखता है। यह अपेक्षित नहीं है कि हमेशा ही समूह किसी समस्या विशेष का समाधान करेगा, बल्कि यह अपेक्षा है कि पर्यवेक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के मुद्दों से निपटने के लिए अगले चरणों के बारे में एक स्पष्ट तस्वीर और नए विचारों के बारे में जानेंगे।

गतिविधि 6: स्वयं प्रयास करें (Text) (13_25_Try Yourself)

यह गतिविधि आपको एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में चिंतन करने में सहायक होगी जिससे की आप अध्यापकों के लिए अकादमिक पर्यवेक्षण की योजना बना पाएंगे। इसके द्वारा अधिगम वातावरण एवं सन्दर्भ विशिष्ट शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को बेहतर बनाया जा सकेगा। एक कार्य योजना तैयार करें।

अतिरिक्त गतिविधि (Text) (13_26_Additional Activity)

गतिविधि 1:अकादमिक पर्यवेक्षण पर एक नाटक लिखें

एक नाटकीय लेख लिखें। कैसे आप एक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में एक अध्यापक के साथ संवाद करेंगे?

गतिविधि 2: अकादमिक पर्यवेक्षक के रूप में आपकी भूमिका पर चिंतन

आपने अभी तक के अपने व्यावसायिक क्षेत्र में एक विद्यालय प्रमुख के रूप में अध्यापकों को कार्यस्थल पर कैसे सहयोग दिया है? कुछ उदाहरणों का उल्लेख कीजिए।समीक्षात्मक रूप से उन घटनाओं पर भी चिंतन कीजिये जिससे की अध्यापकों को सहयोग प्रदान करने की आपकी प्रक्रियाओं में मौजूदा कमियों का पता चल सके। आप भविष्य में उन कमियों को कैसे संबोधित करेंगे?

विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास

विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास (Video) (13_27_Developing Leaning Culture in Schools)
YouTube Link: https://www.youtube.com/watch?v=Ql3lM0JvyCo
DIKSHA Link: https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_31315810024303001611570

do_31315810024303001611570

विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास-वीडियो प्रतिलिपि (Text) (13_28_Developing Learning Culture in School_Transcript)

नमस्कार साथियों, अकादमिक नेतृत्व की अवधारणा और एक नेतृत्वकर्ता की अकादमिक भूमिकाओं पर विस्तृत चर्चा करने के पश्चात आइए डॉ कश्यपी से जानते हैं कि विद्यालय में अधिगम संस्कृति का निर्माण और उसका क्रियान्वयन कैसे किया जाए।

विद्यालय का मुख्य लक्ष्य क्या है? निः संदेह हम यह मानेंगे कि विद्यालय का मुख्य लक्ष्य सीखना और सिखाना है। यह सीखना सिखाना किसके लिए है? क्या यह विद्यार्थियों तक सीमित है, क्या यह शिक्षकों और समुदाय के लिए नहीं हो सकता? शायद हम सब इस बात को मानेंगे कि जब तक सिखाने वाला खुद नहीं सीखता तब तक सीखाना बेहद सीमित प्रक्रिया बन कर रह जाती है, इसलिए बात अगर सीखने की हो तो विद्यालय एक ऐसा स्थान बने जहां बच्चों के साथ शिक्षक, विद्यालय प्रमुख एवं समुदाय, सभी लगातार सीखते रहें। कभी स्वतंत्र रूप से और कभी सहयोगात्मक रूप से।

विद्यालय की अधिगम संस्कृति को एक ऐसे वातावरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो प्रगतिशील मानसिकता को बढ़ावा दे, अध्यापक, छात्रों एवं विद्यालय प्रमुखों को न सिर्फ पाठ्यपुस्तकों बल्कि अन्य स्त्रोतों से भी सीखने को प्ररित करे एवं एक दूसरे के साथ सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करे। और यही बनाता है एक विद्यालय का संस्कार या की अधिगम संस्कृति।

तो आइए, विद्यालय अधिगम संस्कृति को इस समझ के अनुसार परिभाषित करने की कोशिश करते हैं।
किसी भी विद्यालय को अधिगम संस्कृति आधारित विद्यालय तब कहा जा सकता है जब वहां निम्नलिखित वस्तुएँ देखने को मिले। जैसे

1. प्रगतिशील मानसिकता को बढ़ावा देना
2. निरंतर सीखते रहने के लिए एक दूसरे को प्रेरित करना
3. सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करना
4. निरंतर चिंतनशील रहने का स्वभाव बनाना
5. विद्यालय मासिक नियोजन में भी चिंतनशील गतिविधियों को बढ़ावा देना

तभी विद्यालय एक ऐसा गतिशील स्थान बनेगा जहां शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय प्रमुख और समुदाय निरंतर सीखते रहेंगे और जो सीखा है पुनः उसे नवीकृत भी करते रहेंगे। अब आप सभी के मन में होगा कि हम विद्यालय को अधिगम संस्कृति आधारित कैसे बनाएं?

विद्यालय में अधिगम संस्कृति निर्माण के बिंदु कुछ इस प्रकार से हैं:

1. विद्यालय की प्रत्येक इकाई यानी शिक्षक,विद्यार्थी,समुदाय सभी के लिए सीखने के अवसरों का सृजन करना।
2. विषय वस्तु एवं सीखने सिखाने के तकनीकी ज्ञान और कौशल में निरंतर अभिवृद्धि करना।
3. विद्यालय को अधिगम केन्द्रित संस्थान में बदलना।
4. चिंतनशील अभ्यासकर्ता बनना।
5. विद्यार्थियों के अधिगम को बेहतर बनाने के लिए दल अधिगम यानी एक दूसरे के साथ सीखने सिखाने के अवसरों का निर्माण करना।
6. नवाचारों का स्वागत करना।
7. व्यावसायिक प्रशिक्षण समूह का निर्माण प्रोत्साहन एवं विकास करना।

अब चारु, मेरी आपसे यह गुजारिश रहेगी इनमें से किन्ही दो पर आप विस्तृत चर्चा करें।
जी कश्यपी, अब मैं विद्यालय में अधिगम संस्कृति के विकास से सम्बन्धित दो प्रमुख मुद्दों को विस्तार से बताना चाहूंगी।

1- चिन्तनशील अभ्यासकर्ता बनना

विद्यालय प्रमुख के तौर पर आपको चिन्तनशील होना है और साथी अध्यापकों को भी इसका अभ्यासी बनाना है। चिंतनशीलता से यहां तात्पर्य, स्वयं के विकास के लिए विद्यालय प्रमुख तथा अध्यापकों द्वारा सतत स्वयं का मूल्यांकन कर स्वयं का व्यावसायिक विकास सुनिश्चित करना है।
चिंतनशीलता एक ऐसी तकनीक है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं के द्वारा किये गए कार्यों की बेहतर समीक्षा कर सकता है।कोई व्यक्ति जब स्वतंत्र रूप से अपने कार्यों और अपने विकास पर चिन्तन कर, उसे बेहतर बनाता है तब उसे चिंतनशील अभ्यासकर्ता कहा जाता है। स्वयं एवं अन्य अध्यापकों में चिंतनशीलता के अभ्यास का विकास भी एक विद्यालय प्रमुख की अहम भूमिकाओं में से एक है।

2- छात्रों के अधिगम को बेहतर बनाने के लिए दल अधिगम

दल अधिगम को विद्यालय मे कैसे प्रेरित किया जाए। किसी भी विद्यालय का शिक्षक संकाय एक दल की तरह होता है जो साथ मिलकर विद्यालय हित में कार्य करता है। स्टाफ मीटिंग विद्यालय में चलने वाली निरंतर प्रक्रिया है जिसका महीने में दो बार अथवा कम से कम एक बार तो अवश्य ही नियोजन होना चाहिए।

एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में स्टाफ मीटिंग के माध्यम से आप अकादमिक रूपांतरण के नेतृत्वकर्ता बन सकते हैं। स्टाफ मीटिंग में आप निम्नलिखित बातों पर विचार विमर्श कर सकते हैं :

पहला नवाचार, जिसे अध्यापक अपनी कक्षा में पठन पाठन प्रक्रियाओं में प्रयोग कर रहे हों।

दूसरा विद्यालय एवं कक्षा में प्रयोग होने वाली आकलन की प्रक्रिया।

तीसरा छात्रों के अधिगम सम्बन्धी परिणाम।

स्टाफ मीटिंग अध्यापकों के लिए सीखने का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर वे परस्पर अपने अनुभव बांटते हैं। स्टाफ मीटिंग में अध्यापक सीखने सिखाने से संबंधित चुनौतियाँ, कठिनाइयों को ही नहीं बताते बल्कि अपने नवाचारों की सहभागिता भी करते हैं, और यह सब निरंतर छात्र अधिगम को बेहतर बनाने पर केंद्रित होता है।

स्टाफ मीटिंग सहयोगात्मक रूप से चिंतनशीलता को प्रेरित करने वाली भी एक रचनात्मक जगह बन सकती है।

इस प्रकार से इन अलग अलग विधाओं का प्रयोग करके हम विद्यालय में अधिगम संस्कृति का निर्माण और क्रियान्वयन कर सकते हैं।

<u>विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास- प्रदर्शन गतिविधि</u> (Video) (13_29_Developing Learning Culture in Schools)

YouTube Link: https://www.youtube.com/watch?v=NQistlg0BoM

DIKSHA Link: https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_31315806098638438411202

do_31315806098638438411202

<u>विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास-प्रदर्शन गतिविधि-वीडियो प्रतिलिपि</u> (Text) (13_30_Developing Learning Culture in Schools_Transcript)

नमस्कार साथियों, इस प्रदर्शन गतिविधि में हम देखेंगे कि किस प्रकार से दो विद्यालय प्रमुख अपने-अपने विद्यालय में अलग-अलग माध्यम से, अधिगम संस्कृति का निर्माण करते हैं इस पर वो दोनों चर्चा करेंगे।

विद्यालय प्रमुख (डॉ. चारु) : नमस्ते कश्यपी, मैंने सुना है कि आपने अपने विद्यालय में बहुत सारे नए परिवर्तन लाये हैं। मैं भी अपने विद्यालय का रूपांतरण करना चाहती हूं। इस सन्दर्भ में आपसे पूछना चाहूंगी, कि विद्यालय मे आपने किन चुनौतियों का सामना किया और आपका क्या दृष्टिकोण रहा ?

विद्यालय प्रमुख (डॉ. कश्यपी): उत्साहवर्धन के लिए धन्यवाद, चारु।
यूं तो जब आठ महीने पहले मेरी इस विद्यालय में नियुक्ति हुई तो विद्यालय में कोई विशेष समस्याएं नहीं थी, पर्याप्त मात्रा मे संसाधन थे, शिक्षक भी थे, सब कुछ ठीक चल रहा था, सीखने-सिखाने की भी समस्याएं नहीं थी, पर इस ठीक से दिखने वाले विद्यालय से मुझे थोडा असंतोष था और मुझे ऐसा लग रहा था कि कहीं प्रगतिशीलता और विद्यालय को निरंतर अग्रसर होते हुए नहीं देख पा रही हूँ, जो कि मेरी एक चाह थी, वो कहीं नहीं हो पा रहा था। और यूं कहूं, तो निरंतर सीखते रहने की अभिवृत्ति की कहीं मुझे कमी महसूस हो रही थी। जैसे मेरे ही कुछ सवालों के मेरे ही पास जवाब न हो, जैसे क्या मेरे सभी बच्चे सीख रहे हैं या नहीं सीख रहे हैं? क्या मेरे सभी शिक्षक अपने ज्ञान और कौशल को निरंतर संवार रहे हैं? क्या सभी एकनिष्ठ होकर एक ही ध्येय की ओर अग्रसर हैं? बस ऐसे ही कुछ सवाल लेकर मैं चली थी।

विद्यालय प्रमुख (डॉ. चारु) : यह वास्तव में तो बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहा होगा। आपने कैसे शुरुआत करी? आपके मन में क्या आया?

विद्यालय प्रमुख (डॉ. कश्यपी) : यहीं से मेरे मन में एक बदलाव के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण बात होती है वो ध्यान आई, और वो है संस्कृति का पुनर्निर्माण। एक अधिगम केंद्रित संस्कृति का निर्माण तो मैंने शिक्षकों, विद्यार्थियों को अनौपचारिक रूप से वे क्या सीख रहे हैं, उन्हें आज क्या कक्षाओं में रोचक लगा, पढ़ने-पढ़ाने की, सीखने-सिखाने की जो प्रक्रियाएँ हैं, आज जो उन्होंने सीखा अगर उनको फिर से करने का मौका मिले तो कैसे करना चाहेंगे? इस प्रकार के प्रश्नों के साथ मैंने उनसे एक अनौपचारिक वार्तालाप शुरू की। और देखते ही देखते ये हुआ कि वो रोचक सा बन गया। मैंने अपने भी कक्षाकक्ष के बारे में विद्यार्थियों एवं साथी शिक्षकों से पूछना शुरू किया जिससे एक समानतापूर्ण वातावरण का निर्माण हुआ, और जिससे शिक्षक धीरे-धीरे खुलने लगे। और उन्होंने मुझसे

अपनी निजी और व्यावसायिक चुनौतियां भी साझा करी। उनकी निजी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनने के साथ-साथ मैंने व्यावसायिक चुनौतियों पर भी उनका ध्यान केंद्रित किया और नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाते हुए मैंने पाया कि विद्यालय का वातावरण धीरे-धीरे परिवर्तित हो रहा है। हमारी स्टाफ मीटिंग सहयोगात्मक दल अधिगम में परिवर्तित होने लगी। वहाँ हम किताबें पढ़ते, अपनी चुनौतियों पर बात करते और अपने अनुभव साझा करते। एक दो बार मैंने अपने पूर्व विद्यालय के दो अध्यापकों को भी अपनी स्टाफ मीटिंग में बुलाया। तो इस प्रकार से हम कुछ ना कुछ नया करते चले गए जो कि एक शायद अधिगम संस्कृति का निर्माण करने की तरफ हमें अग्रसर करता रहा।

विद्यालय प्रमुख (डॉ. चारु) : कश्यपी जी, आपने अपने बच्चों और अध्यापकों के बीच की भावनात्मक दूरी को कम करने के लिए क्या प्रयास किए?

विद्यालय प्रमुख (डॉ. कश्यपी): मैंने ध्यान दिया कि कक्षाओं में और प्रार्थना सभा मे कुछ ही बच्चे भाग ले रहे हैं। और अधिगम संस्कृति के विकास के लिए यह ज़रूरी है कि प्रत्येक बच्चा हर अभ्यास में भाग ले, और इसलिए इस बात पर अध्यापकों और मेरे बीच में सहमति बन गई। और हमने यह कोशिश करी कि सभी बच्चों को इसमें समान अवसर मिले। तो शिक्षकों ने ये किया कि उन्होंने एक कदम पीछे खींचा और बच्चों को आगे किया। और मैंने ये भी किया साथ-साथ में की बच्चों की उम्र और रूचि को ध्यान में रखते हुए कक्षाकक्ष में ही किताबों का इंतज़ाम करना और एक ऐसा वातावरण बनाना जिसमें बच्चें और शिक्षक साथ में मिल कर के पढ़ें।

एक और बात, मैंने सुना है की तुमने भी अपने स्कूल में समुदाय के साथ बहुत काम किया है। तो मै भी जानना चाहूँगी कि आप किस प्रकार से अपने स्कूल में समुदाय के साथ मिल कर काम करते हैं?

विद्यालय प्रमुख (डॉ. चारु) : जी, मैंने ध्यान दिया कि बार-बार याद दिलाने के बाद भी विद्यालय प्रबंधन समिति के लोग विद्यालय नहीं आते थे। मैंने और मेरे साथी अध्यापकों ने तब यह तय कि हम समिति की मीटिंग शाम को गाँव में उनकी सुविधानुसार करेंगे। हमने उनकी कम उपस्थिति और विद्यालय न आने के कारण जानने की कोशिश की। तब हमने यह पाया कि पूर्व में उनकी बातों को अधिक नहीं सुना गया और उन्हें कभी पर्याप्त महत्व भी नहीं मिला। इस बार मेरे अध्यापकों और मैंने उनकी हर बात को ध्यान से सुना और विद्यालय विकास से संबंधित उनकी सलाह पर अमल करने की भी कोशिश की। विद्यालय से उनकी वर्तमान और भविष्य की अपेक्षाओं को भी जानने की कोशिश करी। समुदाय के भागीदारों और समिति को शिक्षकों की नियमित उपस्थिति और उनके बच्चों के बेहतर अधिगम स्तर के लिए आश्वस्त भी किया गया। इस प्रकार से मैंने और साथी अध्यापकों ने समिति को विद्यालय परिवार का हिस्सा बना लिया।

विद्यालय प्रमुख (डॉ. कश्यपी) : यह एक बढ़िया प्रयास रहा चारु। हम लगातार इस प्रकार संवाद में रहेंगे तो एक दुसरे के विद्यालय को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे पाएंगे। और शायद यही एक, केवल अपने विद्यालय के अधिगम संस्कृति का विकास ही नहीं, पर जिसे हम कहते हैं, व्यावसायिक समूह के रूप में हम मिल कर कार्य करेंगे पायेंगे और सभी विद्यालयों में हम अधिगम संस्कृति का निर्माण कर पाएंगे।

विद्यालय प्रमुख (डॉ. चारु): धन्यवाद कश्यपी, यह बेहद ही अर्थपूर्ण संवाद रहा, और हम मिलकर विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास अवश्य करेंगे।

<u>अतिरिक्त गतिविधि</u> (Text) (13_31_Additional Activities)
गतिविधि 1- अध्यापक और विद्यालय प्रमुख चिंतनशील अभ्यासकर्ता के रूप में

आप एक विद्यालय/अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में आत्म-चिंतन कैसे करते हैं?- कुछ मुद्दे इस प्रकार से हैं- विद्यालय में आपके द्वारा संपन्न किये गए कार्य, कक्षा कक्ष प्रक्रियाएं, कोई नवाचार जिसका अपने विद्यालय में नेतृत्व किया हो, या कोई समस्या जिसका समाधान आप ढूंढ रहे हैं। किसी एक मुद्दे पर आत्म-चिंतन करें –

गतिविधि 2 : छात्रों के अधिगम स्तर को बढाने के लिए दल अधिगम: स्टाफ मीटिंग

विद्यालय प्रमुखों एवं अध्यापको के बीच में दल अधिगम के लिए स्टाफ मीटिंग एक सुअवसर है। दल अधिगम की रचना विद्यालय की सभी प्रक्रियाओं में की जा सकती है। हालाँकि इस गतिविधि में स्टाफ मीटिंग की प्रक्रिया को केंद्र में रखकर, दल अधिगम पर चर्चा की गयी है जिससे की छात्र अधिगम को बेहतर बनाया जा सकता है।

दल अधिगम के लिए प्रभावी स्टाफ मीटिंग का संचालन करने हेतु मार्गदर्शक चरण	**क्या यह आपके विद्यालय में होता है** ? **(हाँ/ नहीं)**	**एक विद्यालय प्रमुख के रूप में आप स्टाफ मीटिंग की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए क्या क्या कदम उठाएंगे?**
स्टाफ मीटिंग के उद्देश्य को स्पष्ट करना		
स्टाफ के साथ विचार-विमर्श करके मीटिंग के लिए एक एजेंडा तय करना		
कुल समय कितना लगना है, यह तय करना और उसके अनुसार प्रत्येक एजेंडा के लिए मीटिंग समय निर्धारित करना		
एजेंडा पर स्टाफ मीटिंग का नेतृत्व करना- नेतृत्वकर्ता के द्वारा सभी सदस्यों द्वारा एकत्र किए विचारों व प्रमाणों को साझा करना, प्रमाण आधारित निर्णयों पर पहुंचना		
मीटिंग के दौरान ही ज़िम्मेदारियां तय करना और लक्ष्य व उत्तरदायित्व सौंपना		
मीटिंग के सभी सदस्यों की भागीदारी को सुनिश्चित करना		
एजेंडा का नियमित रूप से फोलो-अप करते रहना और निर्णयों की समीक्षा करना		

अतिरिक्त पाठ

संदर्भ आधारित विद्यालय विकास योजना (Text) (13_32_Planning a context-specific School Development)

विद्यालय विकास योजना

विद्यालय विकास एक ऐसी योजना है जिसमें एक निश्चित अवधि में विद्यालय द्वारा निर्धारित वांछित प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु एक विज़न, लक्ष्य, उद्देश्य एवं रणनीतियां बनायी जाती हैं। यह योजना, विद्यालय प्रमुख सभी भागीदारों (शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक स्टाफ, अभिभावक, समुदाय इत्यादि) के साथ एकजुट होकर बनाता है व सुनिश्चित करता है कि इसमें लक्ष्य (goals) व उद्देश्य (targets) निर्धारित हों और कार्य योजना के विभिन्न चरण स्पष्ट हों। इस योजना का आश्य विद्यालय को उसके विकास के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करना है। इस पर ध्यान देना आवश्यक है कि विद्यालय विकास योजना हेतु निर्धारित उद्देश्य मापने योग्य हों जिससे कि जब योजना कार्यान्वित एवं पूर्ण की जाये तो उपलब्धियों को ठोस तरीके से सबके समक्ष रख पाएँ।

विज़न - एक प्रमुख चरण

विद्यालय के विकास हेतु दिशा-निर्देश प्रदान करने के लिए विज़न बनाना प्रथम चरण है। विज़न का दायरा व्यापक होता है, यह विद्यालय विकास योजना के प्रारम्भ में बनाना आवश्यक है जिसके पश्चात ही योजना के क्रियान्वयन की रुपरेखा बनायी जा सकती है। विज़न को विकसित करते हुए आपको निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होगा:

- विज़न कथन में भविष्य के लक्ष्यों पर चिंतन या विचार होना चाहिए।
- विज़न मूल्य संचालित होना चाहिए, उदाहरण के लिए, छात्रों में यह आत्मविश्वास पैदा करना कि प्रत्येक सीखने या बेहतर निष्पादन के योग्य है।
- विज़न की एक निश्चित अवधि हो जो सामान्यतः विद्यालय के संदर्भ में 3 या 5 वर्ष हो सकती है।
- विद्यालय विकास योजना एक रुपरेखा है जो यह निर्धारित करती है कि एक संस्था को क्या बदलाव लाने की आवश्यकता है और वे बदलाव कब तक लाए जा सकते हैं।

विद्यालय विकास योजना की तैयारी के तीन चरण –
विद्यालय आधारित विकास योजना की तैयारी को तीन स्तरों में बाँटा जा सकता है :

1. योजना
2. क्रियान्वयन
3. अनुश्रवण एवं मूल्यांकन

चरण 1- समितियों/दलों का गठन-

विद्यालय विकास योजना की तैयारी एवं क्रियान्वयन के लिए ज़िम्मेदारियों को साझा करने हेतु दलों का गठन किया जाता है। यह गतिविधि शिक्षकों, स्टाफ व छात्रों को एकजुट होकर कार्य करने योग्य बनाती है एवं उनकी क्षमताओं एवं प्रतिभाओं का इस प्रकार उपयोग करती है कि विद्यालय के प्रति अपनेपन की भावना को बढ़ावा मिले। इससे ये भागीदार विद्यालय एवं इसके विकास की ओर और नज़दीक आ जाते हैं। प्रत्येक विद्यालय के लिये कम से कम चार दलों का गठन करना एक योग्य सुझाव प्रतीत होता है। निम्नलिखित दलों का निर्धारण कर सकते है :-

क. योजना दल
ख. कार्य दल
ग. नेतृत्व दल
घ. मूल्यांकन दल

चरण 2 - बेस लाइन डाटा

योजना प्रक्रिया में अनेकों पहलुओं को समझने की आवश्यकता अन्तर्निहित है जैसे कि विद्यालय की समझ, विद्यालय में नामांकन, भविष्य की नामांकन अवाश्यकताएँ अध्यापक एवं उनकी आवश्यकता, समुदाय की समझ (जन सांख्यिकीय) इत्यादि। वर्तमान परिस्थिति में इन पहलुओं पर इकट्ठा की गयी सूचनाएं/आवश्यकताएँ बेस लाइन डाटा कहलाता है। बेस लाइन
डाटा से विद्यालय स्टाफ को यह पता चलता है कि उनके पास क्या है व भविष्य में वो क्या चाहते हैं? अतः विद्यालय विकास योजना बेस लाइन डाटा व भविष्य की उपलब्धियों के बीच की दूरी को मापने में मदद् करती है।

चरण 3- विज़न का निर्माण

विज़न एवं एकत्रित बेस लाइन डाटा विद्यालय आधारित विकास योजना की तैयारी हेतु दिशा-निर्देश देने में काफी उपयोगी हो सकते हैं। विज़न निर्माण हेतु, आप को अपनी वर्तमान भूमिका एवं अपनी भूमिका के प्रति अपनी अपेक्षाओं पर पुनःविचार करना होगा। आप को अपने स्वंय के विज़न एवं संस्थागत विज़न में सम्बन्ध जैसे कि "आगामी ३ वर्षों में आप स्वंय को कहाँ देखना चाहेंगे" (स्वयं का विज़न) एवं "आगामी ३ वर्षों में आप अपनी संस्था को किस रूप में देखना चाहेंगे" (संस्था विज़न) के बारे में सोचना होगा। इसके पश्चात अपने भागीदारों की सहायता से विज़न कथन का विकास करें जो कि एक सामूहिक अभ्यास होना चाहिए।
विज़न कथन के निर्माण में अनुसरण किए जाने वाले बिन्दु -

- आपका विज़न स्पष्ट हो।
- एक वाक्य अथवा संक्षिप्त अनुच्छेद का प्रयोग करें।
- विज़न कथन में आपका व आपके भागीदारों का भविष्य के प्रति विश्वास एवं उचित मनोदशा झलकनी चाहिए।

चरण 4- प्राथमिकताओं का निर्धारण

अब तक आपने विद्यालय की विशिष्ट आवश्यकताओं पर आधारित विज़न कथन का निर्माण कर लिया होगा। विज़न को ध्यान में रखते हुए अपने विद्यालय हेतु प्रमुख प्राथमिकताओं को चुनिए। विभिन्न प्राथमिकताओं को इस प्रकार व्यवस्थित कीजिए जिससे कि ३ वर्षों की अवधी में विज़न को प्राप्त किया जा सके। प्रत्येक माह में कौन-कौन सी गतिविधियाँ की जा सकती हैं एवं प्राथमिकताओं की ज़िम्मेदारी अलग से किन-किन को दी जा सकती है, इसके बारे में भी सोचिए। प्राथमिकताओं के उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं :-

- सभी बच्चों की अधिगम आवश्यकताओं को पहचानना, उनका आकलन एवं विकास
- सभी अध्यापकों द्वारा बेहतर शिक्षण के लिए उनके ज्ञान व कौशल का विकास
- सभी अध्यापकों एवं छात्रों हेतु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आनन्ददायक एवं अधिगम केन्द्रित बनाना।

चरण 5-लक्ष्य (Goal) व उद्देश्य (Target)

सभी भागीदारों के साथ मिलकर विद्यालय का विज़न विकसित करने के पश्चात आपको लक्ष्यों (goals) को निर्धारित करना है। यदि आपका विज़न कथन ३ वर्षों के लिये तैयार किया गया है तो वार्षिक लक्ष्य बनाना उपयोगी होगा जिसका विज़न के साथ संरेखण (alignment) हो। ये लक्ष्य उन प्राथमिकताओं के साथ भी संरेखित होंगे जो आपने निर्धारित की हैं। एक लक्ष्य के भीतर 3-4उद्देश्य (target) हो सकते हैं। उद्देश्य अल्पकालिक होने के साथ मापने योग्य भी होते हैं। इनकी समय सीमा 3,5,6 या 1 महीने हो सकती है। वार्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आप एक वर्ष में दो से तीन उद्देश्य निर्धारित कर सकते हैं। रणनीतियाँ वो कार्य बिन्दु हैं जो आपके उद्देश्यों (targets) को पूरा करने में सहायक होती हैं।

चरण 6- अनुश्रवण एवं मूल्यांकन तंत्र

विद्यालय विकास योजना तैयार होने के पश्चात् उसका क्रियान्वयन एवं समयानुसार अनुश्रवण करने की आवश्यकता है। अनुश्रवण दल निर्धारित लक्ष्यों को तय करने में/प्राप्त करने में सहायक होगा। आप विद्यालय विकास योजना की छमाही अथवा वार्षिक प्रगति का मूल्यांकन कर सकते हैं
विचारात्मक प्रश्न

- विद्यालय विकास योजना (एस.डी.पी.) के निर्माण और क्रियान्वयन में आप अपनी भूमिका को एक नेतृत्वकर्ता के रूप में कैसे देखते हैं?
- यह प्रतिबिंबित करें कि आपका स्कूल अपनी ताकत और कमजोरियों के मामले में आज कहाँ खड़ा है? आप अपने स्कूल में किन दो प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में सुधार करना चाहते हैं और क्यों?
- विद्यालय विकास योजना की तैयारी में कितने चरण हैं?

अतिरिक्त पाठ: विद्यालय शिक्षा में आई सी टी संबंधी पहल (Text) (13_33_ICT Initiatives in School education)

विद्यालय शिक्षा में आई सी टी संबंधी पहल

प्रत्येक विद्यालय, शिक्षक एवं विद्यालय प्रमुख की विभिन्न सबलताएं और योग्यताएं होती हैं। वे इन योग्यताओं का उपयोग, कार्य करने, योजना बनाने, संचालन करने, कक्षा-कक्ष प्रबंधन के मुद्दों को संबोधित करने और दिन-प्रतिदिन की सामान्य समस्याओं का समाधान करने के लिए करते हैं। इसके अलावा, शिक्षण समुदाय एवं शैक्षिणक प्रशासकों के समक्ष कक्षा आकार, विषयवस्तु की प्रकृति, शिक्षक छात्र अनुपात, क्षेत्र में संसाधनों की उपलब्धता, भाषा एवं भौगोलिक विविधता इत्यादि से संबंधित चुनौतियां होती हैं। प्रत्येक शिक्षक और विद्यालय प्रमुख को अकादमिक नेतृत्व प्रदान करने, नवाचार करने, दैनिक समस्याओं को हल करने और अंततः विद्यालय की प्रभावशीलता में योगदान देने हेतु सक्षम बनाना, आज के समय की मुख्य आवश्यकता है। उपरोक्त पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (आई सी टी), शिक्षण-अधिगम वातावरण को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

यूनेस्को के अनुसार, सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (आई सी टी) से तात्पर्य डिजिटल जानकारी बनाने, संग्रहित करने, पुनः प्राप्त करने एवं कुशलतापूर्वक प्रयोग करने के लिए तकनीकी उपकरणों और संसाधनों के एक विविध समूह से है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (आई सी टी) में व्यक्ति को समस्त दुनिया से जोड़ने, एक दूसरे के साथ जोड़ने, कुछ नया करने, संवाद स्थापित करने और साथ ही शिक्षा क्षेत्र में उपलब्ध सभी संभावनाओं का उपयोग करने और

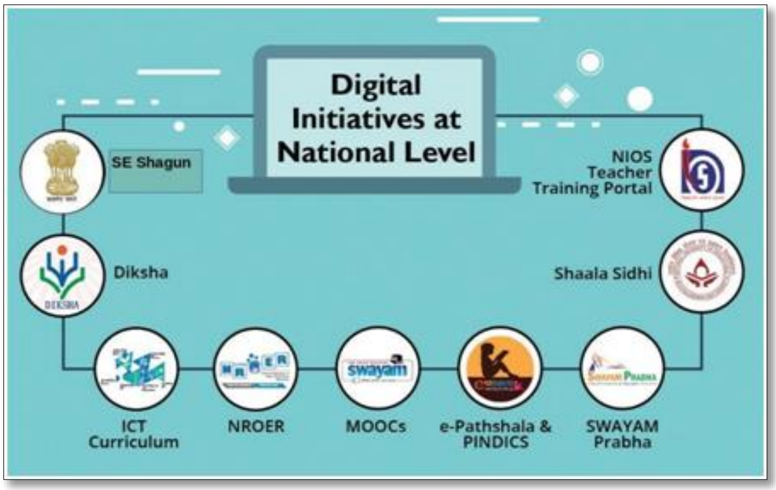

यहाँ तक की समाज में मौजूद भेद-भाव को समाप्त करने की क्षमता है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (आई सी टी) की क्षमताओं का उपयोग करने के लिए, यह समझना होगा कि इसका अधिकतम उपयोग कैसे किया जा सकता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में विद्यालय शिक्षा क्षेत्र में हाल ही में की गई कुछ महत्वपूर्ण सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (आई सी टी) पहलों पर यहां चर्चा की गई है।

•नेशनल रिपोजिटरी ऑफ ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (एन आर ओ ई आर), ई-पाठशाला (वेब पोर्टल और मोबाइल एप्स) और दीक्षा जैसी पहल, चित्रों, ऑडियो, वीडियो, इंटरएक्टिव (संवादात्मक), ग्राफिक्स, एनिमेशन, डिजिटल किताबें डिजिटल नक़्शे, समयसारणी आदि के रूप में ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (ओ ई आर) आप तक पहुँच बनाने का अवसर प्रदान करती हैं। जीवन पर्यन्त अधिगम और सतत व्यवसायिक विकास को बढ़ावा देने के लिए, सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (आई सी टी) पाठ्यक्रम पर आधारित एम ओ ओ सी जैसी पहल ऑनलाइन के साथ-साथ ब्लेन्डेड मोड से पाठ्यक्रमों की श्रृंखला प्रदान करती है। स्वयं प्रभा के तहत २४*७ घंटे चलने वाला डी टी एच टीवी चैनल, जन समुदाय के बीच पहुंचने की एक ऐसी पहल है, जहां इंटरनेट की सुविधा एक चुनौती है।

- शाला गुणवत्ता (शगुन) शिक्षकों को अपने सर्वोत्तम अभ्यासों को साझा करने के लिए अवसर प्रदान करता है एवं ऑनलाइन अनुश्रवण करने का एक माध्यम है।
- जैसे-जैसे तकनीक का विस्तार हो रहा है, साइबर जगत में सुरक्षा को लेकर खतरे भी बढ़ गए हैं। यह नीति निर्माताओं, पाठ्यक्रम निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों और शिक्षकों का दायित्व है कि वे साइबर सुरक्षा उपायों, साइबर के नियम, साइबर कानूनों आदि के बारे में जागरूक हों और छात्रों में भी जागरूकता पैदा करें।
- हाल ही में लर्निंग मनेजमेंट सिस्टम (एल एम एस) के सहयोग से लगभग ४२ लाख शिक्षकों को चरणबद्ध तरीके से प्रशिक्षित करने की पहल की गई है। जो https://itpd.ncert.gov.in/ पोर्टल पर उपलब्ध है और यह पोर्टल समेकित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रगति और क्रियान्वयन की प्रगति परखेगा। सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (आई सी टी) कई संसाधन समूहों के साथ-साथ प्रशिक्षित किए जाने वाले शिक्षकों के डेटा को प्राप्त करने और उनका विश्लेषण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा श्रेष्ठ अभ्यासों को सभी तक पहुंचाने के अवसर प्रदान करती है।

अतिरिक्त पाठ: विद्यालय प्रमुख केस अध्ययन (Text) (13_34_Case studies of School Leaders)
केस स्टडीज (विस्तृत अध्ययन)
विद्यालय प्रमुख का नामः शेवांग उरगोल
सरकारी प्राथमिक विद्यालय, खार, लाहौल स्पीती, हिमाचल प्रदेश

खार (लाहौल स्पीती, हिमाचल प्रदेश) के दूरस्थ गांव में स्थित सरकारी प्राथमिक विद्यालय ने काफी अच्छा काम किया है। विद्यालय एक पिछड़े क्षेत्र में स्थित है जो मुख्य क्षेत्र से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ नहीं है। विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ भी विद्यालय प्रमुख, श्री शेवांग उरगोल को एक ऐसे विद्यालय की संकल्पना को वास्तविकता में बदलने से नहीं रोक पाईं। विद्यालय में हर तरह की सुविधाएं हैं और यह अच्छी तरह से सुसज्जित है। यह एक छोटा विद्यालय है जिसमें दो ही शिक्षक हैं। विद्यालय में एक अच्छा पुस्तकालय, शिक्षण अधिगम सामग्री (टी एल एम), कॉर्नर गतिविधि कक्ष, रसोई घर, शौचालय और खेल का मैदान है। कक्षाकक्ष हवादार हैं और बिजली की नियमित आपूर्ति है। यह भी गौर करने वाली बात है कि विद्यालय सौर्य ऊर्जा का उपयोग कर रहा है जो पर्यावरण के अनुकूल हैं। इस तरह की तकनीकों का प्रयोग युवा पीढ़ी को पर्यावरण को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है। साथ ही अधिक चिरस्थायी पर्यावरण की दिशा में योगदान करने हेतु उनकी तर्कशीलता को प्रेरित करता है। ये सभी प्रयास विद्यालय प्रमुख द्वारा किए गए हैं, जिन्होंने विद्यालय को सुचारू रूप से काम करने वाली इकाई के रूप में बदला है।

गतिविधि कक्ष

श्री शेवांग ने ग्रामीणों के सहयोग से एक टीवी कक्ष बनाने में भी कामयाबी हासिल की। इस कक्ष का उपयोग विशेष रूप से छात्रों को मल्टीमीडिया के माध्यम से सिखाने के लिए किया जाता है न कि पारंपरिक तरीके से। छात्रों को नैतिक कहानियाँ और कविताएँ भी सिखाई जाती है। इसके अलावा, छात्रों को दैनिक खबर दिखाई जाती है। इस कमरे में एक कंप्यूटर भी है, जिसे छात्र संचालित करते हैं और सीखने व अभ्यास के लिए प्रयोग करते हैं। पुस्तकालय को अन्य शिक्षकों के सहयोग से स्थापित किया गया है, जिन्होंने पुस्तकें भी योगदान में दी हैं। सामान्यत: छात्र दोपहर के भोजन के बाद लाइब्रेरी में पढ़ते हैं। अधिगम अनुभव को रूचिकर बनाने के लिए, कक्षाओं को चित्रों और उद्धरणों के साथ चित्रित किया गया है। विद्यालय में गर्मियों और सर्दियों के लिए अलग-अलग शौचालय बनाए हैं, जो छात्रों को खराब मौसम में भी अपनी पढ़ाई को पूरा करने में मदद करते हैं।

खेल का मैदान **रसोई घर**

विद्यालय में एक खेल का मैदान भी है, जिसका विद्यालय प्रमुख की पहल पर, पुनःनिर्माण किया गया। श्री शेवांग की भविष्य में विद्यालय में एक ग्रीन हाउस बनाने की भी योजना है जिससे छात्रों को स्वस्थ और जैविक भोजन मिल सकेगा। विद्यालय में एक पूरी तरह कार्यात्मक और सुसज्जित रसोईघर है जिसमें छात्रों के लिए पौष्टिक भोजन बनाया जाता है। यह भी बहुत अच्छी बात है कि विद्यालय न केवल छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित करने का कार्य कर रहा है, बल्कि उन्हें उचित पोषण प्रदान करके उनकी देखभाल भी कर रहा है।

शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा गतिविधि कक्ष

तमाम विषमताओं के बावजूद विद्यालय ने अपने छात्रों को जवाहर नवोदय विद्यालय (एन वी एस) में दाखिला दिलाने में सफलता प्राप्त की है। श्री शेवांग के अनुसार ऐसा इसलिए हो पाया है क्योंकि छात्र गणित में अच्छे हैं। उनके विद्यालय की शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ बाल केन्द्रित हैं जिसके फलस्वरूप छात्रों का एन वी एस में प्रवेश सुनिश्चित हो पाया है।

क्रम सं.	वर्ष	जवाहर नवोदय विद्यालय के लिए चुने गए छात्रों की संख्या
1.	2009-2010	04
2.	2010-2011	02
3.	2011-2012	01
4.	2013-2014	02
5.	2014-2015	01
6.	2015-2016	01
7.	2016-2017	01
8.	2017-2018	02

श्री शेवांग जैसे विद्यालय प्रमुख समाज के सामने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जिन्होंने अपने निरंतर प्रयासों से विद्यालय को इस मुकाम पर पहुंचाया है। यह आधुनिक शिक्षा के प्रति उनका विश्वास ही है जो रट्टा मारकर सीखने और शाब्दिक समझ पर निर्भर नहीं है, बल्कि अपने परिवेश के बारे में जागरूक होने और महत्वपूर्ण अवधारणाओं का सृजन करने पर निर्भर करता है। श्री शेवांग उरिगोल ने राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, नीपा द्वारा २२-२४ जनवरी २०१९ को आयोजित नेशनल कांफ्रेंस ऑन लीडरशिप पाथवेज़ फॉर स्कूल इम्प्रूवमेंट में भाग लिया।

विद्यालय प्रमुख का नामः रागिनी रामचंद्र सुर्वे

जिला परिषद आदर्श विद्यालय, निवाली चिपलुन रत्नागिरी, महाराष्ट्र

जिला परिषद आदर्श विद्यालय, निवाली चिपलुन, रत्नागिरी, महाराष्ट्र में स्थित है, जो सर्वश्रेष्ठ प्राथमिक विद्यालयों में से एक है। विद्यालय प्रमुख का विद्यालय पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। पारंपरिक रट्टा मारकर सीखने की प्रक्रिया का अनुसरण करने की बजाय विद्यालय प्रमुख श्रीमती रागिनी रामचंद्र सुर्वे ने प्राथमिक कक्षाओं में नवाचारी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की शुरूआत की। लेकिन यह उनके सहकर्मियों के सहयोग के बिना संभव नहीं हो पाता, जिन्होंने महाराष्ट्र के ब्लॉक कुमठे में व्यक्तिगत रूप से विद्यालयों का भ्रमण किया। इस भ्रमण का एक महत्वपूर्ण परिणाम था -गतिविधि-आधारित शिक्षण से अकादमिक स्टाफ को परिचित कराना। शिक्षण की यह तकनीक छात्रों को अकादमिक रूप से बेहतर परिणाम देने के लिए प्रोत्साहित करने और उनके संज्ञानात्मक स्तर में सुधार हेतु लाभप्रद साबित हुई। इस तकनीक को शुरू करने से पहले विद्यालय प्रमुख ने अन्य भागीदारों के साथ एक बैठक की और इस अवधारणा से उनको परिचित कराया। रूचिपूर्ण बात यह है कि सभी भागीदारों ने बहुत उत्साह दिखाया और विद्यालय को रूपांतरित करने एवं गतिविधि आधारित शिक्षण तकनीकों को अपनाने में विद्यालय की मदद की। उन्होंने विद्यालय के फर्श को कला समेकित शिक्षण के माध्यम से अधिक रंगीन बनाने में मदद की।

विद्यालय में, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में गतिविधि आधारित तकनीकों का निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित है :

- कहानी नाटकों ,और ड्रामा के माध्यम से छात्रों को नई अवधारणाएँ सिखाई जाती हैं।छात्रों को पाठ्यक्रम विषयों पर नाटक / संबंधित अवधारणाओंप्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है।
- छात्रों को तीन शब्द दिए जाते हैं जिनसे उन्हें एक नई कहानी बनानी होती है। यह विधि छात्रों को रचनात्मक ढंग से सोचने और स्वयं को अभिव्यक्त करने में सक्षम एवं उनमें समीक्षात्मक मनोवृति विकसित करने के योग्य बनाती है।
- छात्रों को उनकी उम्र के अनुसार वर्गीकृत कर उन्हें सरल शब्दों के प्रयोग के माध्यम से लयबद्ध कविताएं लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- छात्रों को एक शब्द दिया जाता है और उन्हें दिए गए शब्दों से संबंधित अन्य शब्दों के बारे में सोचना होता है। यह उन्हें अपनी शब्दावली को बढ़ाने में सक्षम बनाता है।
- एक अभ्यास में छात्रों को मराठी वर्णमाला देना, उन्हें नए शब्द बनाने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है। यह उनकी शब्दावली में सुधार करने हेतु एक और प्रयोग है।

- गणितीय तर्कशक्ति को बढ़ानाः
  - छात्र दिए गए अंकों से संख्या तैयार करते हैं।
  - घटते और बढ़ते क्रम में संख्याओं को लगाना।
  - संख्याओं का विस्तार।
  - सम और विषम संख्याओं को पहचानना।
  - वैल्यू का स्थान बताना।
  - संख्याओं को जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग करना।
  - संख्याओं पर पासा फेंकना और उन्हें पढ़ना।
- छात्रों की अंग्रेजी में सुधार हेतु, उन्हें अंग्रेजी में प्रस्तुति (नाटक एवं कविता) करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।
- छात्रों को अपनी कलात्मक क्षमताओं को प्रस्तुत करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है, इसलिए उनके शिल्प और कला कौशल को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनियों का आयोजन विद्यालय समय समय पर करता है।

यह बात बहुत ही रोचक है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में माता-पिता की भागीदारी बच्चों को अपने सपनों को पूरा करने के लिए और अधिक प्रोत्साहित करती है। विद्यालय के कार्यों को जिला परिषद के शिक्षा अधिकारियों और शिक्षा समिति द्वारा काफी सराहना मिली है। जिला शैक्षिक तथा प्रशिक्षण ससंस्थान (डाइट)के संकाय ने भी विद्यालय में परिवर्तन लाने हेतु विद्यालय प्रमुख द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में नए प्रयोगों और नवाचारों ने न केवल छात्रों को बल्कि शिक्षकों को भी संज्ञानात्मक रूप से बढ़ने में सक्षम बनाया है।

छात्र अधिगम

छात्रों को अब कठिन अवधारणाओं को समझना अधिक आसान लगता है। उदाहरण के लिए, मान लें कि संख्या 29 को दस-दस डंडियों के दो बंडलों का उपयोग करके और 9 अलग-अलग डंडियों को इस तरह से व्यवस्थित करके सिखाया जाता है, जो 29 की संख्या बनाएं। विभिन्न शैक्षणिक उपकरणों के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया को आसान बनाया गया है।

इसके साथ, विद्यालय प्रमुख ने विद्यालय के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए भी काम किया है और विद्यालय प्रबंधन को भी सुदृढ़ किया है।

विद्यालय प्रमुख को उनके अथक प्रयासों के लिए सम्मानित किया गया।

श्रीमती रागिनी आर सुर्वे ने राष्ट्रिय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, नीपा द्वारा २२-२४ जनवरी २०१९ को आयोजित **"नेशनल कांफ्रेंस ऑन लीडरशिप पाथवेज़ फॉर स्कूल इम्प्रूवमेंट"** में भाग लिया।

सारांश

<u>सारांश</u>(Mind map) (13_35_Summary)

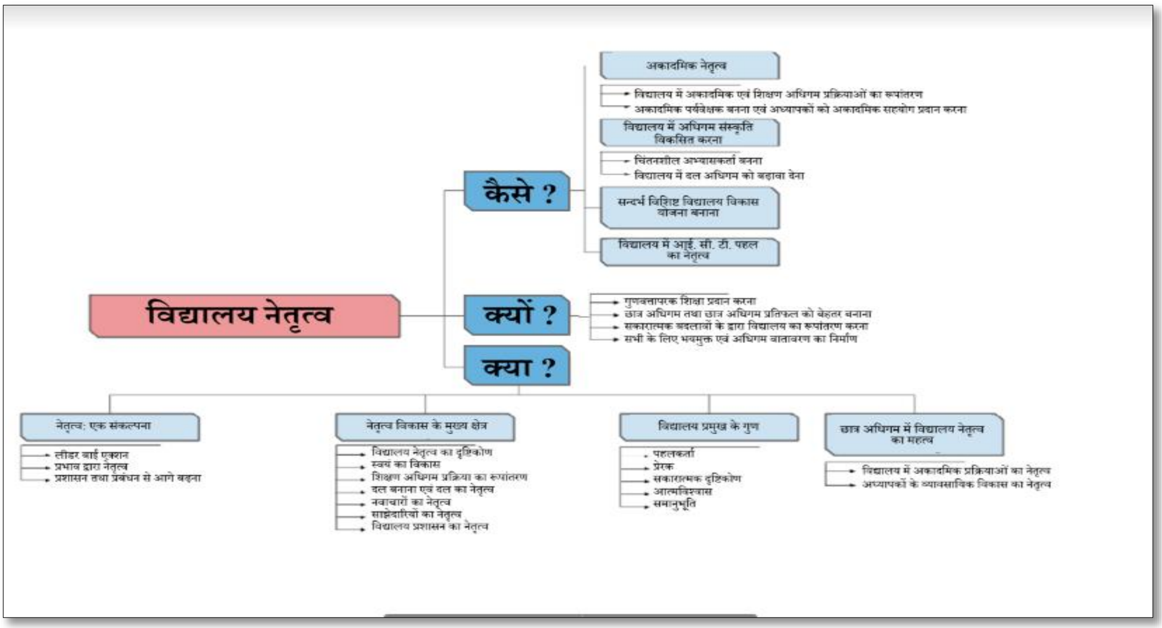

<u>पोर्टफोलियो गतिविधि</u>

<u>पोर्टफोलियो गतिविधि</u> (Text) (13_36_Portfolio Activity)

विद्यालय प्रमुख के लिए :

विद्यालय नेतृत्व की संकल्पना एवं अनुप्रयोग के बारे में अपने अधिगम को यहाँ समेकित करें।
एक विद्यालय प्रमुख के तौर पर अपने **"विद्यालय में गुणवत्तापरक शिक्षा और छात्रों के बेहतर अधिगम"** विज़न कथन को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के वातावरण को रूपांतरित करने की दूरदर्शी बहुआयामी योजना तैयार करें। प्रत्येक विद्यालय के संदर्भ एवं स्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं, अतः अपने विद्यालय के लिए साथी अध्यापकों, छात्रों तथा समुदाय के लोगों के साथ मिलकर गुणवत्तापरक शिक्षा की योजना बनाते हुए उन सन्दर्भों का विशेष ध्यान रखें। अंतःक्षेप के लिए वृहद क्षेत्रों की पहचान करें और प्रत्येक क्षेत्र के कुशल संचालन के लिए रणनीतियां बनाएं। अंतःक्षेप के लिए पहचाने गए क्षेत्र निम्नलिखित हो सकते हैं: स्वयं तथा अन्य का विकास, अकादमिक नेतृत्व प्रदान करना, अधिगम संस्कृति का विकास, दल का निर्माण एवं नेतृत्व करना, समुदाय के साथ भागीदारी इत्यादि।

अध्यापक नेतृत्वकर्ता के लिए :

विद्यालय नेतृत्व की संकल्पना एवं अनुप्रयोग के बारे में अपने अधिगम को यहाँ समेकित करें। एक अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में, छात्रों को केंद्र में रखते हुए, छात्रों के अधिगम में सुधार हेतु रूपांतरण योजना बनाएं। आप एक विज़न कथन के बारे में सोच सकते हैं जैसे कि **"छात्रों के अधिगम में सुधार हेतु व्यावसायिक विकास"**। हर छात्र की अधिगम सम्बन्धी आवश्यकता और पृष्ठभूमि भिन्न-भिन्न होती हैं। आप स्वयं (के ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति) के स्तर को कैसे विकसित करेंगे, जिससे की आप अपने छात्रों के लिए अर्थपूर्ण अधिगम अवसर सृजित कर सकें, उनका अधिगम और उनकी दक्षताओं में वृद्धि हो सके?

अतिरिक्त संदर्भ

संदर्भ (Text) (13_37_References)

प्रकाशन :
अवस्थी , के . 2017. अकादमिक सुपरविज़न एंड फीडबैक : रीलीज़िंग द पोटेंशियल ऑफ़ फील्ड लेवल लीडरशिप . http://ncsl.niepa.ac.in/
———.2017. डेवलपिंग प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटीज : लीडिंग टीचर्स ' प्रोफेशनल डेवलपमेंट इन स्कूल लीडरशिप डेवलपमेंट फॉर सिस्टम लेवल एडमिनिस्ट्रेटर्स . http://ncsl.niepa.ac.in/
दिवान, रश्मि . 2013. एजुकेशनल लीडरशिप : अ कॉन्सेप्चुअल फ्रेमवर्क (न्यूपा)
दिवान, रश्मि एंड पांडा , बी.के . 2013. गाइडिंग थ्रू द प्रिपरेशन ऑफ़ स्कूल डेवलपमेंट प्लान : अ हैंडबुक फॉर स्कूल हेड्स . (न्यूपा)
मैथिली एन. 2017. डस स्कूल लीडरशिप मेटर फॉर स्टूडेंट लर्निंग इन इंडिया ? ए केस स्टडी ऑफ़ सिक्किम . इंडियन एजुकेशनल रिव्यु , दिसंबर , 2017, Vol-56, No.2, pp. 34-63 ISSN 0019-561X. http://www.ncert.nic.in/publication/journals/pdf_files/IER_July_17.pdf
———. 2019. गवर्नेंस एंड लीडरशिप फॉर अचीविंग हायर क़्वालिटी इन स्कूल एजुकेशन : ए स्टडी ऑफ़ सिक्किम . इंडियन जर्नल ऑफ़ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन , वॉल . 65(2), अप्रैल -जून, 2019, ISSN no: 00195561 एन्ड eISSN no: 24570222.
न्यूपा. 2014. ए हैंडबुक ऑन स्कूल लीडरशिप डेवलपमेंट (अंग्रेजी, हिंदी एवं अन्य भाषाएँ).नई दिल्ली
———. 2015. नेशनल प्रोग्राम डिज़ाइन एंड करिकुलम फ्रेमवर्क ऑन स्कूल लीडरशिप डेवलपमेंट (अंग्रेजी, हिंदी एवं अन्य भाषाएँ). रिवाइज्ड एडिशन . नई दिल्ली
रॉबिंसन , वी., लॉयड, सी. एंड के .जे. रोवे . 2008. द इम्पैक्ट ऑफ़ लीडरशिप ऑन स्टूडेंट आउटकम्स: एन एनालिसिस ऑफ़ द डिफरेंशियल इफेक्ट्स ऑफ़ लीडरशिप टाइप्स. एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन कवाटरली. 44 (5), 635-674.
सुबिता, जी वी एंड चारु स्मिता मालिक. (eds). 2016. रिसोर्स बुक ऑन वन मंथ सर्टिफिकेट कोर्स ऑन स्कूल लीडरशिप एंड मैनेजमेंट, न्यूपा, नई दिल्ली.

वेब संसाधन Text) (13_38_Other Links)

वेब रिसोर्सेज

लर्निंग आउटकम्स. http://www.ncert.nic.in/pdf/Annual_report_17_18.pdf
मारयेलें वेइमेर. https://www.facultyfocus.com/articles/teachingand-learning/five-key-principles-of-active-learning/ accessed on 20th May 2019
नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन टुवर्ड्स प्रेपरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमेन टीचर. एनसीऍफ़ टी ई. 2009. http://ncte-india.org/ncte_new/pdf/NCFTE_2010.pdf
टेस्स -इंडिया. ट्रांसफॉर्मिंग टीचिंग -लर्निंग प्रोसेस : लीडिंग टीचर्स प्रोफेशनल डेवलपमेंट . https://www.open.edu/openlearncreate/course/view.php?id=1911

वेबसाइट

http://ncsl.niepa.ac.in/
http://pslm.niepa.ac.in/
https://itpd.ncert.gov.in/

संदर्भ

श्रव्य-दृश्य संसाधनों की सूची

अनुभाग	वीडियो का नाम	वेब लिंक
स्वयं एवं प्रेरणा	लीड इंडिया वीडियो	https://www.youtube.com/Watch?v=JR8i9p3pcPg&feature=youtu.be
लीडर्स इन एक्शन	चेन्ज लीडरशिप एंड स्कूल इम्प्रूवमेंट: रोल ऑफ स्कूल हैड	https://www.youtube.com/watch?v=hSfg6ON8iqQ&list=PLUgLcpnv1YidWTfKv5Z4E9zaskiV2ZCJf&index=4&t=0s
बहु भूमिकाएं और दायित्व	डेवलपिंग स्कूल एस ए लर्निंग ऑर्गनाइजेशन	https://www.youtube.com/watch?v=1NJEI6VXEQg&list=PLUgLcpnv1YidWTfKv5Z4E9zaskiV2ZCJf&index=11&t=0s
	प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्लान	https://www.youtube.com/watch?v=QEhOFI6dqU&list=PLUgLcpnv1YidWTfKv5Z4E9zaskiV2ZCJf&index=9&t=0s
	स्कूल एंड परपस ऑफ एज्युकेशन नोइंग मोर अबाउट इनोवेशन्स	https://www.youtube.com/watch?v=Q9zbADOKd0E&list=PLUgLcpnv1YidWTfKv5Z4E9zaskiV2ZCJf&index=13&t=0s https://www.youtube.com/watch?v=VdNE3z13Ws&list=PLUgLcpnv1YidWTfKv5Z4E9zaskiV2ZCJf&index=8&t=0s
	लीडिंग स्कूल कम्युनिटी पार्टनरशिपस	https://www.youtube.com/watch?v=q5nXadLtqsk
सक्रिय अधिगम के सिद्धांतों पर दृष्टिकोण विकसित करना	यंग हिस्टोरियन	https://youtu.be/p9VAM8yv2Ng
विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में शिक्षण शास्त्र- विषय वस्तु ज्ञान को समझना	पेडागोजिकल-कन्टेंट नोलिज	https://www.youtube.com/watch?v=eE9U-WEhjMQ
अकादमिक पर्यवेक्षण के लिए तकनीक- पर्यवेक्षण कैसे करें	ऑबजरवेशन, फीडबैक एंड सुपरविज़न	https://www.youtube.com/watch?v=GoC-5llGCTw&list=PLUgLcpnv1YidWTfKv5Z4E9zaskiV2ZCJf&index=10&t=0s
अध्यापक एवं विद्यालय प्रमुख चिंतनशील अभ्यासकर्ता के रूप में	टीचर्स एज रिफलेक्टिव प्रेक्टीशनर	https://www.youtube.com/watch?v=9fihPN41RaE

यह सभी वीडियो 'एन सी ई आर टी ऑफिशियल' यूट्यूब चैनल पर प्राप्त किए जा सकते हैं।

प्रश्नोत्तरी

प्रश्नोत्तरी (13_39_Quiz)

do_31315739852818022411281

सेट 1

1. प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बनने के लिए स्वयं के कौन से दो महत्वपूर्ण गुण आवश्यक है?
    क. प्रशासक एवं प्रबन्धक
    ख. आयोजक एवं योजनाकर्ता
    ग. पहलकर्ता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण
    घ. खलल पैदा करने वाला एवं शिकायती रवैया

2. विद्यालय प्रमुख के तौर पर विद्यालय नेतृत्वकर्ता की क्या भूमिका होनी चाहिए?
    क. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में
    ख. लीडर बाई पोजीशन
    ग. लीडर बाई एक्शन
    घ. **लीडर बाई पोजीशन के साथ साथ लीडर बाई एक्शन होना**

3. स्वयं को विद्यालय/अध्यापक नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित करने हेतु तीन मुख्य अवयव क्या हैं?
    क. ज्ञान, संप्रेषण एवं नकारात्मक सोच
    ख. ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति
    ग. सकारात्मक सोच, अनम्य होना एवं सम्प्रेषण
    घ. अभिवृत्ति कौशल एवं सम्प्रेषण

4. शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु ज्ञान की संकल्पना में निम्न में से कौन सा बिंदु सहायक नहीं है?
    क. विषयवस्तु ज्ञान
    ख. विषय की शिक्षण शास्त्र सम्बन्धी समझ
    ग. छात्रों की अधिगम संबंधी आवश्यकताएं एवं विविधता
    घ. **विद्यालय के भौतिक संसाधन**

5. इनमें से कौन से अकादमिक नेतृत्व के मुख्य अवयव नहीं है?
    क. सक्रिय अधिगम
    ख. शिक्षणशास्त्र-विषयवस्तु ज्ञान
    ग. अकादमिक पर्यवेक्षण
    घ. **प्रशासनिक नियमों एवं विनियमों की समझ**

6. विद्यालय में अधिगम संस्कृति विकसित करने की संकल्पना को इनमें से कौन सा विकल्प परिभाषित कर सकता है?
    - क. अधिगम प्रतिफल
    - ख. विद्यालय विकास योजना
    - ग. साझा दृष्टिकोण का निर्माण करना
    - घ. **दल अधिगम**

7. इनमें से कौन सा विकल्प सक्रिय अधिगम नहीं है?
    - क. सक्रिय अधिगम एक दूसरे से सीखने को प्रेरित करता है
    - **ख. सक्रिय अधिगम व्यक्तिगत सोच को प्रोत्साहित नहीं करता**
    - ग. सक्रिय अधिगम विश्लेषणात्मक सोच पर जोर देता है
    - घ. सक्रिय अधिगम में अध्यापक सुगमकर्ता होता है

8. विद्यालय विकास योजना किसके लिए उपयोगी नहीं है ?
    - क. विद्यालय का विज़न निर्मित करने में
    - ख. विद्यालय से सम्बंधित क्षेत्रों का आकलन करने में
    - ग. विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का आकलन करने में
    - घ. **केवल प्रशासकीय उद्देश्यों के लिए**

9. "विद्यालय नेतृत्व का सीधा प्रभाव छात्र अधिगम पर पड़ता है" इसका अर्थ है
    - क. विद्यालय का चक्कर लगाना
    - **ख. विद्यालय प्रमुख द्वारा कक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित होना**
    - ग. अकस्मात् छात्रों की नोटबुक का निरीक्षण करना
    - घ. अध्यापकों को नए शिक्षण तरीको का प्रयोग करने में सहायता करना

10. विद्यालय के स्टाफ के साथ दल अधिगम की प्रक्रिया का समेकन करने के लिए उचित अवसर क्या है?
    - क. खेल का मैदान
    - ख. कक्षा कक्ष
    - **ग. स्टाफ मीटिंग**
    - **घ.** रसोई घर

<u>सेट -2</u>

1. इनमें से कौन-सा बिंदु विद्यालय नेतृत्वकर्ता को परिभाषित नहीं करता?
    क. पहल करने वाला
    ख. चुनौतियों को स्वीकार करने वाला
    ग. न्य भागीदारों के साथ सहयोगात्मक तरीके से कार्य करने वाला
    घ. **<u>प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराने वाला</u>**

2. प्रभवशाली नेतृत्वकर्ता बनने के लिए स्वयं का विकास क्यों महत्वपूर्ण है?
    क. स्वयं का विकास, स्वयं के प्रति जागरूक करता है
    ख. <u>स्वयं का विकास आत्मविश्वास को बढ़ाता है जिससे नेतृत्वकर्ता अन्याय चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनते है</u>
    ग. स्वयं का विकास विद्यालय रूपांतरण में सहायक होता है
    घ. स्वयं का विकास विद्यालय नेतृत्व के लिए महत्वपूर्ण है

3. विद्यालय में स्टाफ के दल अधिगम को समेकित करने के लिए कौन सा स्थान सर्वोत्तम है?
    क. खेल का मैदान
    ख. कक्षा कक्ष
    ग. <u>स्टाफ मीटिंग</u>
    घ. रसोई घर का छप्पर

4. इनमें से क्या अधिगम संस्कृति को सुदृढ़ करने में सहायक नहीं है (जो सही नहीं है उस पर (✓) का निशान लगाएं)
    क. वाद-विवाद
    ख. नाटक
    ग. **<u>श्याम पट्ट से बिना समझे कॉपी करना</u>**
    घ. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित वेब रिसोर्सेज का प्रयोग करना

5. इसमें से कौन सा विकल्प विद्यालय प्रमुख का अभिभावकों के लिए प्रजातांत्रिक वातावरण निर्मित करना नहीं दर्शाता है?
    क. सप्ताह में तीन बार मिलने के लिए समय रखना
    ख. छात्र अधिगम सम्बन्धी किसी भी मुद्दे को पूछने का अवसर प्रदान करना
    ग. अध्यापकों को छात्रों के विकास से संबंधित मुद्दे अभिभावकों से साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना
    घ. **<u>अभिभावकों को केवल बच्चों के परीक्षाफल साँझा करने के लिए बुलाना</u>**

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र
17-बी, श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली-110016 (भारत)